उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

हल्द्वानी

एम.ए. (ज्योतिष)

MAJY-607

चतुर्थ सेमेस्टर

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार-02

मानविकी विद्याशाखा

ज्योतिष विभाग
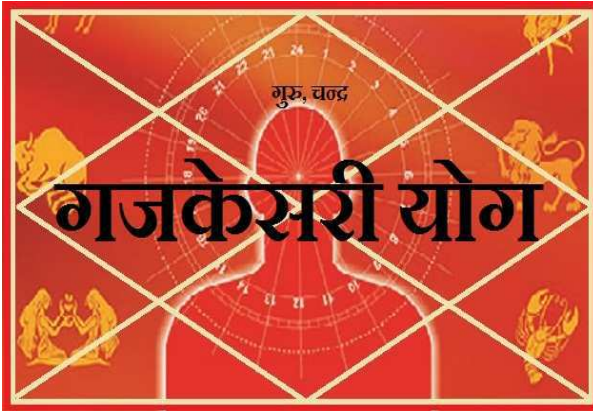
अध्ययन समिति - फरवरी 2020

अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

प्रोफेसर एच.पी. शुक्ल – (संयोजक)
निदेशक, मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी – (समन्वयक)
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर देवीप्रसाद त्रिपाठी
कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रोफेसर विनय कुमार पाण्डेय
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
अध्यक्ष, पौरोहित्य विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई लेखन	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1**	**1, 2, 3, 4, 5**
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**2**	**1, 2, 3, 4, 5**

प्रकाशन वर्ष - 2022
प्रकाशक - उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।
मुद्रक: -
ISBN No. -

एम.ए. (ज्योतिष) **MAJY-607**

चतुर्थ सेमेस्टर - द्वितीय पत्र

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार-02

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – दशा फल विचार	**पृष्ठ- 2**
इकाई 1: महादशा दशा फल विचार	3-25
इकाई 2: अन्तर्दशा फल विचार	26-40
इकाई 3: प्रत्यन्तर्दशा फल विचार	41-72
इकाई 4: सूक्ष्मान्तर दशा फल विचार	73-101
इकाई 5 : प्राणदशा फल विचार	102-120
द्वितीय खण्ड - प्रकीर्ण फल विवेचन	**पृष्ठ-121**
इकाई 1: पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार	122-132
इकाई 2: सत्वादि गुणफल	133-140
इकाई 3: मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण	141-160
इकाई 4: शकुन फल विचार	161-181
इकाई 5: शुभाशुभ स्वप्न फल विचार	182-208

एम.ए. (ज्योतिष)

(MAJY-20)

चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय पत्र

ज्योतिषशास्त्रीय विविध योग एवं दशाफल विचार- 02

MAJY-607

खण्ड - 1
दशा फल विचार

इकाई - 1 महादशा दशा फल विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 महादशा दशाफल परिचय

1.4 विंशोत्तरी महादशा फल विचार – सर्वार्थचिन्तामणि के अनुसार

1.5 महादशा फल विचार - वृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार

1.6 सारांश

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.10 सहायक पाठ्यसामग्री

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -607 के प्रथम खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – महादशा दशाफल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी एवं योगिनी आदि दशाओं का गणितीय पक्ष जान लिया है। अब आप क्रमश: इकाई वार उनके फलादेश पक्ष का भी अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी दशाओं का फलित पक्ष इस अध्याय में वर्णित किया जा रहा है। सूर्यादि समस्त ग्रहों की दशाओं में जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'विंशोत्तरी महादशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- महादशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- सूर्यादि ग्रहों के महादशा फल को समझा सकेंगे।
- महादशा फल विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में महादशाओं के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

1.3 महादशा दशा फल परिचय

महादशा फल विचार से तात्पर्य यह है कि जातक के उपर जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उस ग्रह की कुण्डली में स्थितिवशात् उस जातक पर प्रभाव पड़ता है। यह ध्यातव्य होता है कि कुण्डली में ग्रह उच्च का है, नीच का है, स्वगृही है, मित्रगृही है, शत्रुगृही है, उस पर कितने शुभग्रह और पापग्रह की दृष्टि है तथा उस ग्रह की अवस्था क्या है आदि इत्यादि ऐसे अनेक तथ्य महादशा फल विचार के दौरान ज्योतिषी के समक्ष उपस्थित होते हैं। केवल ग्रह की दशा देखकर ही फलादेश करना नहीं चाहिए, अपितु सम्पूर्ण स्थितियों को देखने की आवश्यकता होती है। कदाचित् इसीलिए फलादेश का स्तर अत्यन्त व्यापक है। इसके लिए ग्रहों के प्रत्येक पक्षों का सूक्ष्म ज्ञान की आवश्यकता होती है। इस इकाई में सूर्यादि प्रत्येक ग्रहों की दशा फल उनकी विभिन्न स्थितियों के अनुरूप दी जा रही है।

जातकपारिजात के अनुसार दशा फल विचार

बलानुसारेण यथा हि योगो योगानुसारेण दशामुपैति।
दशाफलः सर्वफलं नराणां वर्णानुसारेण यथाविभागः।।

जिस प्रकार ग्रहबल के अनुसार योग फलदायक होते हैं उसी प्रकार योग के अनुसार ही योगकारक ग्रह अपनी दशा प्राप्त होने पर शुभाशुभ फल देते हैं। दशा के अनुसार ही मनुष्यों को समस्त शुभाशुभ फल प्राप्त होते हैं तथा ये फल उन्हें वर्णों के अनुसार प्राप्त होते हैं।

विंशोत्तरी महादशा

आदित्यचन्द्रकुजराहुसुरेशमन्त्रि-
मन्दज्ञकेतुभृगुजा नव कृत्तिकाद्याः।
तेनो नयः सिनदयातटधन्यसेव्य-
सेनानरा दिनकरादिदशाब्दसंख्याः।।

कृत्तिका नक्षत्र से प्रारम्भ कर नवें नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी पर्यन्त क्रमशः सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, केतु और शुक्र स्वामी अर्थात् दशापति होते हैं। उत्तराफाल्गुनी से प्रारम्भ कर नवें नक्षत्र पूर्वाषाढा पर्यन्त और उत्तरषाढा से प्रारम्भ कर भरणी पर्यन्त सूर्यादि ग्रह उपर्युक्त क्रम से स्वामी या दशापति होते हैं। तेन 6, नय10, सिन7, दया 18, तट 16, धन्य 19, सेव्य 17, सेना 7 और नरा 20 वर्ष उपर्युक्त क्रम से सूर्यादि ग्रहों के दशावर्ष होते हैं।

फलदीपिका के अनुसार दशा विचार

ऋृक्षस्य गम्या घटिका दशाब्द
निघ्ना नताप्ता स्वदशाब्दसंख्या।
रूपैर्नमैः संगुरपयेन्नतेन
हृतास्तु मासा दिवसाः क्रमेण।।

जन्म के समय किसी ग्रह की कितनी दशा भोग्य थी यह निकालने का प्रकार बताते हैं। यह देखिये कि जन्म के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है और जन्म के बाद कितने घड़ी तक उस नक्षत्र में और रहेगा। जितनी घड़ी तक और रहेगा उन घड़ियों को महादशा के मान से गुणा कीजिये और ६० से भाग देकर यह निकाल लीजिये कि भोग्य वर्ष कितने आये। इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। मान लिजिये कि जन्म के समय पुनर्वसु नक्षत्र के बीस घड़ी शेष थे। पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म होने से वृहस्पति की महादशा में जन्म होता है इस कारण वृहस्पति की दशा में जन्म हुआ। अब यदि यह जानना है कि वृहस्पति की दशा कितनी शेष है तो –

२० × १६/ ६०= १६/३ = ५ वर्ष ४ मास हुआ। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

1.4 महादशा दशा फल विचार – सर्वार्थचिन्तामणि के अनुसार

अब सर्वप्रथम यहाँ आचार्य वेंकटेश द्वारा विरचित **'सर्वार्थचिन्तामणि'** के अनुसार सूर्यादि ग्रहों का दशाफल विचार निम्न रूप से है-

सूर्यदशाफलविचारः -

परमोच्चांशस्थ सूर्य दशा फल कथन

भानोर्दशायां परमोच्चगस्य भूम्यर्थदारात्मजकीर्तिशौर्य्यम्।
सन्माननं भूमिपतेः सकाशादुपैति संगरविनोदगोष्ठीम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य परमोच्चांश मेषराशि के 10 अंश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, कीर्ति, शौर्य्य आदि की प्राप्ति होती है। राजकीय सम्मान प्राप्ति के अवसर सुलभ होते हैं। भ्रमण-यात्रा का शुभ अवसर मिलता है। मनोरंजन और विचार योग्य सभा में सम्मिलित होने का अवसर भी प्राप्त होता है।।

उच्चस्थ सूर्यदशाफलकथन

उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां गोवृद्धिधान्यार्थपरिभ्रमं च।
संगरयुग्बन्धुजनैर्विरोधं देशाद्विदेशं चरति प्रकोपात्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपनी उच्च (मेष) राशि में स्थित हो तो मनुष्य के गोधन की अभिवृद्धि होती है। अन्न और धन की प्राप्ति भी होती है। व्यर्थ यात्रा भी करने पड़ते हैं। अधिकतर गतिशील रहने अर्थात् दौड़ धूप करते रहने की आवश्यकता रहती है। बन्धु-बान्धवों से विरोध के कारण भी उत्पन्न होते हैं। प्रायः कोप भाजन होकर देश-देशान्तर भ्रमण भी होता है।

प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशादुपैति वृत्तिं रतिकेलिमानम्।
मृदङ्गभेरी रवयुक्तयानमन्योन्यवैरं लभते मनुष्यः।।

जिस-किसी की कुण्डली में यदि सूर्य उच्च (मेष) राशि में होता है, तो मनुष्य निकृष्ट वेश्या का संग करता है। राजा या शासक से आजीविका की प्राप्ति होती है। कामक्रीड़ा का अवसर भी सुलभ होता है। सम्मान की प्राप्ति भी होती है। ऐसे व्यक्ति के वाहन के आगे-पीछे मृदङ्ग-भेरी (तुरही) आदि जैसे बाजे की ध्वनि गूँजा करती है। जहाँ भी रहता है, वहाँ उसे एक-दूसरे के विरोध का भी सामना करना पड़ता है।

चन्द्रदशाफलविचार:

परमोच्चस्थ चन्द्र दशा फल कथन -

अत्युच्चगस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके कुसुमाम्बरं च।
महत्त्वमाप्नोति कलत्रलाभं धनायतिं पुत्रमनोविलासम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि परमोच्च अर्थात् वृष राशि के तत्व अंश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को सुन्दर पुष्प और वस्त्र की प्राप्ति होती है। अपना महत्व सिद्ध करने में सफल होता है। स्त्री की प्राप्ति होती है। धन भी प्राप्त होता है। पुत्र और मनोरंजन करने के अवसर प्राप्त होते है।

उच्चराशिस्थ चन्द्र दशाफल कथन

उच्चस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां सुतदारवित्तम्।
मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिं विदेशयानं स्वजनैर्विरोधम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी उच्च वृष राशि में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र, स्त्री, धन आदि की प्राप्ति होती है। मधु, भोजन और पेय की उपलब्धि रहती है। वस्त्र, आभूषण भी प्राप्त होते है। अपकुटुम्बियों से विरोध भी होता है। विदेश यात्रा भी करनी पड़ती है।।65।।

आरोही चन्द्र दशा फल कथन

आरोहिणी चन्द्रदशा प्रपन्ना स्त्रीपुत्रवित्ताम्बरकीर्तिसौख्यम्।
करोति राज्यं सुखभोजनं च देवार्चनं भूसुरतर्पणं च।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि आरोही अर्थात् उच्च की ओर अग्रसर करता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री, पुत्र, धन, वस्त्र, कीर्ति, सुख आदि की सहज उपलब्धि रहती है। राज्य भी प्राप्त होता है। सुखपूर्वक भोजन करने और देर्वाचन तथा ब्राहमण भोजन करने-कराने के शुभ अवसर प्राप्त होते हैं।

अवरोहिणी चन्द्रदशा फल कथन

निशाकरस्याप्यवरोहकाले स्त्रीपुत्रमित्राम्बरसौख्यहानिम्।
मनोविकारं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैः पतनं तडागे।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अवरोही अर्थात् उच्च से दूर होकर नीच की ओर अग्रसर करता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के स्त्री, पुत्र, मित्र, वस्त्र आदि के सैख्य का नाश होता है। मानसिक विकार भी उत्पन्न होता है। स्वजनों से विरोध भी होता है। चोर, अग्नि

और राजा का भय भी उत्पन्न होता है। तालाब में डूबने की घटना होती है।

नीच नवांशस्थ चन्द्र दशा फल कथन

नीचांशगस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थहानिम्।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवां मनोविकारं समुपैति निद्राम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि नवांश अर्थात् नवांश में अपनी नीच वृश्चिक राशि का होकर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अनेक प्रकार से हानि होती है। अभोज्य भोजन करना पड़ता है। दुष्ट राजा की सेवा करता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। नींद खूब आती है।

मूल त्रिकोणस्थ चन्द्रदशा फल कथन

मूलत्रिकोणस्थितचन्द्रदाये नृपाद्धनं भूमिसुतार्थदारान्।
प्राप्नोति भूषाम्बरमानलाभं सुखं जनन्या रतिकेलिलोलम्।।69।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी मूलत्रिकोण राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राजा से धन की प्राप्ति होती है। भूमि, पुत्र, धन, स्त्री आभूषण, वस्त्र आदि के लाभ होते हैं। माता का सुख सहज मिलता है। काम-क्रीड़ा के लिए भी अवसर सहज सुलभ होता रहता है।।69।।

परमोच्चस्थ भौम दशाफल कथन

अत्युच्चभूनन्दनदायकाले क्षेत्रार्थलाभं समरे जयं च।
आधिक्यमन्वेति नरेशमानं सहोदरस्त्रीसुतवाग्विलासम्।।1।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि परमोच्च अर्थात् मकर राशि के 28वें अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कृषि से धन लाभ करने में सफल रहता है। युद्ध या लड़ाई में भी विजयश्री प्राप्त करता है। अनेक लोगों के बीच राजकीय सम्मान प्राप्त कर पाता है। भ्रातृ, स्त्री, पुत्र आदि के साथ हास्य-परिहास वार्त्ता का अवसर भी उसे सुलभ होता है।

उच्चराशिस्थ मंगल दशाफल कथन

उच्चं गतस्य च दशासमये कुजस्य प्राप्नोति राज्यमथवा क्षितिपाच्चवित्तम्।
भूमध्यदारसुतबन्धुसमागमं च यानादिरोहणविशेषविदेशयानम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपनी उच्च मकर राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य अथवा राजा से धन प्राप्त करता है। भूमि, स्त्री, पुत्र और बन्धु से मिलन होता रहता है।

विविध वाहन की सवारी करने का अवसर मिलता है। इस समय विशेष कर मनुष्य को देशान्तर भ्रमण करने पड़ते हैं।

परमोच्चस्थ बुध दशाफल कथन

अत्युच्चसोमात्मजदायकाले धनान्वितः ख्यातिमुपैति सौख्यम्।
ज्ञानं च कीर्ति जननायकत्वं स्त्रीपुत्रभूम्यर्थमहोत्सवं च।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि परमोच्चांश में अर्थात् कन्या राशि के 15 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा में मनुष्य धनवान् होता है। उसे ख्याति मिलती है। सुख की भी प्राप्ति होती है। ज्ञान और कीर्त्ति सम्पन्न होते हैं। जनसमूह का नेता होता है। स्त्री, पुत्र, भूमि और धन का लाभ होता है। उसके द्वारा महोत्सव का आयोजन होता है।

उच्चस्थितस्यापि शशङ्कसूनोर्दशा महत्त्वं कुरुतेऽर्थसौख्यम्।
देहस्य पुष्टिं धनधान्यपुत्रगोवाजिमत्तेभमृदङ्गनादम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि अपनी उच्च कन्या राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपना महत्त्व स्थापित करता है। धन का सुख प्राप्त करता है। उसकी शारीरिक बल में वृद्धि होती है। धन, अन्न, पुत्र, गोधन, घोड़ा, उन्मत्त हाथी आदि से सम्पन्न होकर सदा मृदङ्ग की ध्वनि सुनता है।

आरोही बुध दशा फल कथन

आरोहिणी सौम्यदशा प्रपन्ना यज्ञोत्सवं गोवृषवाजिसङ्घम्।
मृद्वन्नभूषाम्बरयानलाभं वाणिज्यभूम्यर्थपरोपकारम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि उच्च की ओर अग्रसर करता हुआ हो, तो उसकी दशा में मनुष्य यज्ञ के आयोजन रूप उत्सव मनाता है। गोधन, बैल, घोड़ा आदि के समूह का स्वामी होता हैं मुलायम अन्न, आभूषण, वस्त्र, वाहन भूमि और धन का उसे लाभ होता है। सदा परोपकार में रत रहता है।

अवरोही बुध दशा फल कथन

शशाङ्कसूनोस्त्ववरोहिणी या दशा महत्कष्टतरं च दुःखम्।
विज्ञानहीनं परदारसङंग नृपाग्निचौरैर्भयमत्र कष्टम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि अवरोही अर्थात् नीच की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अत्यधिक कष्ट और दुःख पाता है। ज्ञान-विज्ञान से रहित होता है। परायी स्त्री का गमन करता है। राजा, चोर, अग्नि आदि से भय व कष्ट प्राप्त होते हैं।

नीच राशिस्थ बुध दशाफल कथन

नीचस्थचन्द्रात्मजदायकाले ज्ञानेन हीनं स्वजनैर्वियुक्तम्।
पदच्युतिं बन्धुविरोधतां च विदेशयानं वनवासदुःखम्।

जिस किसी की कुण्डली में यदि अपनी नीच राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य ज्ञान रहित होता है। स्वजनों का वियोग सहन करता है। पद-प्रतिष्ठा में भी कमी होती है। अपने बन्धुजनों से भी विरोध मिलता है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं। निर्वासित-सा जीवन कष्ट और दुःख देने वाली होती है।

परमोच्चगत गुरुदशा फल कथन

गुरोर्दशायां परमोच्चगस्य राज्यं महत्सौख्यमुपैति कीर्तिम्।
मनोविलासं गजवासिङ्घनृपाभिषेकं स्वकुलाधिपत्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि परमोच्च में अर्थात् कर्क राशि के 5 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य की प्राप्ति करता है। बहुत सुखी होता है। उसकी अच्छी कीर्ति होती है। मन उत्साहित होने से आनन्दानुभूति की अपेक्षा भी पूरा होता है। बहुत-से हाथी और घोड़ा भी उसके पास आता है। उसकी राज्याभिषेक भी होता है। अपने कुल में सर्वप्रमुख होता है।

उच्च (कर्क) राशि गत गुरु दशा फल कथन

कुलीरगस्यापि गुरोर्दशायां भाग्योत्तरं भूपतिमाननाद्वा।
विदेशयानं महदाधिपत्यं दुःखैः परिक्लिन्नतनुर्मनुष्यः।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भाग्य की अभिवृद्धि होती है। राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। विदेश यात्रा भी करता है। महत्त्वपूर्ण अधिकार हस्तगत करने में सफल होता है। फिर भी वह दुःख के कारण भी खिन्न शरीर से युक्त होता है।

आरोही गुरुदशा फल कथन

आरोहिणी देवगुरोर्महत्त्वं दशा प्रपन्ना कुरुतेऽर्थभूमिम्।
गानक्रिया स्त्रीसुतराजपूज्यं स्ववीर्यतः प्राप्तयशः प्रतापम्।।
जीवदशायामारोहिण्यामीशो मण्डलादिनाथो वा।
द्विजभूपाललब्धधनो मेधावी कान्तिमान् विनीतिज्ञः।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि आरोही अर्थात् उच्चानुमुख होकर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपना महत्त्व सिद्ध करता है। धन, भूमि आदि की प्राप्ति भी होती है। अपने बल

पर वह संगीत कला में प्रवीणता, स्त्री, पुत्र आदि की प्राप्ति भी करता है। राजा से सम्मान भी प्राप्त करता है। वह यशस्वी व प्रतापी भी होता है।

वह किसी कस्बा या इलाके का राजा अथवा मण्डलाधिपति होता है। ब्राहमण और राजा से धन की प्राप्ति करता है। वह बुद्धिमान लावण्य-तेजयुक्त शरीर वाला और नीतिज्ञ होता है।

अवरोही गुरु दशा फल कथन

देवेन्द्रपूज्यस्य दशावरोही करोति सौख्यं सकृदेव नाशम्।
सकृद्यशः कान्तिविशेषजालं नरेश्वरत्वं सकृदेव याति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अवरोही अर्थात् नीचानुमुख होकर स्थित होता है, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कभी सुखी, कभी दुःखी होता है। कभी यशस्वी, विशेष कान्ति से युक्त और राजा होता है, तो कभी सामान्य जीवन जीता है। इस तरह मनुष्य चंचर स्थिति और दशा वाला हो जाता है।

परमनीचगत गुरु दशा फल कथन

अतिनीचभागभाजो गुरोर्दशायां प्रभग्नगृहपुंजः।।
अन्योन्यहृदयवैरं कृषिनाशं याति परभृत्यः।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि परमनीच में अर्थात् मकर राशि के अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य का गृह भग्न अर्थात् गिर जाता है अथवा टूट-फूट से युक्त होता है। जहाँ भी वह रहता है, उस वातावरण में उपलब्ध लोगों के प्रति हृदय में विरोध रहता है। उसके कृषि की हानि होती है। दूसरों के पास सेवा करके जीविकार्जन करने को विवश होता है।

मूलत्रिकोण राशिस्थ गुरु दशाफल कथन

मूलत्रिकोणनिलयस्य गुरोर्दशायां राज्यार्थभूमिसुतदारविशेषसौख्यम्।
यानाधिरोहणमपि स्वबलाप्तवित्तं यज्ञादिकर्मजनपूजितपादपीठम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य, धन, भूमि, पुत्र, पत्नि आदि का विशेष सौख्य पूर्ण करता है। वाहन का सुख भी प्राप्त होता हैं अपने पुरुषार्थ बल से धन की प्राप्ति करता है। यज्ञादि अनुष्ठान सम्पन्न होता है। उसमें बहुत से लोगों द्वारा उसके चरण पूजन किया जाता है।

स्वगृही गुरु दशा फल कथन

गुरोर्दशायां स्वगृहं गतस्य राज्ञोऽर्थ भूधान्यसुखाम्बरं च।

मिष्टान्नदो वाजिमनोविलासं काव्यादिपुण्यागमवेदशास्त्रम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि अपनी राशि धनु या मीन में हो, तो............

शुभग्रह से युक्त गुरु दशा फल कथन

शुभान्वितस्यापि गुरोर्दशायां नरेशयानं मृदुलाम्बरं च।
दानेन वित्तं नृपमाननाद्वा यज्ञादिसन्मार्गविशेषलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि शुभ ग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा के वाहन का उपयोग करता है। राजा से ही कोमल वस्त्र भी मिलते हैं। दान से अथवा राजा से सम्मानित होने से धन प्राप्त करता है। यज्ञ आदि अनुष्ठान सम्पादन के मार्ग से विशेष रूप से धन अर्जित करता है।

पापग्रहदृष्ट गुरु दशाफल कथन

पापेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां प्राप्तं सुखं किचिंदुपैति धैर्यम्।
क्वचिद्यशः कुत्रचिदाप्तसौख्यं क्वचिद्धनं नाशमुपैति चान्ते।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को थोड़ा सुख प्राप्त रहता है। उसे धैर्य होता है। कुछ यश और कभी सुख भी मिलता है। थोड़ा धन भी दशा के अन्त में नष्ट होता है।

परमोच्चगत शुक्र दशाफल कथन

अत्युच्चभृगुदशायां मत्तविलासप्रियार्थभोगी स्यात्।
माल्याच्छादनभोजनशयनस्त्रीपुत्रधनयुक्तः।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि परमोच्च में अर्थात् मीन राशि के 27 अंश पर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य परिपक्व अवस्था के हास्य-परिहास के आनन्द को पसन्द करता है। धन का भोग करता है। माला, वस्त्र, भोजन, शय्या, स्त्री, पुत्र और धन से सम्पन्न भी होता है।

उच्चराशिस्थ शुक्रदशा फल कथन

स्वोच्चस्थितस्यापि भृगोर्दशायां स्त्रीसङ्गनष्टार्थविरुद्धधर्मम्
पित्रोर्विनाशं समुपैति दुःखं शिरोरुजं भूपतिमाननं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी उच्च मीन राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्रियों के सङ्ग साथ करने से धन की हानि होती है। वह विरोधी को मानने वाला होता है। माता-पिता का मरण भी होता है। दुःख की प्राप्ति होती है। शिर में रोग होता है तथा राजा से सम्मान मिलता है।

आरोही शुक्र दशा फल कथन

आरोहिणी शुक्रदशा प्रपन्ना धान्याम्बरालङ्कृतिकान्तिपूजाम्।
प्रवृत्तिसिद्धिं स्वजनैर्विरोधं मात्रादिनाशं परदारसङ्गम्।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि आरोही अर्थात् उच्चराशि की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अन्न, वस्त्र, अलंकरण आदि की प्राप्ति करता है। उसका शरीर कान्ति युक्त होता है। लोगों द्वारा उसका सम्मान किया जाता है। उसका सभी प्रयास सफल होते हैं। स्वजनों से विरोध प्राप्त होता है। माता-पिता की हानि होती है। परायी स्त्री के गमन का प्रयास होता है।।50।।

अवरोही शुक्र दशा फल कथन

भृगोः सुतस्याप्यवरोहकाले प्रचण्डवेश्यागमनं धनाप्तिम्।
स्त्रीपुत्रबन्ध्वार्तिमनोविकारं हृच्छूलरोगं मदनार्तिमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अवरोही अर्थात् नीच राशि की ओर अग्रसर हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य दुष्ट वेश्या का गमन करता है। उसे धन की प्राप्ति भी होती है। स्त्री, पुत्र, बन्धु आदि दुःखी रहता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। हृदय शूलरोग से युक्त होता है। रति करने की इच्छा से पीड़ित होता है।

परमोच्चगत शनि दशा फल कथन

मन्दोऽत्युच्चदशायां ग्रामसभामण्डलाधिपत्यं स्यात्।
लभते विनोदशीलं पितृनाशं बन्धुकलहं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि परमोच्च में अर्थात् तुला राशि में 20 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को ग्राम, कस्बा, ... आदि पर आधिपत्य प्राप्त होता है। वार्तालाप से आनन्दित होता है। पितापक्ष की दृष्टि होती है। बन्धुओं से भी झगड़ा होता है।

उच्चराशिगत शनि दशा फल कथन

स्वोच्चदशायां कुरुते देशभ्रंशं मनोरुजं दुःखम्।
वाणिज्यसत्त्वानिं कृषिहानिं नृपविरोधं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी उच्च तुला राशि में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य के दाँत गिर जाते हैं। मानसिक रोग और दुःख से ग्रस्त रहता है। व्यापार और बल दोनों की हानि होती है। कृषि की हानि भी होती है और राजा के पक्ष से विरोध होता है।

आरोही शनि दशा फल कथन

आरोहिणी वासरनाथसूनोर्दशाविपाके नृपलब्धभाग्यम्।
वाणिज्यलाभं कृषिभूमिलाभं गोवाजियानं सुतदारलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली मेंर शनि यदि आरोही अर्थात् उच्चानुगामी हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से भागयोपलब्धि पाता है। व्यापार-व्यवसाय में भी लाभ प्राप्त होता है। कृषि और भूमि का लाभ होता है। गोधन, घोड़ा, वाहन, पुत्र, स्त्री आदि का लाभ भी प्राप्त होता है।

अवरोही शनि दशा फल कथन

दिनेशसूनोस्त्ववरोहकाले राज्यच्युतिं दारसुतार्थनाशम्।
भाग्यक्षयं भूपतिकोपयुक्तं प्रेष्यत्वमायाति गुदाक्षिरोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अवरोही अर्थात् नीचानुगामी हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्यहानि, पत्नि, पुत्र, धन आदि की भी हानि होती है। भाग्य की अवनति भी होती है। राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। दूसरों की सेवा करने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उसे गुदारोग व अक्षिरोग का शिकार भी होना पड़ता है।

नीचराशिगत शनि दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि दिनेशसूनोर्दाये कलत्रात्मजसोदराणाम्।
नाशं महत्कष्टतरां कृषिं च नीचानृवृत्त्या समुपैति वृत्तिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी नीच राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की स्त्री, पुत्र, भ्राता आदि की हानि होती है। वह बहुत अधिक कष्ट से कृषि कार्य सम्पन्न कर पाता है। इस तरह उसे नीच कर्म सम्पादन कर आजीविका हेतु प्रयत्न करना पड़ता है।

राहु-केतु उच्चादिस्थान कथन

राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुङ्गसंज्ञितम्।
मूलत्रिकोणं कुम्भं च क्रियं मित्रभमुच्यते।।

राहु का वृष और केतु का वृश्चिकद उच्च संज्ञक स्थान होता है। राहु का मूलत्रिकोण कुम्भ और क्रिय अर्थात् मेष मित्र राशि कहा जाता है।

एषां सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणभम्।
षष्ठाष्टरिष्फगो राहुः स्वदाये कष्टदो भवेत्।।

केतु का मूलत्रिकोण और मित्र राशि इन स्थानों अर्थात् कुम्भ राशि और मेष राशि से सप्तम राशि अर्थात् क्रम से सिंह और तुला राशि है।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि षष्ठभाव, अष्टमभाव या द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को कष्ट सहन करना पड़ता है।

उच्चस्थानस्थ राहु दशा फल कथन

उच्चस्थः सैंहिकेयस्तु तत्पाके सुखदो भवेत्।
राज्यं करोति मित्राप्तिं धनधान्यविवर्द्धनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अपने उच्चस्थान में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सुख का अनुभव करता है। उसे राज्य भी मिलता है। मित्र की प्राप्ति होती है। धन-अन्न की अभिवृद्धि भी होती है।

नीचस्थानस्थ राहु दशा फल कथन

राहुर्नीचस्थितो दाये चौराग्निनृपभीतिदः।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं कुरुते सिंहिकासुतः।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अपने नीच स्थान में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चोर, अग्नि, राजा आदि से भय प्राप्त होता है। फाँसी लगा लेने का कारण उत्पन्न होता है। विषपान आदि से भी भय मिलता है।

केतुदशा सामान्य फल कथन

भार्यापुत्रविनाशनं नरपतेर्भ्रांतिर्महत्कष्टतां
विद्याबन्धुधनाप्तिमित्ररहितं रोगाग्निमित्रैर्भयम्।
यानारोहणपातनं विषजलैः शस्त्रदिभिर्वा भयं
देशाद्देशविवासनं कलिरुचिं देहादिभिर्वा भयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि केतु की दशा चल रही हो, तो उस समय मनुष्य को पत्नि, पुत्र आदि का वियोग सहन करना पड़ता है। राजा द्वारा भ्रान्ति में उलझाया जाता है। अत्यधिक कष्ट भी पाता है। परन्तु उसे विद्या (ज्ञान), बन्धु, धन आदि की प्राप्ति भी होती है। मित्रता का अभाव रहता है। रोग, अग्नि, मित्र आदि से भय ही प्राप्त होता है। वाहन पर चढ़ता और गिरता भी है। विष, जल, शस्त्र आदि से भी भय प्राप्त होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता फिरता है। कलह में लगाव उत्पन्न हो जाता है। अथवा उसे रोग आदि होने का भय हो जाता है।

केतोर्दशायां सम्प्राप्तौ दारपुत्रविनाशनम्।
राजकोपं मनस्तापं चौराग्निकृषिनाशनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि केतु की दशा हो, तो उस समय उपरोक्त फल के साथ-साथ

इस प्रकार का फल भी मनुष्य को प्राप्त होता है। उसको स्त्री, पुत्र आदि से विक्षोभ उत्पन्न हो जाता है। राजकीय कोष का भाजन भी होता है। मानसिक सन्ताप भी मिलता है। चोर, अग्नि, कृषि आदि भी उसका नाश हो जाता है।

केन्द्रभावस्थ केतु दशा फल कथन

केन्द्रस्थस्य दशाकेतोः करोति विफलक्रियाम्।
राज्यार्थसुतदाराणां नाशनं विपदं तथा।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि केन्द्र भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के सभी कार्य असफल हो जाते हैं। राज्य, धन, पुत्र, स्त्री आदि की हानि होती है तथा उसे मात्र विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

1.5 महादशा फल विचार - वृहत्पराशर होराशास्त्र के अनुसार

रवि दशा फल –

मूलत्रिकोणे स्वक्षेत्रे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे भाग्यकर्माधिपैर्युते।।
सूर्ये बलसमायुक्ते निजवर्गबलैर्युते।
तस्मिन्दाये महत् सौख्यं धनलाभादिकं शुभम्।।
अत्यन्तं राजसन्मानमश्वसन्दोल्यादिकं सुखम्।
सुताधिपसमायुक्ते पुत्रलाभं च विन्दति।।
धनेशस्य च सम्बन्धे गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।
वाहनाधिपसम्बन्धे वाहनत्रयलाभकृत्।।
नृपालतुष्टिर्वित्ताढयः सेनाधीशः सुखो नरः।
बलवाहनलाभश्च दशायां बलिनो रवेः।।

अर्थात् यदि सूर्य जन्मसमय में अपने मूलत्रिकोण में, अपने क्षेत्र में अपने उच्च में अपने परमोच्च में केन्द्र, त्रिकोण, लाभभाव में, भाग्येश कर्मेश के साथ में निज वर्ग में बलवान होकर बैठा हो तो उसकी दशा में धनलाभ, अधिक सुख, राजसम्मानादि की प्राप्ति होती है। सन्तानेश के साथ हो तो पुत्रलाभ, धनेश के साथ सूर्य हो तो हाथी आदि धनों का लाभ और वाहनेश के साथ हो तो वाहन का लाभ कराता है। ऐसा जातक राजा की अनुकम्पा से धनाढय होकर सेनानायक बनकर

सुखी होता है। इस प्रकार बलयुत रवि की महादशा में बल, वाहन, और धन का लाभ होता है।

अन्य स्थिति में फल - यदि जातक के जन्मसमय में सूर्य अपने नीच राशि का हो, 6,8,12 भाव में में निर्बल पापग्रहों से युत हो या राहु – केतु से युत हो या दु:स्थान 6,8,12 के अधिपति से युत हो तो सूर्य की महादशा में महान कष्ट, धन- धान्य का विनाश, राजक्रोध, प्रवास, राजदण्ड, धनक्षय, ज्वरपीड़ा, अपयश, स्वबन्धुओं से वैमनश्यता, पितृकष्ट, भय, गृह में अशुभ, चाचा को कष्ट, मानसिक अशान्ति और अकारण जनों से द्वेष होता है । यदि सूर्य के पूर्वोक्त नीचादि स्थानों में रहने पर भी उस शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कभी – कभी बीच – बीच में सुख भी होता है । यदि केवल पापग्रहों की ही दृष्टि हो तो सदैव पाप फल ही कहना चाहिये।

चन्द्रफल –

एवं सूर्यफलं विप्र संक्षेपाददुदितं मया।
विंशोत्तरीमतेनाऽथ ब्रुवे चन्द्रदशाफलम्।।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव केन्द्रे लाभत्रिकोणगे।
शुभग्रहेण संयुक्ते पूर्णे चन्द्रे बलैर्युते।।
कर्मभाग्यधिपैर्युक्ते वाहनेशबलैर्युते।
आद्यन्तैश्वर्य सौभाग्य धन धान्यादिलाभकृत्।
गृहे तु शुभकार्याणि वाहनं राजदर्शनम्।।
यत्नकार्यार्थसिद्धिः स्याद् गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
मित्रप्रभुवशाद् भाग्यं राज्यलाभं महत्सुखम्।।
अश्वान्दोल्यादिलाभं च श्वेतवस्त्रादिकं लभेत्।
पुत्रलाभादिसन्तोषं गृहगोधनसङ्कुलम्।।
धनस्थानगते चन्दे तुङ्गे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
अनेकधनलाभं च भाग्यवृद्धिर्महत्सुखम्।।
निक्षेपराजसन्मानं विद्यालाभं च विन्दति।

जन्मकाल में यदि चन्द्रमा अपने उच्च राशि का हो या अपने क्षेत्र में हो, केन्द्र, 11, त्रिकोण में हो और पूर्ण बली चन्द्र शुभ ग्रहों से युत हो, 4,9,10 भावों के स्वामी से युक्त हो तो उसकी महादशा में प्रारम्भ से अन्त तक धन – धान्य, सौभाग्यादि की वृद्धि, गृह में मांगलिक कार्य, वाहनसुख, राजदर्शन, यत्न से कार्य सिद्धि, घर में धनागम, मित्रों के द्वारा भाग्योदय, राज्यलाभ, सुख, वाहनप्राप्ति एवं धन और वस्त्रादि का लाभ होता है। जातक पुत्रलाभ, मानसिक शान्ति एवं घर में गौओं द्वारा

सुशोभित होता है। चन्द्रमा द्वितीय भाव में अपने उच्च या स्वगृहगत हो तो अनेक प्रकार से धनलाभ, भाग्यवृद्धि, राजसम्मान तथा विद्या का लाभ होता है।

अन्य स्थिति में फल - चन्द्रमा अपने नीच का हो या क्षीण हो तो धन की हानि होती है। बलयुत चन्द्र तृतीय भाव में हो तो कभी – कभी सुख और धन की प्राप्ति होती है। निर्बल चन्द्र पापग्रह से युत होकर तृतीय में हो तो जड़ता, मानसिक रोग, नौकरों से पीड़ा, धनहानि और माता या मामा से कष्ट होता है। दुर्बल चन्द्रमा पापग्रह से युत होकर 6,8,12 स्थान में स्थित हो तो राजद्वेष, मानसिक दु:ख, धन- धान्यादि का विनाश, मातृकष्ट, पश्चाताप, शरीर की जड़ता एवं मनोव्यथा होती है। बलयुत चन्द्रमा के दु:स्थान में रहने से बीच – बीच में कभी – कभी लाभ और सुख भी होता है।

अशुभकारक रहने पर शान्ति करने से शुभ का निर्देश करना चाहिये।

भौम दशा फल –

स्वभोच्चादिगतस्यैवं नीचशत्रुभगस्य च।
ब्रवीमि भूमिपुत्रस्य शुभाऽशुभदशाफलम्॥
परमोच्चगते भौमे स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा॥
सम्पूर्णबलसंयुक्ते शुभदृष्टे शुभांशके।
राज्यलाभं भूमिलाभं धनधान्यादिलाभकृत्॥
आधिक्यं राजसम्मानं वाहनाम्बरभूषणम्।
विदेशे स्थानलाभं च सोदराणां सुखं लभेत्॥
केन्द्रे गते सदा भौमे दुश्चिक्ये बलसंयुते।
पराक्रमाद्वित्तलाभो युद्धे शत्रुञ्जयो भवेत्॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसम्मानमेव च।
दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमादिशेत्॥

मंगल अपने परमोच्च में हो, अपने उच्च में हो या अपने मूल त्रिकोण में हो, स्वगृह में हो या केनद्रत्रिकोण में हो, लाभ भाव में हो, धनभाव में हो, पूर्णबल युत हो, शुभ ग्रहों से अवलोकित हो, शुभ नवमांश में हो तो राज्यलाभ, भूमिप्राप्ति, धन – धान्यादि का लाभ, राजसम्मान, वाहन, वस्त्र, आभूषणादि का लाभ, प्रवास में भी स्थानलाभ और सहोदर बन्धु सौख्य होता है। यदि मंगल बलयुत होकर केन्द्र या तृतीय भाव में हो तो पराक्रम से धनलाभ, युद्ध में शत्रु की पराजय, स्त्री – पुत्रादि का सुख और राजसम्मान प्राप्त होता है , परन्तु भौम दशा के अन्त में सामान्य कष्ट भी होता

है।

अन्य स्थिति में फल - भौम अपने नीचादि दुष्ट भाव में निर्बल होकर स्थित हो या पापग्रह से युत या दृष्ट हो तो उसकी दशा में धन- धान्य का विनाश, कष्ट आदि अशुभ फल कहना चाहिये।

बुध दशा फल –

> **अथ सर्वनभोगेषु यः कुमारः प्रकीर्तितः।**
> **तस्य तारेशपुत्रस्य कथयामि दशाफलम्।।**
> **स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।**
> **मित्रक्षेत्रसमायुक्ते सौम्ये दाये महत्सुखम्।।**
> **धनधान्यादिलाभं च सत्कीर्तिधनसम्पादाम्।**
> **ज्ञानाधिक्यं नृपप्रीतिं सत्कर्मगुणवर्द्धनम्।।**
> **पुत्रदारादि सौख्यं व्यापाराल्लभते धनम्।**
> **क्षीरेण भोजनं सौख्यं व्यापाराल्लभते धनम्।।**
> **शुभदृष्टियुते सौम्ये भाग्ये कर्माधिपे दशा।**
> **आधिपत्ये बलवती सम्पूर्णफलदायिका।।**

सभी ग्रहों में जिसको कुमार कहा जाता है, उस बुध की महादशा का फल इस प्रकार है – यदि बुध अपने उच्च में हो या स्वक्षेत्र में हो या केन्द्र - त्रिकोण मित्रगृह में बैठा हो तो उसकी दशा में सुख, धन – धान्य का लाभ, सुकीर्ति, ज्ञानवृद्धि, राजा की सहानुभूति, शुभ कार्य की वृद्धि, पुत्र – स्त्रीजन्य सुख, रोगहीनता, दुग्धयुत भोजन एवं व्यापार से धनलाभ होता है। यदि बुध पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या शुभ ग्रह से युत हो, कर्मेश होकर भाग्य स्थान में बैठा हो और पूर्ण बली हो तो उक्त फल पूर्ण होगा, अन्यथा सामान्य फल की प्राप्ति होती है।

अन्य फल - यदि बुध पापग्रह से युत दृष्ट हो तो राजद्वेष, मानसिक रोग, अपने बन्धु – बान्धवों से वैर, विदेश – भ्रमण, दूसरे की नौकरी, कलह एवं मूत्रकच्छ्र रोग से परेशानी होती है। यदि बुध 6,8,12 वें स्थान में हो तो लाभ तथा भोग एवं धन का नाश होता है। वात, पाण्डुरोग, राजा, चोर, और अग्नि से भय, कृषि सम्बन्धी भूमि और गाय का विनाश होता है। सामान्यतया दशा के प्रारम्भ में धन – धान्य, विद्या लाभ, सुख पुत्र कलत्रादि लाभ, सन्मार्ग में धन व्यय आदि शुभ होता है। मध्य काल में राजा से आदर प्राप्त होता है, और अन्त में दुःख प्राप्त होता है।

गुरू दशा फल –

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे केन्द्र लाभत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणलाभे वा तुङ्गाशे स्वांशगेऽपि वा।।
राज्यलाभं महत्सौख्यं राजसन्मानकीर्तनम्।
गजवाजिसमायुक्तं देवब्राह्मणपूजनम्।।
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनाम्बरलाभजम्।
यज्ञादिकर्मसिद्धिः स्याद्वेदान्तश्रवणादिकम्।।
महाराजप्रसादेनाऽभीष्टसिद्धिः सुखावहा।
आन्दोलिकादिलाभश्च कल्याणं च महत्सुखम्।।
पुत्रदारादिलाभश्च अन्नदानं महत्प्रियम्।

गुरू यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण या लाभ, मूल त्रिकोण, अपने उच्च नवमांश या अपने नवमांश में बैठा हो तो राज्य की प्राप्ति, महासुख, राजा से सम्मान, यश- घोड़े हाथी आदि की प्राप्ति, देव – ब्राह्मण में निष्ठा, स्त्री - पुत्रादि से सुख, वाहन वस्त्रलाभ, यज्ञादि धार्मिक कार्य की सिद्धि, वेद – वेदान्तादि का श्रवण, महाराजा की कृपा से अभीष्ट की प्राप्ति, सुख, पालकी आदि की प्राप्ति, कल्याण, महासुख, पुत्र कलत्रादि का लाभ, अन्नदान आदि शुभ फल प्राप्त होता है ।

अन्य फल – यदि गुरू नीच या अस्त, पापग्रहों से युत या 8,12 भावों में स्थित हो तो स्थाननाश, चिन्ता, पुत्रकष्ट, महाभय, पशु – चौपायों की हानि, तीर्थयात्रा आदि होता है । गुरू की दशा आरम्भ में कष्टकारक, मध्य तथा अन्त में चतुष्पदों से लाभदायक, राजसम्मान, ऐश्वर्य, सुख आदि का अभ्युदय कराने वाली होती है।

शुक्रदशाफल –

परमोच्चगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
नृपाऽभिषेक – सम्प्राप्तिर्वाहनाऽम्बरभूषणम्।।
गजाश्वपशुलाभं च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
अखण्डमण्डलाधीश राजसन्मानवैभवम्।।
मृदंगवाद्यघोषं च गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
त्रिकोणस्थे निजे तस्मिन् राज्यार्थगृहसम्पदः।।
विवाहोत्सवकार्याणि पुत्रकल्याणवैभवम्।
सेनाधिपत्यं कुरूते इष्टबन्धुसमागम्।।

नष्टराज्याद्धनप्राप्तिं गृहे गोधनसङ्ग्रहम्।।

यदि शुक्र अपने परम उच्च, उच्च स्वराशि या केन्द्र में बैठा हो तो उसकी दशा में जीवों को राज्याभिषेक की प्राप्ति, वाहन, वस्त्र, आभूषण, हाथी, घोड़े, पशु आदि का लाभ, सदा सुस्वादु भोजन, सम्पूर्ण पृथ्वी के स्वामी से सम्मान एवं स्वगृह में लक्ष्मी की अनुकम्पा से मृदंग वाद्य – वादनपूर्ण उत्सव होता है। यदि शुक्र त्रिकोण में हो तो उस शुक्र की दशा में राज्य, धन, गृह का लाभ, गृह में विवाहादि मांगलिक कार्य, पुत्र – पौत्रादि का जन्म, सेनानायक, घर में शुभ चिन्तक मित्र का समागम, गौ आदि पशुओं की वृद्धि एवं नष्ट राज्य या धन की पुन: प्राप्ति होती है ।

अन्य फल – यदि शुक्र 6,8,12 वें भाव में या स्वनीच राशिस्थ हो तो उसकी दशा में स्वबन्धु – बान्धवों में वैमनश्यता, पत्नी को पीड़ा, व्यवसाय में हानि, गाय, भैंस आदि पशुओं से हानि, स्त्री – पुत्रादि या अपने बन्धु – बान्धवों का विछोह होता है।

यदि शुक्र भाग्येश या कर्मेश होकर लग्न या चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो उसकी दशा में महत् सौख्य, देश या ग्राम का पालक, देवालय – जलाशयादि का निर्माण, पुण्य कर्मों का संग्रह, अन्नदान, सदैव सुमधुर भोजन की प्राप्ति, उत्साह, यश एवं स्त्री – पुत्र आदि से सुखानुभूति होती है।

शनि दशा फल –

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे मित्रक्षेत्रेऽथ वा यदि ।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा तुंगाशे स्वांशगेऽपि वा।।
दुश्चिक्ये लाभगे चैव राजसम्मानवैभवम्।
सत्कीर्तिर्धनलाभश्च विद्यावादविनोदकृत्।।
महाराजप्रसादेन गजवाहनभूषणम्।
राजयोगं प्रकुर्वीत सेनाधीशान्महत्सुखम् ।।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि राज्यलाभं करोति च ।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिलाभकृत् ।।

यदि शनि अपने उच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, मूलत्रिकोण, भाग्य, अपने उच्चांश, अपने नवमांश, तृतीय, लाभस्थान में बैठा हो तो राजसम्मान, सुन्दर यश, धनलाभ, विद्याध्ययन से स्वान्त सुख, महाराजा की कृपा से सेनानायक, हाथी, वाहन, आभूषण आदि का लाभ, परम सुख, गृह में लक्ष्मी की कृपा, राज्यलाभ, पुत्र कलत्र धनादि का लाभ, गृह में कल्याण आदि का शुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वाऽस्तंगतेऽपि वा।
विषशस्त्रादिपीडा च स्थानभ्रंशं महद्भयम्।।

पितृमातृवियोगं च दारपुत्रादिपीडनम्।
राजवैषम्यकार्याणि ह्यनिष्टं बन्धनं तथा।।
शुभयुक्तेक्षिते मन्दे योगकारकसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा मीनगे कार्मुके शनौ।।
राज्यलाभं महोत्साहं गजाश्वाम्बरसंकुलम्।

यदि शनि 6,8,12 में हो, नीच या अस्तंगत हो तो विष या शस्त्र से पीड़ा, स्थान का विनांश, महाभय, माता – पिता से वियोग, पुत्र कलत्रादि को पीड़ा, राजवैमनश्यता से कार्य में अनिष्ट, बन्धन आदि प्राप्त होता है। यदि शनि शुभग्रह से युत या दृष्ट हो, योगकारक ग्रहों से सम्बन्ध रखता हो या केन्द्र - त्रिकोण लाभ में हो या मीन, धन राशिस्थ हो तो राज्यलाभ, हाथी, घोड़े, वस्त्र, महोत्सवादि का कार्य कराता है।

राहु का दशा फल –

राहोस्तु वृषभं केतुर्वृश्चिकं तुंगसंज्ञकम्।
मूलत्रिकोणकं ज्ञेयं युग्मं चापं क्रमेण च।।
कुम्भाली च गृहौ चोक्तौ कन्या मीनौ च केनचित्।
तद्दाये बहुसौख्यं च धनधान्यादिसम्पदाम्।।
मित्रप्रभुवशादिष्टं वाहनं पुत्रसम्भव:।
नवीनगृहनिर्माणं धर्मचिन्ता महोत्सव:।।
विदेशराजसन्मानं वस्त्रालंकारभूषणम्।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे योगकारकसंयुते।।
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा दुश्चिक्ये शुभराशिगे।
महाराजप्रसादेन सर्वसम्पत्सुखावहम्।।
यवनप्रभुसन्मानं गृहे कल्याणसम्भवम्।

राहु का उच्च राशि वृष और केतु का वृश्चिक है। राहु का मूलत्रिकोण मिथुन और केतु का धनराशि है। राहु का कुम्भ और केतु का वृश्चिक स्वगृह राशि है। अन्य मत से कन्या और मीन भी राशिगृह है। राहु या केतु अपने उच्चादि स्थानगत हैं तो उनकी महादशा में धन – धान्यादि सम्पत्ति का अभ्युदय, मित्र एवं मान्य जनों की सहानुभूति से कार्यसिद्धि, वाहन, पुत्रलाभ, नवीन गृहनिर्माण, धार्मिक चिन्ता, महोत्सव, विदेश में भी राजसम्मान, वस्त्र, अलंकार एवं आभूषण की प्राप्ति होती है। राहु केतु योगकारक ग्रहों के साथ हों या शुभग्रह से युत दृष्ट होकर केन्द्र, त्रिकोण, लाभ तृतीय भाव में शुभ

राशिगत हों तो राजा – महाराजा की कृपा से सभी सम्पत्तियों का आगमन और विदेशीय यवनराज से भी धनागम तथा अपने घर में कल्याण होता है।

यदि राहु 8,12 भाव में हो तो उसकी दशा कष्टकारक होती है, यदि पापग्रह से सम्बन्ध रखता हो या मारकेश से युत हो या अपने नीच राशिगत हो तो स्थानभ्रष्ट, मानसिक रोग, पुत्र – स्त्री, का विनाश एवं कुभोजन की प्राप्ति होती है । दशा – प्रारम्भ में शारीरिक कष्ट, धन – धान्य का विनाश, दशा के मध्य में सामान्य सुख और अपने देश में धनलाभ तथा दशा के अन्त में स्थानभ्रष्ट, मानसिक व्यथा एवं कष्ट की प्राप्ति होती है ।

केतु दशाफल –

केन्द्रे लाभे त्रिकोणे वा शुभराशौ शुभेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभवर्गे वा राजप्रीतिं मनोनुगम्।।
देशग्रामाधिपत्यं च वाहनं पुत्रसम्भवम्।
देशान्तरप्रयाणं च निर्दिशेत् तत्सुखावहम्।।
पुत्रदारसुखं चैव चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
दुश्चिक्ये षष्ठलाभे वा केतुर्दाये सुखं दिशेत्।।
राज्यं करोति मित्रांशं गजवाजिसमन्वितम्।
दशादौ राजयोगाश्च दशामध्ये महद्भयम्।।
अन्ते दूराटनं चैव देहविश्रमणं तथा।
धने रन्ध्रे व्यये केतो पापदृष्टियुतेक्षिते।।
निगडं बन्धुनाशं च स्थानभ्रंशं मनोरूजम्।
शूद्रसंगादिलाभं च कुरूते रोगसंकुलम्।।

यदि केतु केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या शुभ राशिगत हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो, अपने उच्च, शुभ वर्ग में स्थित हो तो राजा से प्रेम, मनोनुकूल वातावरण, देश या ग्राम का अधिकारी, वाहनसुख, सन्तानोत्पत्ति, विदेशभ्रमण, सुखकारक, स्त्री–पुत्र सुख एवं पशुओं से लाभ होता है। यदि केतु 3,6,11 भाव में स्थित हो तो उसकी दशा में सुख, राज्यलाभ, मित्रों का सहयोग एवं हाथी, घोड़े आदि सवारी का लाभ होता है। केतु की दशा के आरम्भ में राजयोग, मध्य में भय एवं अन्त में दूरगमन और शारीरिक कष्ट होता है। 2,8,12 वें भाव में केतु स्थित हो तो जातक पराश्रित, बन्धुनाश, स्थानविनाश, मानसिक रोग, अधम व्यक्ति का संग और रोगयुत होता है।

बोध प्रश्न –

1. सूर्य की उच्च राशि होती है।
   क. मेष ख. वृष ग. कर्क घ.मकर
2. सूर्य यदि १० अंश का हो तो क्या फल होता है।
   क. मान-सम्मान ख. तीर्थाटन ग. मानहानि घ. मन दु:खी
3. स्थिर राशियाँ है –
   क. १,४,७,१० ख.२,५,८,११ ग. ३,६,९,१२ घ. कोई नहीं
4. वृहत्पराशर होरा शास्त्र के अनुसार राहु किस राशि में उच्च का होता है।
   क. मेष ख. वृष ग. मिथुन घ. कर्क
5. गुरु यदि अपनी उच्च राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भाग्य की होती है।
   क. अभिवृद्धि ख. कमी ग. मिश्रित घ. कोई नहीं
6. केतु की दशा का आरम्भ का क्या फल होता है।
   क. राजयोग ख. मृत्यु ग. आयुक्षय घ. मान

1.6 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि महादशा फल विचार से तात्पर्य यह है कि जातक के उपर जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उस ग्रह की कुण्डली में स्थितिवशात् उस जातक पर प्रभाव पड़ता है। यह ध्यातव्य होता है कि कुण्डली में ग्रह उच्च का है, नीच का है, स्वगृही है, मित्रगृही है, शत्रुगृही है, उस पर कितने शुभग्रह और पापग्रह की दृष्टि है तथा उस ग्रह की अवस्था क्या है आदि इत्यादि ऐसे अनेक तथ्य महादशा फल विचार के दौरान ज्योतिषी के समक्ष उपस्थित होते हैं। केवल ग्रह की दशा देखकर ही फलादेश करना नहीं चाहिए, अपितु सम्पूर्ण स्थितियों को देखने की आवश्यकता होती है। कदाचित् इसीलिए फलादेश का स्तर अत्यन्त व्यापक है। इसके लिए ग्रहों के प्रत्येक पक्षों का सूक्ष्म ज्ञान की आवश्यकता होती है।

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

विंशोत्तरी महादशा – विंशोत्तरी महादशा कुल १२० वर्ष की होती है।

उच्चस्थ – उच्च में स्थित।

पृथक- पृथक - अलग-अलग

केन्द्रस्थ – १,४,७,१० में स्थित

अस्तंगत – अस्त हो गया हो।

1.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. ख
5. क
6. क

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चौखम्भा प्रकाशन
4. फलदीपिका – मूल लेखक – मन्त्रेश्वर
5. वृहज्जातक – मूल लेखक - आचार्य वराहमिहिर

1.10 सहायक पाठ्यसामग्री

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – चौखम्भा प्रकाशन
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विंशोत्तरी महादशा का फल लिखिये।
2. सूर्य एवं चन्द्रमा का फल लिखिये।
3. गुरु एवं शुक्र ग्रह की दशाओं का फल लिखये।
4. शनि एवं राहु महादशा फल लिखिये।
5. महादशा का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 2 अन्तर्दशाफल विचार

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 अन्तर्दशा साधन परिचय

2.4 अन्तर्दशाफल विचार (विभिन्न जातक ग्रन्थ के अनुसार)

2.5 सारांश

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -607 चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – अन्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी दशा फल को जान लिया है। अब आप अन्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी के पश्चात अन्तर्दशाओं के फलित पक्ष इस अध्याय में वर्णित किया जा रहा है। अन्तर्दशाओं में सूर्यादि ग्रहों का जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'अन्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- राशियों के अन्तर्दशाओं को परिभाषित कर सकेंगे।
- अन्तर्दशा दशा फल को समझा सकेंगे।
- अन्तर्दशा दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में अन्तर्दशा दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

2.3 अन्तर्दशा साधन परिचय

आप पूर्व की अध्यायों में अन्तर्दशा साधन के गणितीय पक्ष को जान चुके है। यहाँ आप राशियों के अन्तर्दशाओं के साधन से परिचित हो जायेंगे। तत्पश्चात् उसके फलाफल का ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। महादशापति और अन्तर्दशा के नियत वर्षसंख्या को परस्पर गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशा को वर्षसंख्या से भाग देने से वर्षादि लब्धि अन्तर्दशा का भोगकाल होता है। यथा -

दशां दशाब्दसङ्गुण्यां सर्वायुः संख्यया हरेत्।
लब्धमन्तर्द्दशा ज्ञेया वर्षमासदिनादिकाः।।

पूर्वोक्त उदाहरण में मिथुन की महादशा में प्रथम अन्तर्दशा मिथुन की ही होगी, मिथुन के दशावर्ष ९ को उसी से गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशावर्ष ८५ से भाग देने पर ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन मिथुन में मिथुन की अन्तर्दशा होगी। मिथुन की अन्तर्दशा के बाद सिंह की अन्तर्दशा ९×५/८५ = ० वर्ष ६ मास १० दिन, कर्क की ९×२१/८५ = २ वर्ष २ मास २० दिन, कन्या की

९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन इसी क्रम से अन्य राशियों तुला, वृश्चिक, मीन कुम्भ और मकर की अन्तर्दशाएँ निकालनी चाहिए।

चक्रेशाब्दा भुक्तिराशीश्वराब्दैर्हत्वा तत्तद्राशिमानायुराप्ताः।
अब्दा मासा वासरा नाडिकाद्या दुःस्थानेशा दुःखरोगाकराः स्युः।।

पूर्वोक्त विधि को पुनः कहते हैं। चक्रेश (महादशापति) के दशावर्ष को अन्तर्दशापति के दशावर्ष से गुणाकर गुणनफल में चक्रेश से सम्बन्धित नवांश के सम्पूर्ण वर्षमान से भाग देने से वर्ष, मास और दिनात्मक भुक्तिकाल होता है। दुःस्थान के स्वामी की अन्तर्दशा में अनेक दुःख और रोगादि होते हैं।

इत्थं महादायदिनं महाब्दैः सङ्गुण्य तत्रान्तरदास्तु दाये।
पुनश्च तैस्तैः परमायुरब्दैर्हृतं दशान्तर्दशिता दशाख्या।।

दशापति और अन्तर्दशापति के दशावर्षों को परस्पर गुणाकर नक्षत्रचरण की परमायु वर्ष से भाग देने पर वर्षादि लब्धि अन्तर्दशापति के भोग्य वर्ष होते हैं।

विनाडीकृत्य नक्षत्रं स्वैः स्वै संवत्सरैः पृथक्।
दायैः सङ्गुण्य सर्वायुराप्तं सूक्ष्मदशाफलम्।।

पलात्मक नक्षत्रमान को अपने-अपने दशावर्ष से गुणाकर कालचक्र के परमायु वर्ष से भाग देने पर सूक्ष्म दशा होती है।

ग्रहवत्सरवासरा हृताः परमायुष्यसमामितध्रुवैः।
निजवर्षगुणाः स्वपाकदा इति पाकेष्वखिलेषु चिन्तयेत्।।

जिस ग्रह की महादशा में इष्ट ग्रह की अन्तर्दशा का ज्ञान करना हो उसके दशावर्ष में नक्षत्रचरण की परमायु वर्ष से भाग देकर वर्षादि लब्धि को इष्ट ग्रह के दशावर्ष से गुणा करने पर वर्षादि उस ग्रह की अन्तर्दशा होती है। इस विधि का प्रयोग सभी प्रकार की अन्तर्दशा आदि के आनयन में करना चाहिए।

2.4 अन्तर्दशा फल विचार - विभिन्न जातक ग्रन्थों के अनुसार

जातकपारिजात, फलदीपिका एवं जातकाभरण ग्रन्थ के अनुसार अन्तर्दशा फल -

सूर्यमहादशा में अन्तर्दशा फल -

द्विजभूपतिशस्त्राद्यैर्धनप्राप्तिमनोरुजम्।
विदेशवनसंचारं भानोरन्तर्गते रवौ।।

सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में ब्राहमण, राजा और शस्त्रादि से धन की प्राप्ति होती है। मानसिक उत्पीड़न और विदेश-अरण्यादि भ्रमण होता है।

'महीश्वरादुपलभतेऽधिकं यशो वनांचलस्थलवसतिं धनागमम्।
ज्वरोष्णरुक् जनकवियोगजं भयं निजां दशां प्रविशति तीक्ष्णदीधितौ'।।

(फलदीपिका)

अर्थात् सूर्य की दशान्तर्दशा में राजा से सम्मान, यश की वृद्धि, वन-प्रदेश और पर्वतों मेंर विचरणं तथा धनागम होता है। ज्वरताप से कष्ट तथा पिता का निधन भी सम्भव होता है।

चन्द्रान्तर्दशा-फल

बन्धुमित्रजनैरर्थं प्रमादं मित्रसज्जनैः।
पाण्डुरोगादिसन्तापं भानौ चन्द्रदशान्तरे।।

सूर्य की महादशा में चन्द्रान्तर्दशा काल में स्वजनों-बन्धु-बान्धवों तथा मित्रों के सहयोग से धन का लाभ होता है। मित्र और सज्जनों की सङगति से मनोविनोदादि का सुख प्राप्त होता है। पाण्डुरोगार्त होने से कष्ट होता है।

'रिपुक्षयो व्यसनशमो धनागमः कृषिक्रिया गृहकरणं सुहृद्युतिः।
क्षयानलप्रतिहतिरर्कदायकं शशी यदा हरति जलोद्भवा रुजः'।। (फलदीपिका)
'करोति चन्द्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम्।
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च।।
पङेकरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगाङोक यदि लाभमुच्चैः।
प्रमादमद्भ्यो ग्रहणीं च पाण्डुं केषाचिंदेतन्मतमत्र चोक्तम्'।। (जातकाभरण)

भौमान्तर्दशा-फल

रत्नकांचनवित्ताप्तिं राजस्नेहं शुभावहम्।
पैत्यरोगादिसंचारं कुजे भानुदशान्तरे।।

सूर्य-महादशा के भौमान्तरावधि में जातक को स्वर्ण-रत्नादि का लाभ, राजकृपा से अनेक शुभ फल का लाभ होता है तथा पित्तज व्याधियों का संक्रमण होता है।

'सत्प्रवालकलधौतसुचेलं मङगलानि विजयं च विधत्ते।
मंगलं कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल मानम्'।। (जातकाभरण)
'रुजागमः पदविरहोऽरिपीडनं व्रणोद्भवः स्वकुलजनैर्विरोधिता।
महीभृतो भवति भयं धनच्युतिर्यदा कुजो हरति तदार्कवत्सरम्'।। (फलदीपिका)

राह्वन्तर्दशा-फल

अकाले मृत्युसन्तापं बन्धुवर्गारिपीडनम्।
पदच्युतिं मनोदुःखं रवेरन्तर्गतेऽप्यहौ।।

सूर्य-महादशा के रा...न्तरावधि में अकाल मृत्यु का भय होता है, स्वजनों-बन्धु-बान्धवों तथा शत्रुओं से उत्पीड़न, पदच्युति और मानसिक सन्ताप होता है।

'रिपूदयो धनहृतिरापदुदमो विषाद्धयं विषयविमूढता पुनः।
शिरोदृशोरधिकरुगेव देहिनामहौ भवेदहिमकरायुरन्तरे'।। (फलदीपिका)

गुर्वन्तर्दशा-फल

सर्वपूज्यं सुताद्वित्तं देवब्राहमणपूजनम्।
सत्कर्माचारसद्गोष्ठी रवेरन्तर्गते गुरौ।।

सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशावधि में जातक सर्वत्र सम्मानित होता है, पुत्र के द्वारा धन का लाभ और देव-ब्राहमणों के प्रति आस्था एवं आदर भाव का संचार होता है; जातक सत्कर्मरत होता है तथा सज्जनों की सङगति का उसे लाभ मिलता है।

'सद्वस्त्रधान्याप्ति सङ्ग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु।
भूपाप्तसम्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये'।। (जातकाभरण)
'रिपुक्षयो विविधधनाप्तिरन्वहं सुरार्चनं द्विजगुरुबन्धुपूजनम्।
श्रवःश्रमो भवति च यक्ष्मरोगिता सुरार्चिते प्रविशति गोपतेर्दशायाम्'।।

(फलदीपिका)

शन्यन्तर्दशा-फल

सर्वशत्रुत्वमालस्यं हीनवृत्तिं मनोरुजम्।
राजचोरभयप्राप्तिं रवेरन्तर्गते शनौ।।

सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर शत्रुता, आलस्य, निकृष्ट साधनों का अनुसरण, मानसिक उत्पीड़न तथा राजा और चोर से भय होता है।

'धनाहतिः सुतविरहः स्त्रिया रुजो गुरुव्ययः सपदि परिच्छदच्युतिः।
मलिष्ठता भवति कफप्रपीडनं शनैश्चरे सवितृदशान्तरं गते'।। (फलदीपिका)
'नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसम्भवः स्यात्।
मित्राण्यमित्राणि भवन्ति नूनं शनैश्चरे भानुदशान्तरस्थे'।। (जातकाभरण)

बुधान्तर्दशा-फल

बन्धुपीडां मनोदुःखं सन्नोत्साहं धनक्षयम्।
किंचित्सुखमवाप्नोति रवेरन्तर्गते बुधे।।

सूर्य की महादशा में यदि बुध की अन्तर्दशा हो तो उस अवधि में स्वजनो एवं परिजनों का कष्ट, मानसिक सन्ताप, हतोत्साह और धन का नाश होता है। जातक को थोड़ा सुख ही प्राप्त होता है।

'विचर्चिका पिटकसकुष्ठकामिला विशर्धनं जठरकटिप्रपीडनम्।
महाक्षयस्त्रिगदभयं भवेत्तदा विधोः सुते चरति रवेरथाब्दकम्'।। (फलदीपिका)

'विचर्चिकाद्दुरविकारपूर्वैः पापामयैर्देहनिपीडनं स्यात्।
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशां प्रयाते'।। (जातकाभरण)

केत्वन्तर्दशा-फल

कण्ठरोगं मनस्तापं नेत्ररोगमथापि वा।
अकालमृत्युमाप्नोति रवेरन्तर्गते ध्वजे।।

सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा प्राप्त होने पर कण्ठरोग, मानसिक सन्ताप तथा नेत्ररोगादि से जातक पीड़ित होता है। उसकी अकाल मृत्यु भी सम्भव होती है।

'सुहृद्व्ययः स्वजनकुटुम्बविग्रहो रिपोर्भयं धनहरणं पदच्युतिः।
गुरोर्गदश्चरणशिरोरुगुच्चकैः शिखी यदा विशति दशां विवस्वतः'।।

(फलदीपिका)

मित्रहानि, स्वजन एवं परिजनों से विरोध, शत्रुओं से भय, धनक्षय, पदच्युति, कुाल के वुद्धजनों के पैरों और शिर में भयंकर पीड़ा से कष्ट आदि फल सूर्यदशा में केतु की अन्तर्दशावधि में जातक को प्राप्त होते हैं।

शुक्रान्तर्दशा-फल

जलद्रव्याप्तिमायासं कुस्त्रीजननिषेवणम्।
शुष्कसंवादमाप्नोति रवेरन्तर्गते भृगौ।।

सूर्य की महादशा के शुक्रभुक्तिकाल में जातक को जल से उद्भूत पदार्थों-मोती, शंख, मत्स्य आदि-का लाभ अथवा इन पदार्थों के व्यवसाय से लाभ होता है। विश्रान्ति तथा कुत्सित स्त्रियों से समागम होता है तथा अर्थहीन विवाद होता है।

'विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम्।
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशां प्रयातः'।। (जातकाभरण)
'शिरोरुजा जठरगुदार्तिपीडनं कृषिक्रिया गृहधनधान्यविच्युतिः।

सुतस्त्रियोरसुखमतीव देहिनां भृगोः सुते चरति रवेरथाब्दकम्'।। (फलदीपिका)

दशादौ दिननाथस्य पितृरोगं धनक्षयम्।

सर्वबाधाकरं मध्ये दशान्ते सुखमाप्नुयात्।।

सूर्य की महादशा के प्रारम्भिक भाग में पिता को कष्ट और धन की हानि होती है। दशा का मध्य भाग बाधापूर्ण होता है तथा दशा का अन्तिम भाग सुखकर होता है।

स्वोच्चे नीचनवांशगस्य तरणेर्दायेऽपवादं भयं

पुत्रस्त्रीपितृवर्गबन्धुमरणं कृष्णादिवित्तक्षयम्।

नीचे तुङ्गनवांशगस्य च रवेः पाके नृपालश्रियं

सौख्यं याति दशावसानसमये वित्तक्षयं वा मृतिम्।।

उच्चराशिगत सूर्य यदि नीचनवांश में स्थित हो तो उसकी दशा में अपवाद, भय-ग्रस्तता, पुत्र, स्त्री अथवा पितृकुल के श्रेष्ठ व्यक्ति का निधन, कृषि तथा व्यवसाय की क्षति होती है।

उच्चराशि के नवांश में स्थित सूर्य यदि नीच राशिगत हो तो राजश्री, सुख आदि का लाभ दशा के अन्त में जातक को प्राप्त होता है।

चन्द्रमहादशा-फल

हिमकिरणदशायां मन्त्रवेदद्विजाप्ति-

र्युवतिजनविभूतिः स्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।

कुसुमवसनभूषागन्धनानाधनाढयो

भवति बलविरोधे चार्थहा वातरोगी।।

चन्द्रमा की महादशा में मन्त्र, वेद और ब्राहमणों में आस्था विकसित होती है; स्त्रीजनों के प्रति रुचि तथा स्त्री, धन एवं क्षेत्र (भूमि) का लाभ होता है। जातक पुष्प, वस्त्र, आभूषण, सुगन्ध पदार्थ और विपुल धन से सुखी होता है। यदि चन्द्रमा निर्बल हो तो धन की हानि और वातरोग होता है।

'शिशिरकरदशायां मन्त्रदेवद्विजोर्वीपतिजनितविभूतिस्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।

कुसुमवसनभूषागन्धनानारसाप्तिर्भवति खलु विरोधस्त्वक्षयो वातरोगः'।।

(फलदीपिका)

चन्द्रमा की महादशा में अन्तर्दशा-फल

विद्यास्त्रीगीतवाद्येष्वभिरतिशमनं पट्टवस्त्रादिसिद्धिं

सत्सङंग देहसौख्यं नृपसचिवचमूनायकैः पूज्यमानम्।

सत्कीर्तिं तीर्थयात्रां वितरति हिमगुः पुत्रमित्रैः प्रियं च

क्षोणीगोवाजिलाभं बहुधनविभवं स्वे दशान्तर्विपाके।।

चन्द्रमा की महादशा के चन्द्रमा की ही अन्तर्दशावधि में विद्या, स्त्री और संगीत-गायन और वादन दोनों में विशेष अभिरुचि, रेशमी वस्त्र का लाभ, सत्सङ्ग, दैहिक सुख, राजा, उसके मन्त्री और सेनापति द्वारा सम्मान, सत्कीर्ति तथा पुत्र और मित्रों के साथ तीर्थाटनादि का सुख जातक को प्राप्त होता है। भूमि, गौ और अश्वादि और प्रियवस्तु और धन-वैभवादि की प्राप्ति होती है।

'स्त्रीप्रजाप्तिरमलांशुकागमो भूसुरोत्तमसमागमो भवेत्।

मातुरिष्टफलमङ्गनासुखं स्वां दशां विशति शीतदीधितौ'।। (फलदीपिका)

चन्द्रमा की दशा में उसके भुक्तिकाल में कन्या का जन्म, स्वच्छ निर्मल वस्त्र का लाभ तथा श्रेष्ठ ब्राहमणों में समागम होता है। माता की सन्तुष्टि और स्त्रीसुख की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर्दशा-फल

रोगं विरोधबुद्धिं च स्थाननाशं धनक्षयम्।

मित्रभ्रातृवशात् क्लेशं चन्द्रस्यान्तर्गतेर कुजे।।

चन्द्रमा की महादशा के भौमान्तर्दशा काल में रोगार्तता, विरोधबुद्धि, स्थानच्युति, धन का विनाश और सहोदर तथा मित्रों के द्वारा जातक उत्पीड़ित होता है।।

'कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोगोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च।

कुर्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके'।। (जातकाभरण)

'पित्तवह्निरुधिरोद्भवा रुजः क्लेशदुःखरिपुचोरपीडनम्।

वित्तमानविहतिर्भवेत्कुजे शीतदीधितिदशान्तरं गते'।। (फलदीपिका)

राह्वन्तर्दशा-फल

रिपुरोगभयात् क्लेशं बन्धुनाशं धनक्षयम्।

न किंचित्सुखमाप्नोति राहौ चन्द्रदशान्तरे।।

शत्रु और रोगभय से कष्ट, बन्धु-बान्धवों का विनाश तथा धन की हानि होती है। चन्द्रमा की महादशा में रा...न्तरावधि में जातक को थोड़ा भी सुख नहीं होता।

'तीव्रदोषरिपुवृद्धिबन्धुरुक् मारुताशनिभयार्तिरुग्भवेत्।

अन्नपानजनितज्वरोदयाश्चन्द्रवत्सरविहारके ह्यग्रहौ'।। (फलदीपिका)

गुर्वन्दर्दशाफल

यानादिविविधार्थाप्तिं वस्त्राभरणसम्पदः।

यत्नात् कार्यमवाप्नोति जीवे चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशान्तर्गत बृहस्पति की अन्तर्दशा में वाहनादि सम्पत्ति का लाभ, विपुल मात्रा में वस्त्र-आभूषणादि का लाभ होता है और प्रयत्न करने से समस्त कार्य सफल होते हैं।

'विशिष्ट धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसम्पत्।
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे'।। (जातकाभरण)
'दानधर्मनिरतिः सुखोदयो वस्त्रभूषणसुहृत्समागमः।
राजसत्कृतिरतीव जायते कैरवप्रियवयोहरे गुरौ'।। (फलदीपिका)
मातृपीडा मनोदुःखं वातपैत्त्यादिपीडनम्।
स्तब्धवागरिसंवादं शनौ चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशा के शनि-अन्तर्दशावधि में जातक की माता को कष्ट, मानसिक सन्ताप, वात-पित्तजन्य व्याधि से कष्ट, शत्रु के साथ उसे स्तब्ध कर देने वाला विवाद आदि फल होते हैं।।78।।

'नरेन्द्रचैराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रासुखरुक् प्रवृद्धिम्।
करोति नानाव्यसनानि पुंसां शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः'।। (जातकाभरण)
पैत्तरोगनिवहः सुहृत्सुतस्त्रीरुजा व्यसनसम्भवो महान्।
प्राणहानिरथवा भवेच्छनौ मारबन्धुवयसोऽन्तरं गते'।। (फलदीपिका)

बुधान्तर्दशा-फल

मातृवर्गाद्धनप्राप्तिर्विद्वज्जनसमाश्रयम्।
वस्त्रभूषणसम्प्राप्तिर्बुधे चन्द्रदशान्तरे।।

चन्द्रमहादशा में बुधान्तर्दशा हो तो मातुलपक्ष से धनलाभ, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है तथा जातक सज्जनों का आश्रयदाता होता है।

'सर्वदा धनगजाश्वगोकुलप्राप्तिराभरणसौख्यसम्पदः।
चित्तबोध इति जायते विधोरायुषि प्रविशते यदा बुधः'।। (फलदीपिका)
'उदारनामान्तरलब्धिमुच्चैर्ललामगोभूमिगजाश्ववृद्धिः।
विद्याधनैश्वर्यसम्मुन्नतत्वं कुर्याद्बुधश्चन्द्रदशान्तराले'।। (जातकाभरण)

केत्वन्तर्दशा-फल

स्त्रीरोगं बन्धुनाशं च कुक्षिरोगादिपीडनम्।
द्रव्यनाशमवाप्नोति केतौ चन्द्रदशान्तरे।।

पत्नी को ......, स्वजनो का विनाश, उदरविकारजन्य पीड़ा, धन-धान्य की हानि आदि फल जातक को चन्द्रमहादशान्तर्गत बुध की अन्तर्दशा मेंर प्राप्त होते हैं।

दासभृत्यहतिरस्ति देहिनां केतुके हरति चान्द्रमब्दकम्'।। (फलदीपिका)

शुक्रान्तर्दशा-फल

स्त्रीधनं कृषिपश्वादिजलवस्त्रागमं सुखम्।
मातृरोगमवाप्नोति भृगौ चन्द्रदशान्तरे।।

स्त्रीपक्ष से धनलाभ, कृषि-पशुधन, जलीय पदार्थ और वस्त्रादि का सुख, मातृपक्ष से रोग का संक्रमण-ये फल चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशावधि में जातक को प्राप्त होते हैं।

'तोययानवसुभूषणाङगनाविक्रयक्रयकृषिक्रियादयः।
पुत्रमित्रपशुधान्यसंयुतिश्चन्द्रदायहरणोन्मुखे भृगौ'।।(फलदीपिका)
'नानाङगनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः।
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः'।।(जातकाभरण)

सूर्यन्तर्दशा-फल

नृपप्रायकमैश्वर्यं व्याधिनाशं रिपुक्षयम्।
सौख्यं शुभमवाप्नोति रवौ चन्द्रदशान्तरे।।

राजतुल्य ऐश्वर्यादि का लाभ, रोगमुक्ति, शत्रुओं का विनाश, सुख औरअनेक शुभ फल की प्राप्ति जातक को चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा आने पर होती है।

'राजमाननमतीव शूरता रोगशान्तिररिपक्षविच्युतिः।
पित्तवातरुगिने गते तदा स्याच्छशाङकपरिवत्सरान्तरम्'।।(फलदीपिका)
'नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिं प्रकृतेर्विकारम्।
चैराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः'।।(जातकाभरण)
आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं विदुः।
पाकावसानसमये चाङगजं दृष्टिजं फलम्।।

चन्द्रमा जिस भाव में स्थित हो उस भाव के शुभाशुभानुसार शुभाशुभ फल दशा के प्रारम्भ में देता है। जिस राशि में वह स्थित होता है उसके अनुसार शुभाशुभ फल दशा के मध्य में तथा लग्न या शरीरजन्य फल और चन्द्रमा पर दृष्टिफल दशा के अन्तिम भाग में देता है।

आरोही सूर्यदशा फल कथन

आरोहिणी वासरनायकस्य दशा महत्वं कुरुतेऽति सौख्यम्।

परोपकारं सुतदारभूमिगोवाजिमातङ्गकृषिक्रियादीन्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि आरोही अर्थात् उच्च राशि में जाने वाले सूर्य की दशा हो, तो मनुष्य को अपना महत्त्व स्थापित करने का अवसर मिलता है। अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है। अन्यान्य व्यक्तियों का उपकार करने में भी प्रवृत्त रहता है। पुत्र, स्त्री, भूमि, गाय, घोड़ा, हाथी आदि की प्राप्ति सहज ही होता है। कृषिकार्य से भी लाभ सम्भव होता है।।

अवरोही दशा फल कथन

दशावरोहाद्दिननायकस्य कृषिक्रिया वित्तगृहेष्टनाशम्।
चोराग्निपीडां कलहं विरोधं नरेशकोपं कुरुते विदेशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि अवरोही अर्थात् उच्च से निकलकर नीच की ओर अग्रसर सूर्य की दशा के समय मनुष्य को कृषि कर्म के अवसर का अभाव होता है। अन्न, धन, गृह, इष्ट वस्तु या अभिलषित वस्तु आदि की हानि होती है। चोर, अग्नि आदि से भी पीड़ा प्राप्त होती है। कलह, विरोध आदि को भी झेलना पड़ता है। राजकीय कोप भी मिलता है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं।।

नीच (तुला) राशिस्थ सूर्य दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि रवेर्विपाके मानार्थनाशं क्षपालकोपात्।
स्वबन्धुनाशं सुतमित्रदारैः पित्रादिकानामपकीर्तिमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में नीच तुला राशि में सूर्य के स्थित रहने पर मनुष्य राजकीय कोप के कारण अपमान सहन करता हुआ धन हानि भी उठाता है। उसे अपने बन्धु-बान्धवों की हानि भी सहन करना पड़ता है। अपने पुत्र, मित्र और स्त्री के कारण भी अपने पिता आदि कुल की अपकीर्ति को सहन करता है।।

परमनीचस्थ सूर्य दशा फल कथन

अत्यन्तनीचान्वितसूर्यदाये विपत्तिमाप्नोति गृहच्युतिं च।
विदेशयानं मरणं गुरूणां स्त्रीपुत्रगोभूमिकृषेर्विनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपने परमनीचांश तुलाराशि के 10 अंश में स्थित हो, तो उस की दशा के समय विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। प्रायः घर-गृहस्थी से दूर हो जाना पड़ता है। विदेश भी जाना पड़ता है। गुरु वर्ग के जनों की मृत्यु होती है। स्त्री, पुत्र, गोधन, भूमि और कृषि आदि की हानि भी उठानी पड़ती है।

मूलत्रिकोण (सिंह) राशिस्थ सूर्य दशा फल कथन

मूलत्रिकोणस्थरवेर्विपाके क्षेत्रार्थदारात्मजबन्धुसौख्यम्।

राजाश्रयं गोधनमित्रलाभं स्वस्थानयानादिकमेति राज्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य अपनी मूलत्रिकोण राशि में हो उसकी दशा के समय मनुष्य कृषियोग्यभूमि, धन, स्त्री, पुत्र और बन्धुओं का ... सौख्य प्राप्त करता है। राज्य का आश्रय पाता है। गोधन और स्त्रियों का लाभ भी प्राप्त करता है। अपने स्थान, वाहन आदि के साथ राज्य की प्राप्ति भी करने का अवसर प्राप्त होता है।

स्वराशि (सिंहस्थ) सूर्य दशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि रवेर्दशायां स्वबन्धुसौख्यं कृषिवित्तकीर्तिम्।
विद्यायशः प्रार्थितराजपूजां स्वभूमिलाभं समुपैति विद्याम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य स्वराशि (सिंह) में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अपने बन्धुओं का सुख प्राप्त होता है। कृषि, धन और कीर्ति का लाभ होता है। विद्या (ज्ञान), यश आदि भी मिलते हैं। अपने योग्य राजकीय सम्मान भी पाता है। अपनी भूमि और विद्या का लाभ भी प्राप्त करता है।।

अधिशत्रुराशिगत सूर्य दशा फल कथन

दशाविपाके ह्यधिशत्रुगस्य रवेः प्रनष्टार्थकलत्रपुत्रः।
गोमित्रपित्रादिशरीरकष्टं शत्रुत्वमायाति जनैः समन्तात्।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अपने धन, स्त्री, पुत्र आदि की हानि उठाता है। गोधन, मित्र, पिता आदि को शारीरिक कष्ट होता है। हर प्रकार से अन्य जनों से शत्रुता होती है।।24।।

शत्रुराशिस्थ सूर्य दशाफल कथन

सपत्नराशिस्थितसूर्यदाये दुःखी परिभ्रष्टसुतार्थदारः।
नृपाग्निचौरैर्विपदं विवादं पित्रोर्विरोधं च दशान्तमेति।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि शत्रु ग्रह की राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य दुःखी रहता है। पुत्र, धन, स्त्री आदि की हानि होती है। राजकीयमाध्यम, अग्नि, चोर आदि से विपत्ति का कारण प्राप्त होता है। विवाद में उलझना पड़ता है। अपने माता-पिता से भी विरोध दशा के अन्त में होता है।

बोध प्रश्न : -

1. सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में किसकी प्राप्ति होती है?

   क. मान-सम्मान प्राप्ति ख. धन प्राप्ति ग. ऐश्वर्य प्राप्ति घ. सभी

2. फलदीपिका के अनुसार सूर्यान्तर्दशा का फल क्या है?
   क. राजा द्वारा सम्मान ख. धन प्राप्ति ग. लाभ घ. उपुर्यक्त सभी
3. स्वराशि का सूर्य अन्तर्दशा काल में क्या फल देता है।
   क. बन्धु सुख ख. धन सुख ग. राज्य सुख घ. कोई नहीं
4. चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का क्या फल है?
   क. रोग ख. मातृ पक्ष से रोग ग. व्रण घ. सुख
5. चन्द्रमा में वृहस्पति दशा का क्या फल है?
   क. वाहन सुख ख. धन सुख ग.पत्नी सुख घ. राज्य सुख

2.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि महादशापति और अन्तर्दशा के नियत वर्षसंख्या को परस्पर गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशा को वर्षसंख्या से भाग देने से वर्षादि लब्धि अन्तर्दशा का भोगकाल होता है। यथा -

दशां दशाब्दसङ्गुण्यां सर्वायुः संख्यया हरेत्।
लब्धमन्तद्र्दशा ज्ञेया वर्षमासदिनादिकाः।।

पूर्वोक्त उदाहरण में मिथुन की महादशा में प्रथम अन्तर्दशा मिथुन की ही होगी, मिथुन के दशावर्ष ९ को उसी से गुणा कर चक्र की सम्पूर्ण दशावर्ष ८५ से भाग देने पर ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन मिथुन में मिथुन की अन्तर्दशा होगी। मिथुन की अन्तर्दशा के बाद सिंह की अन्तर्दशा ९×५/८५ = 0 वर्ष ६ मास १० दिन, कर्क की ९×२१/८५ = २ वर्ष २ मास २० दिन, कन्या की ९×९/८५ = ० वर्ष ११ मास १३ दिन इसी क्रम से अन्य राशियों तुला, वृश्चिक, मीन कुम्भ और मकर की अन्तर्दशाएँ निकालनी चाहिए। सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर्दशा काल में ब्राहमण, राजा और शस्त्रादि से धन की प्राप्ति होती है। मानसिक उत्पीड़न और विदेश-अरण्यादि भ्रमण होता है। चन्द्रमा की महादशा के चन्द्रमा की ही अन्तर्दशावधि में विद्या, स्त्री और संगीत-गायन और वादन दोनों में विशेष अभिरुचि, रेशमी वस्त्र का लाभ, सत्सङ्ग, दैहिक सुख, राजा, उसके मन्त्री और सेनापति द्वारा सम्मान, सत्कीर्ति तथा पुत्र और मित्रों के साथ तीर्थाटनादि का सुख जातक को प्राप्त होता है। भूमि, गौ और अश्वादि और प्रियवस्तु और धन-वैभवादि की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा की महादशा के भौमान्तर्दशा काल में रोगार्तता, विरोधबुद्धि, स्थानच्युति, धन का विनाश और सहोदर तथा मित्रों के द्वारा जातक उत्पीड़ित होता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का भी फल

होता है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

अन्तर्दशा – दशा के मध्य अन्तर्दशा होती है।

सूर्यान्तर्दशा – सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा

स्थान च्युति- स्थान से अधोमुखी परिवर्तन

परस्पर – एक दूसरे का

भूमि – पृथ्वी

गौ – गाय

सुत – पुत्र

दारा – पत्नी

नृप – राजा

चौर – चोर

2.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. घ
3. क
4. ख
5. क

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जातकपारिजात - आचार्य वैद्यनाथ
2. फलदीपिका – आचार्य मन्त्रेश्वर
3. जातकभरणम् – चौखम्भा प्रकाशन
4. सर्वार्थचिन्तामणि – श्री वेंकटेश
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. लघुजातक – आचार्य वराहमिहिर
2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – आचार्य पराशर

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूर्य की अन्तर्दशा फल लिखिये।
2. अन्तर्दशा साधन विधि सोदाहरण लिखिये।
3. जातकभरण एवं फलदीपिका के अनुसार चन्द्रमा में सूर्यादि ग्रहों की अन्तर्दशा का फल लिखिये।
4. गुरु की अन्तर्दशा फल का लेखन कीजिये।
5. जातकपारिजात के अनुसार विविध ग्रहों की अन्तर्दशा फल का उल्लेख कीजिये।

इकाई - 3 प्रत्यन्तर्दशा फल विचार

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 प्रत्यन्तर्दशा फल परिचय

  3.3.1 सूर्यादि ग्रहों के दशा फल

3.4 प्रत्यन्तर्दशा फल विचार

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – प्रत्यन्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने महादशा एवं अन्तर्दशा दशा फल को जान लिया है। अब आप प्रत्यन्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

विंशोत्तरी एवं अन्तर्दशा फल के पश्चात अब आप और सूक्ष्म दशाओं की ओर बढ़ते हुए प्रत्यन्तर्दशा का फलित पक्ष इस अध्याय में अध्ययन करने जा रहा है। प्रत्यन्तर्दशाओं का जातक पर क्या शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। इसका ज्ञान इस अध्याय में आपको हो जायेगा।

आइए इस इकाई में हम लोग 'प्रत्यन्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- प्रत्यन्तर्दशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- प्रत्यन्तर्दशा फल को समझा सकेंगे।
- प्रत्यन्तर्दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में प्रत्यन्तर्दशाओं दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

3.3 प्रत्यन्तर्दशा दशाफल

फलादेश विचार के क्रम में अन्तर्दशा के पश्चात् और सूक्ष्म फल ज्ञान के लिए ऋषियों द्वारा प्रत्यन्तर्दशा फल का भी विचार किया गया है। इससे फलादेश कथन में और सूक्ष्म दृष्टि समाहित है। अत: इसका ज्ञान ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य ही करना चाहिए।

यद्यपि फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में दशा विचार किया गया है। किन्तु सर्वाधिक दशा साधन अथवा उसके फलित पक्ष का विचार के दृष्टिकोण से 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ प्रचलित है। इसके अतिरिक्त फलदीपिका, जातकपारिजात, सर्वार्थचिन्तामणि, लघुजातक, वृहज्जातक, जातकालंकार, ज्योतिष सर्वस्व, ज्योतिष रहस्य आदि विविध ग्रन्थों में फलादेश आदि कथन का सम्यकतया अध्ययन कर सकते हैं। यहाँ इस इकाई में आप फलित के इन्हीं उक्त ग्रन्थों द्वारा दशा फल का बोध करने जा रहे है।

3.4 सूर्यादि ग्रहों के दशा फल

सूर्य ग्रह का दशा फल -

आदि-मध्य-अन्त के सूर्य दशा फल कथन

आदौ सूर्यदशायां दुःखं पितृरोगकृत्क्षयश्चाधिः।
मध्ये पशुधनहानिश्चान्ते विद्यां महत्व...0।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य दशा प्रारम्भिक अवस्था में हो तो उसे दुःख होता है। पैतृक रोग, क्षय रोग, मानसिक विकार आदि भी होता है। दशा के मध्य समय में पशुओं आदि की हानि होती है। दशा के अन्त समय में मनुष्य विद्या, यश महत्त्व प्राप्त करने में सफल होता है।

द्वितीय भावस्थ सूर्यदशा फल कथन

पुत्रोत्पत्तिविपत्तिमत्र कुरुते भानोर्धनस्थस्य वा
क्लेशं बन्धुवियोगदुःख कलहं वाग्दूषणं क्रोधनम्।
स्त्रीनाशं धननाशनं नृपभयं भूपुत्रयानाम्बरं
सर्वं नाशमुपैति तत्र शुभयुग्वाच्यं न चैतत्फलम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि द्वितीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र उत्पन्न होता है और उसकी हानि भी होती है, क्लेश के अन्य कारण भी होता है। बन्धुजनों का वियोग भी होता है, दुःख उठाना पड़ता है और कलह भी होता है। वाणी में दोष उत्पन्न होता रहता है, क्रोध होता है, स्त्री व धन का नाश भी होता है, राजा का भय भी उत्पन्न होता है तथा भूमि, पुत्र, वाहन वस्त्र आदि का अभाव जैसा अनुभव होता है।

सूर्य यदि द्वितीय भाव में शुभ युक्त हो, तो उपरोक्त अशुभ फलों के विपरीत शुभ फल ही होता है।

तृतीय भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

भानोर्विक्रमयुक्तस्य दशा धैर्य महत्सुखम्।
नृपमाननमर्थाप्तिं भ्रातृवैरविपत्तथा।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धैर्य रहता है। बहुत सुख प्राप्त होता है। राजकीय सम्मान भी मिलता है। धन लाभ के अवसर प्राप्त होता है। साथ ही भाईयों में शत्रुता उत्पन्न होती है और विपत्तियों को भी झेलने पड़ते हैं।

चतुर्थ भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

सुखस्थितस्यापि रवेर्दशायां भोगार्थभूभृत्यकलत्रहानिम्।
क्षेत्रादिनाशं स्वपदच्युतिं वा यानुच्युतिं चोरविषाग्निभीतिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को सुखोपभोग के अवसरों का अभाव रहता है। धन, भूमि, सेवक, स्त्री आदि की हानि होती है। कृषि का भी नाश होता है। अथवा अपने पद की हानि होती है। वाहन-दुर्घटना आदि का शिकार होना पड़ता है। चोर, अग्नि, विष आदि का भय भी उत्पन्न होता है।

षष्ठभावस्थ सूर्य दशा फल कथन

दशाविपाके धनहानिमेति षष्ठस्थभानोरतिदुःखजालम्।
गुल्मक्षयोद्भूतपवित्ररोगं मूत्रादिकृछं त्वथ वा प्रमेहम्।

जिस किसी की कुण्डली में यदि सूर्य षष्ठभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धन की हानि होती है। अनेक प्रकार से अत्यन्त दुःखों का सामना करना पड़ता है। गुल्म रोग व क्षय रोग से उत्पन्न अतिसार, मूत्रकृच्छ्र अथवा प्रमेह रोग का शिकार भी होना पड़ता है।

सप्तमभावस्थ सूर्यदशा फल कथन

दारान्वितस्यापि रवेर्दशायां कलत्ररोगं त्वथ वा मृतिं च।
कुभोजनं कुत्सितपाकजातं क्षीरादिदध्याज्यविहीनमत्रम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि सप्तम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अपनी पत्नि के रोग या मृत्यु से कष्ट होता है। अभोज्य भोजन, क्षुद्रता पूर्वक पकाये हुए और दूध, दही घृत आदि से रहित अन्न की प्राप्ति होती है।

अष्टम भावस्थ सूर्यदशा फल कथन

रन्ध्रस्थभानोरपि वा दशायां देहस्य कष्टं त्वथ वाग्निभीतिम्।
चातुर्थिके नेत्रविकारकासं ज्वरातिसारं स्वपदच्युतिं च।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि अष्टम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को शारीरिक कष्ट अथवा अग्नि से भय का शिकार होना पड़ता है। चौथिया ज्वर (चार दिन में उतरने वाला बुखार) और नेत्रविकार भी होता है। कास ज्वर के साथ अतिसार रोग को भी झेलना पड़ता है। पद की हानि भी होती है।

दशम भावस्थ सूर्य दशा फल कथन

कर्मस्थितस्यापि रवेर्दशायां राज्यार्थलाभं समुपैति धैर्यम्।

उद्योगसिद्धिं यशसा समेतं जयं विवादे नृपमाननं च॥

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि दशम (कर्म) भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्य लाभ के साथ धन का लाभ भी होता है। धैर्य भी रहता है। उद्योग अर्थात् पुरुषार्थ सफल होता है। यश की प्राप्ति होती है। विवाद या लड़ाई में विजय मिलती है तथा राजकीय सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

एकादशभावस्थ सूर्यदशा फल कथन

आयस्थितस्यापि दशाविपाके भानोर्धनाप्तिं शुभकर्मलाभम्।
उद्योगसिद्धिं सुतदारसौख्यं यानादिभूषाम्बरदेहसौख्यम्॥

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि एकादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनलाभ के मार्ग प्रशस्त होते हैं। शुभकर्म का भी लाभ होता है। किया गया प्रयास या पुरुषार्थ सफल होता है। स्त्री, पुत्र, सुख, वाहन आदि और आभूषण वस्त्र आदि की भी प्राप्ति होती है।

द्वादश भावस्थ सूर्यदशा फलकथन

भानोर्द्वादशगस्य चेद्यदि दशा क्लेशार्थहानिं कृशं
स्त्रीबन्ध्वात्मजभूमिनाशमथ वा पित्रोर्विनाशं कलिम्।
स्थानात्स्थानपरिभ्रमं विषकृतं राज्ञो भयं पादरु-
ग्विद्यावादविनोदगोष्ठिकलहं गोवाजिसंपीडनम्॥

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि द्वादशभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को क्लेश, धन हानि आदि सहन करना पड़ता है। शारीरिक दुर्बलता भी आ जाती है। स्त्री, बन्धु, पुत्र, भूमि आदि सम्बन्धी हानि अथवा माता-पिता की हानि होती है। कलह करने को बाध्य होता है। एक स्थान से दूसरे स्थान में भ्रमण करना पड़ता है। विष का भय, राजा का भय आदि भी होता है। पैरों में रोग भी हो जाता है। विद्या (ज्ञान) सम्बन्धी आयोजित सभा में वाद-विवाद में कलह का शिकार होना पड़ता है। गोधन, घोड़ा, हाथी आदि के कारण भी पीड़ा मिलती है।

चन्द्रमा का दशा फल कथन -

समराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

दशाविपाके समराशिगस्य कलानिधेः कांचनभूमिलाभम्।
किंचित्सुखं बान्धवरोगपीडां विदेशयानं लभते मनुष्यः॥

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने समग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्वर्ण और भूमि का लाभ होता है। कुछ सुख भी मिलता है। बन्धु-बान्धवों को

रोगपीड़ा होती है। विदेश यात्रा से लाभ होता है।

नीचराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

नीचस्थितस्य दशया विपदं महार्ति क्लेशार्थदुःखवनवासमुपैतिकाले।
कारागृहं निगडपादकृशान्नहीनो चौराग्निभूपतिभयं सुतदारशेषम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी नीच वृश्चिक राशिगत हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विपत्ति का सामना करना पड़ता है। पीड़ा दायक स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। क्लेश होता है। धन सम्बन्धी दुःख भी होता है। निर्वासित जीवन भी किसी कारण व्यतीत करना पड़ता है। कारागार भी जाना पड़ता है। शरीर दुर्बल होता है। अन्नहीनता का शिकार भी होता है। चोर, अग्नि, राजा आदि से भय और स्त्री, पुत्र आदि की हानि होती है।

क्षीण चन्द्र दशा फल कथन

क्षीणन्दुपाके सुकलाविहीनो राजार्थभूपुत्रकलत्रमित्रम्।
उन्मादचित्तं स्वजनैर्विरोधमृणत्वमायाति कुशीलवृत्त्या।।

दशा के समय मनुष्य के महत्वपूर्ण सौख्य की पूर्ति होती है। अनेक प्रकार से धन का लाभ होता है। राजा से सम्मानित होता है। उसके शरीर की दुर्बलता दूर होकर पुष्ट होता है।

चन्द्र दशा के आदि-मध्य-अन्त का फल कथन

चन्द्रदशायामादौ नरपतिसन्मानकीर्तिसौख्यं च।
मध्ये स्त्रीसुतनाशं गृहधनसौख्याम्बरं चान्ते।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि चन्द्र की दशा चल रही हो, तो उसकी दशा के आदि में राजा से सन्मान की प्राप्ति होती है। कीर्ति में वृद्धि होती है। सुख मिलता है। मध्य दशाकाल में स्त्री, पुत्र की हानि भी होती है। अन्त दशा के समय गृहसुख और धन का सुख प्राप्त होता है।

आरोही भौम दशा फल कथन

आरोहिणी भूमिसुतस्य सौख्यं दशा तनोत्यत्र नरेन्द्रपूज्यम्।
प्रधानतां धैर्यमनोभिलाषं भाग्योत्तरं गोगजवाजिसङ्धम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि आरोही क्रम में अर्थात् अपनी उच्चराशि की ओर अग्रसर रहता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सुख प्राप्त करता है। राजा से सम्मान प्राप्त करता है। समाज में श्रेष्ठता सिद्ध कर पाता है। धैर्यवान् होता है। मनवांछित सफलता भी उसे मिलती है। ऐश्वर्य की प्राप्ति भी होती है। गाय, हाथी, घोड़ा आदि पशुओं के समूह से युक्त होता है।

अवरोही भौम दशा फल कथन

धरासुतस्याप्यवरोहकाले स्थानार्थनाशं कलिकोपदुःखम्।
विदेशवासं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैर्भयमेति कष्टम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अवरोही क्रम में अर्थात् .... नचराशि की ओर अग्रसर रहता हुआ स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को भूमि और धन का हरण होता है। कलह में उलझना होता है। क्रोध भी आने लगता है। दुःखी रहना पड़ता है। परदेश वास करने की बाध्यता भी होती है। स्वजनो से विरोध मिलता है। चोर, अग्नि, राजा आदि से भी भय और कष्ट उसे मिलता है।

राहु दशा फल -

लग्नभावस्थ राहु दशा फल कथन

लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः।
बन्धुविनाशं लभते दुःखार्ति च पराजयं समरे।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीनता का शिकार होता है। विष, अग्नि, शस्त्र आदि से उसे भय रहता है। बन्धुओं की हानि होती है। दुःख से वह आर्त्त होता है। युद्ध में पराजित होता है।।

द्वितीय भावस्थ राहुदशा फल कथन

राहोर्दशायां धनराशिगस्य राज्यं च वित्तं हरते विशेषात्।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवा मनोविकारं त्वनृतं प्रकोपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि द्वितीयभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य विशेष रूप से राज्य और धन सम्बन्धी हानि सहन करने को बाध्य रहता है। अखाद्य भोजन करने को मिलता है। दुष्ट राजा के पास सेवा करना पड़ता है। मानसिक विकार उत्पन्न होता है। झूठ भी बोलना पड़ता है। वह क्रोध भी करता है।

तृतीय भावस्थ राहु दशा फल कथन

तृतीयराशिस्थितराहुदाये पुत्रार्थदारात्मसहोदराणाम्।
सुखं कृषेर्बन्धनमाधिपत्यं विदेशयानं नरपालपूज्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य पुत्र, स्त्री, धन, अपने भाई आदि के सुख से युक्त होता है। उसकी कृषि में अभिवृद्धि होती है। उसे अधिकार की प्राप्ति होती है। विदेश गमन करने का अवसर प्राप्त होता है। राजा द्वारा सम्मानित भी

होता है।

चतुर्थ भावस्थ राहु दशा फल कथन

चतुर्थराशिस्थितराहुदाये मातुर्विनाशं त्वथवा तदीयम्।
क्षेत्रार्थनाशं नृपतेः प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की माता की मृत्यु अथवा वह स्वयं ही मृत्यु का शिकार हो जाता है। कृषि क्षेत्र, धन आदि की भी हानि होती है। राजा के कोप का भाजन भी होता है। उसकी पत्नि आदि की पवित्रता नष्ट होने से वह अनेक दुःख से दुखी होता है।

चौराग्निबन्धार्तिमनोविकारं दारात्मजानामपि रोगपीडा।
चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्नसंसारकलत्रपुपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो मानसिक विकार, स्त्री, पुत्र आदि को रोग पीड़ा आदि सम्भव होता है। इस तरह उसका अपनी पत्नि, पुत्र तथा उस संसार, सभी से विरक्ति हो जाता है।।

पंचमभावस्थ राहु दशाफल कथन

बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम्।
कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि पंचम भावस्थ हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धि भ्रम का शिकार होता है। भोजन सम्बन्धी सुख से रहित हो जाता है। विद्या (ज्ञान) सम्बन्धी विषयों के कारण विवाद, कलह और दुःख प्राप्त करता है। सत्य से भी कोप की प्राप्ति होती है। पुत्रनाश के कारण भी उत्पन्न होता है।

षष्ठभावस्थ राहु दशा फल कथन

दशाविपाके त्वरिराशिगस्य चौराग्निभूपैर्भयमाप्तनाशम्।
प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगं त्वग्दोषरोगं त्वथवा मृतिं च।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि राहु षष्ठभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चोर, अग्नि, राजा आदि से भय प्राप्त होता है। उसके शुभेच्छुओं की भी हानि होती है। उसे प्रमेह रोग, गुल्म रोग, क्षय रोग, पित्त रोग, त्वचा रोग होता है अथवा उसकी मृत्यु होती है।

सप्तमभावस्थ राहु दशाफल कथन

कलत्रराशिस्थितराहुदाये कलत्रनाशं समुपैति शीघ्रम्।

विदेशयानं कृषिभाग्यहानिं सर्पाद्भयं मृत्युसुतार्थनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि सप्तम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय, मनुष्य की पत्नि की मृत्यु शीघ्र होती है। विदेश यात्रा करनी पड़ती है। कृषि सम्बन्धी हानि के साथ ही भाग्यावनति भी उसकी होती है। सर्प से भय उत्पन्न होता है। सन्तान (पुत्र) की मृत्यु और धन की हानि भी होती है।

अष्टम भावस्थ राहु दशाफलमाह

राहोर्दशायां निधनस्थितस्य यमालयं याति सुतार्थनाशम्।
चौराग्निभूपैः स्वकुलोद्भवैश्च भयं भृगोर्वा वनवासदुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि अष्टमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य यमलोक की यात्रा करता है अर्थात् उसकी मृत्यु होती है। उसके पुत्रवर्धन शक्ति की हानि भी होती है। चोर, अग्नि, राजा और अपने कुलजनों से भी उसे भय की प्राप्ति होती है। उसे मृग (सिंह) से भी वन में निवास करते भय का सामना करना पड़ता है।।

नवमभावस्थ राहु दशा फल कथन

राहोर्दशायां नवमस्थितस्य पित्रोर्विनाशं लभते मनुष्यः।
विदेशयानं गुरुबन्धुनाशं स्नानं समुद्रस्य सुतार्थनाशम्।।

शुभग्रहदृष्ट गुरु दशा फल कथन

लग्न भावस्थ गुरु दशाफल कथन

लग्नं गतस्य हि दशा पुरुषे करोति जीवस्य सौख्यममलाम्बरभूषणाप्तिम्।
यानाधिरोहणमृदङगपणारवैश्च मत्तेभवाजिभटसङघयुतं करोति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सौख्य, निर्मल वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति करता है। मृदड़ नगाड़ा आदि की ध्वनि से युक्त वाहन की सवारी भी करता है। उन्मत्त हाथी, घोड़ा, और योद्धाओं के समूह से युक्त भी उसको करता है।

चतुर्थ भावस्थ गुरु दशाफल कथन

चतुर्थकेन्द्रस्थितजीवदाये यानत्रयं भूपतिमित्रभावम्।
भूपालयोगे यदि भूपतित्वं नोचेत्तथा तत्सदृशं करोति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के पास तीन प्रकार के वाहन चतुष्पद, सजीव और निर्जीव सुलभ होते हैं। राजा से मित्रता का भाव रखता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की कुण्डली में राजयोग रहने पर उसे राजा कहना चाहिए।

राजयोग के अभाव में मनुष्य राजा के समान तो होता ही है।

पंचम भावस्थ गुरुदशा फल कथन

पंचमस्थगुरोर्दाये मन्त्रोपास्त महत्सुखम्।
सुताप्तिं राजपूजां च वेदान्तश्रवणादिकम्।। सप्तमभावस्थ गुरुदशा फल कथन

कलत्रराशिस्थितजीवदाये दारार्थपुत्रार्थसुखं प्रयाति।
विदेशयानं समरे जयं च ध्यानं परब्रह्माणि पुण्यकर्म।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य पत्नि, पुत्र, धन आदि का सुख प्राप्त करता है। विदेश की यात्रा पर भी जाता है। युद्ध में विजयी होता है। परब्रह्म का ध्यान भी करता है। वह पुण्य लाभ के उपाय भी करता है।

दशमभावस्थ गुरु दशा फल कथन

कर्मस्थितस्यापि गुरोर्विपाके राज्याप्तिमाहुर्मुनयस्तदानीम्।
भूपालयोगे त्वथ वार्थपुत्रकलत्रसत्कर्मसुराजयोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि दशम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राज्य की प्राप्ति करता है। ऐसा मुनिजनों ने कहा है। लेकिन उसकी कुण्डली में राजयोग होना चाहिए। अन्यथा ऐसे में धन, पुत्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, शुभकार्य सम्पादन, राजा की प्रसन्नता आदि बिना राजयोग के भी होते ही हैं।

मूलत्रिकोण राशि गत शनि दशाफल कथन

लग्नभावस्थ शनि दशा फल कथन

लग्नस्थितशनेर्दाये देहकृच्छ्रमुपैति च।
स्थानच्युतिं प्रवासं च राजकोपं शिरोरुजम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शारीरिक कष्ट से परेशान रहता है। उसे स्थान-पद से च्युत होना पड़ता हैं। परदेश में प्रवास करना पड़ता है। राजकीय कोप का भाजन भी होना पड़ता है। शिर में रोग होता है।

चतुर्थभावस्थ शनि दशा फल कथन

चतुर्थस्थशनेर्दाये मातृतद्वर्गनाशनम्।
गृहदाहं पदभ्रंशं चौरार्ति नृपपीडनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की माता या मातृवर्ग में आने वाली स्त्रियों जैसे मौसी, दीदी, चाची आदि से सम्बन्धित हानि

होती है। घर में आग लग जाती है। पद से हटना पड़ जाता है। चोर, राजा आदि से पीड़ा व भय की प्राप्ति होती है।

सप्तम भावस्थ शनि दशा फल कथन

दारराशिगतस्यापि शनेर्दायेऽरिपीडनम्।
मूत्रकृच्छ्रं महाद्वेषं स्त्रीहेतोर्मरणं च वा।।

जिस किसी की कुण्डली मेंर शदि यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शत्रु से उत्पीड़ित होता है। मूत्ररोग के साथ अतिद्वेष उत्पन्न होता है। अथवा स्त्री के कारण मृत्यु वरण करना पड़ता है।

दशम भावस्थ शनि दशाफल कथन

दशमस्थशनेर्दाये कर्मनाशमुपैति च।
देशान्तरं पदभ्रंशं निगडं राजपीडनम्।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि दशम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के कर्म की हानि होती है। देशान्तर में भटकता है। पद से हटना पड़ता है। जेल भी जाना पड़ता है। राजकीय पीड़ा के कारण उत्पन्न होता है।

द्वितीयभावस्थ शनि दशा फल कथन

द्वितीयस्थशनेर्दाये वित्तनाशमथाक्षिरुक्।
राजकोपं मनस्तापमन्नद्वेषं मनोरुजम्।।

वैशेषिकाश युक्त शनि दशा फल कथन

वैशेषिकांशरांयुक्तः शनिः सौख्यं करोति च।
विशेषाद्राजसन्मानं विचित्राम्बरपूषणम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि वैशेषिकांश में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सौख्य युक्त होता है। विशेष रूप से सजकीय सन्मान उसे प्राप्त होता है। अनेक रंग से युक्त वस्त्र और आभूषण आदि का सुख भी मिलता है।

क्रूरद्रेष्काणगत शनि दशा फल कथन

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तशनिदाये महद्भयम्।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं नृपचौराग्निजं भयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि पाप द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय से ग्रसित रहता है। उसे फाँसी का भय, विष से भय तथा राजा, चोर, अग्नि आदि से

भी भय रहता है।।134।।

नीचराशि-उच्चनवांशस्थ शनि दशा फल कथन

नीचराशिगतो मन्दः स्वोच्चांशकसमन्वितः।
दशादौ दुःखमापाद्य दशान्ते सुखदो भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी नीच राशि (मेष) में होकर अपने उच्च (तुला राशि) नवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उस दशा के आदि काल में दुःखग्रस्त होता है, लेकिन उसी दशा के अन्तकाल में सुख सम्पन्न हो जाता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ शनि दशा फल कथन

उच्चराशिगतो मन्दो नीचांशकसमन्वितः।
दशादौ सुखमापाद्य दशान्ते कष्टदो भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी उच्चराशि (तुला) में होकर नीच (मेष) नवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उस दशा के आदि में सुख पाता है और उसी दशा के अन्तसमय में कष्ट की प्राप्ति भी करता है।

बुध दशा फल कथन

लग्नस्थ बुध दशा फल कथन

लग्नं गतस्य च दशा शशिनन्दनस्य भूपालमानकृषिवाहनलब्धभाग्यम्।
भेरीरवादिपरिघोषितयानमार्गं तीर्थाभिषेकमथ वा जगति प्रसिद्धिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि बुध लग्न भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से सम्मान प्राप्त करता है। कृषि, वाहन के साथ भाग्योपलब्धि के अवसर सुलभ होते हैं। तुरही, मृदङ्ग आदि की ध्वनि से गु...यमान वाहन से मार्ग पर चलने का अवसर प्राप्त होता है। तीर्थ में स्नान करने का अवसर भी सुलभ होता है। वह प्रायः संसार में प्रसिद्धि की प्राप्ति भी करने में सफल होता है।

द्वितीय भावस्थ बुध दशा फल कथन

वित्तगसौम्यदशायां विद्याप्राप्तिं महत्त्वकीर्तिं च।
भूपतिभाग्यसमानां राजस्थाने प्रधानतां याति।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि द्वितीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विद्या-ज्ञान की प्राप्ति होती है। बहुत कीर्ति भी मिलती है। राजा के समान भाग्य प्राप्त करता है। राजा के दरबार में भी उसको श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफलता मिलती है।

तृतीय भावस्थ बुध दशा फल कथन

तृतीयराशिस्थितचन्द्रसूनोर्दशाविपाके जडतां समेति।
उद्गानमाजीवनगुल्मरोगमन्नार्तियोगे नृपमाननं च।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि तृतीयर भावस्थ हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य जड़ता या मूर्खता का प्रदर्शन करता है। गीत-गायन से आजीविका चलाता हैं। गुल्म रोगी होता है। अन्न से भी पीड़ा मिलती है; परन्तु राजा से सम्मान की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ भावस्थ बुधदशा फल कथन

शशाङ्कसूनोर्हिबुकस्थितस्य दशा प्रपन्ना गृहधान्यनाशम्।
सौख्यादिहानिं हिबुके समृत्युमुद्योगभङंग च पदच्युतिं वा।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य गृह या घर और अन्न सम्बन्धी जटिलतायें उत्पन्न होती हैं। सुख-सौविध्य आदि का अभाव-सा रहता है। उसके माता को भी कष्ट सहना पड़ता है। अथवा मृत्यु होती है। उद्योग या प्रयास असफल होता है। अथवा पद-प्रतिष्ठा की हानि भी उठानी पड़ती है।

पंचमभावस्थ बुध दशा फल कथन

पंचमस्थशशिनन्दनस्य वा क्रूरबुद्धिरतिकष्टता भवेत्।
हीनवृत्तिरपि राजसेवया कृच्छ्रलब्धधनमेति सम्पदम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि पंचम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य में क्रूर या कठोर बुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। अत्यधिक कष्ट सहन करना पड़ता है। निन्दित कार्यों से आजीविका चलती है। उसे राजा की सेवा से भी बहुत परेशानी के साथ कुछ धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टम-द्वादश भावस्थ बुध दशा फल कथन

षष्ठाष्टमान्त्यस्थितसौम्यदाये त्वग्दोषजातं बहुरोगमेति।
विचर्चिका पैत्तिक पाण्डुरोगं नृपाग्निचौरैर्मरणं कृशत्वम्।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि षष्ठभाव या अष्टमभाव या द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को चर्मरोग के प्रकोप का शिकार होना पड़ता है। वमन-उल्टि भी होती है। पित्त विकृति जन्य पाण्डुरोग हो जाता है। राजा, अग्नि, चोर आदि से भय की प्राप्ति होती है। शारीरिक दुर्बलता अथवा मृत्यु भी होती है।

द्वादशभावस्थ बुध दशा का विशेष फल कथन

देहाङ्गवैकल्यकलत्रबन्धुविद्वेषणं भूपतिदत्तकोपम्।
आकस्मिकं मृत्युभयं प्रसादं रिष्फस्थितस्यापि शशाङ्कसूनोः।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि द्वादश भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय उपरोक्त के साथ मनुष्य को शारीरिक अंगों में विकलता के कारण प्राप्त हो जाते हैं। स्त्री और बन्धुओं से विरोध का सामना भी करना पड़ता है। राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। आकस्मिक मृत्यु का भय उत्पन्न होने से मानसिक उन्मत्तता भी आ जाती है।

लग्न भावस्थ केतुदशा फल कथन

लग्नकेन्द्रगतस्यापि केतोर्दाये महद्भयम्।
ज्वरातिसारमेहं च स्फोटकादिविषूचिकाः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि लग्न भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय का शिकार हो जाता है। उसे ज्वर, अतिसार, प्रमेह, फोड़ा-फुन्सी स्फोट का रोग, विषूचिका (हैजा जैसी संक्रामक) रोग भी होता है।

धनभावस्थ केतु दशा फल कथन

धनराशिगतस्यापि केतोर्दाये धनक्षयम्।
वाक्पारुष्यं मनोदुःखं कुत्सितान्नं मनोरुजम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि द्वितीय (धन) भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनहानि सहन करना पड़ता है। वाणी भी कठोर बोलता है। मानसिक दुःख भी मिलता है। अखाद्य अन्न ग्रहण करता है। मनोरोग का शिकार होता है।

तृतीय भावस्थ केतु दशा फल कथन

तृतीयराशिगस्यापि केतोर्दाये महत्सुखम्।
मनोवैकल्यमायाति भ्रातृभिर्द्वेषणं परम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि तृतीय भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक सुख प्राप्त होता है। मन की विकलता आती है। भाईयों से निश्चय ही बहुत अधिक द्वेष (शत्रुता) उत्पन्न हो जाता है।

चतुर्थ भावस्थ केतु दशा फल कथन

चतुर्थराशिगस्यापि केतोर्दाये सुखक्षयम्।
प्रभग्नदारपुत्रादिगृहे धान्यप्रहर्षितः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय

मनुष्य को सुख के अवसरों की कमी होती है। स्त्री, पुत्र आदि से अलग रहना पड़ता है। उसके घर में अन्न पर्याप्त उपलब्ध होता है।

पंचमभावस्थ केतुदशा फल कथन

पंचमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले सुतक्षयम्।
बुद्धिभ्रमं विशेषेण राजकोपं धनक्षयम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि पंचमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को पुत्र की हानि होती है। उसे बुद्धि भ्रम भी उत्पन्न हो जाता है। विशेष रूप से उसे राजा के कोप का भाजन भी होना पड़ता है। धनक्षय की पीड़ा भी होती है।

शुक्र ग्रह दशा फल -

त्रिकोणस्थ शुक्र दशा फल कथन

त्रित्रिकोणगतः शुक्रः करोति नृपपूज्यताम्।
यज्ञकर्मादिलाभं च गुरुपित्रोः सुखं यशः।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि त्रि-त्रिकोण अर्थात् नवम भाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य राजा से सम्मानित होता है। यज्ञकर्म-अनुष्ठान आदि के लाभ का मार्ग प्रशस्त होता है। उसे गुरु, माता-पिता आदि का सुख प्राप्त होता है। वश भी मिलता है।

उच्चराशि नीचनवांशस्थ शुक्र दशा फल कथन

उच्चक्षेत्रेऽपि नीचांशयुक्तः शुक्रोऽतिकष्टदः।
करोति राज्यनाशं च स्थाननाशमथापि वा।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि उच्चराशि में होकर नीच नवांश हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अत्यधिक कष्ट प्राप्त करता है। राज्य भी उसका छिन्न-भिन्न हो जाता है अथवा उसके स्थान या पद-प्रतिष्ठा की हानि होती है।

नीचराशि-उच्चनवांशस्थ शुक्र दशा फल कथन

उच्चांशयुक्तशुक्रोऽपि नीचराशिसमन्वितः।
कृषिगोभूमिवाणिज्यं धनधान्यविवर्द्धनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि नीचराशि में होकर उच्चनवांश में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के कृषि, गोधन, भूमि, व्यापार व अन्न आदि पक्ष में अभिवृद्धि होती है।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र के अनुसार प्रत्यन्तर्दशा फल -

सूर्यान्तर्दशा में सूर्यादि प्रत्यन्तर्दशा फल

विवादो वित्तहानिश्च दारार्तिः शिरसि व्यथा।
रव्यन्तरे बधैर्ज्ञेयं तस्य प्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्य की अन्तरर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा हो तो उस समय जातक को लोगों से वाद-विवाद, धनहानि, स्त्री को कष्ट एवं मस्तक में पीडा होती है।

यदि सूर्य स्वोच्च में, स्वगृह में, केन्द्र, त्रिकोण, शुभग्रह से युत या दृष्ट, शुभवर्ग में स्थित लग्नेश, भाग्येश, कर्मेश से युत और अन्यत्रा भी शुभ स्थान में बैठा हो तो पूर्वोक्त अशुभफल नहीं देता।

सूर्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रादि की प्रत्यन्तर्दशा का फल -

सूर्यान्तर्दशा उद्वेगः कलहश्चैव वित्ताहानिर्मनोव्यथा।
रव्यन्तरे विजानीयात् चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा हो तो उद्वेग, कलह, धननाश एवं मानसिक व्यथा होती है।

सूर्यान्तर्दशा में भौमादि प्रत्यन्तर्दशा फल -

राजभीतिः शस्त्रभतिर्बन्धनं बहुसंकटम्।
शत्रुवह्निकृता पीडा कुजप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में मंगल की प्रत्यन्तर दशा हो तो राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, विभिन्न प्रकार के शंकट और शत्रु और अग्नि से पीड़ा होती है।

सूर्यान्तर में राहु की प्रत्यन्तर दशा फल -

श्लेष्मव्याधिः शस्त्रभीतिर्धनहानिर्महद्भयम्।
राजभंगस्तथा त्रासो राहुप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में राहु की प्रत्यन्तर दशा हो तो कफसम्बन्धी रोगभय, शस्त्रभय, धननाश, राज्यनाश, और मानसिक त्रास हो जाता है।

सूर्यान्तर में गुरु की प्रत्यन्तर दशा फल -

शत्रुनाषो जयो वृद्धिर्वस्त्रहेमादिभूषणम्।
अश्वलायनादिलाभष्च गुरुप्रत्यन्तरे फलम्।।

सूर्यान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुनाश, विजय, वस्त्र, सुवर्ण, आभूषणादि की वृद्धि एवं अश्व-यानादि का लाभ होता है।

सूर्यान्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा फल

धनहानिः पशोः पीडा महाद्वेगो महारुजः।

अशुभं सर्वमाप्नोति शनिप्रत्यन्तरे जनः।।

सर्यान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो धनहानि, पशुओं में पीडा, उद्वेग, महारोग एवं सभी प्रकार से अशुभफल होता है।

सूर्यान्तर में बुध की प्रत्यन्तर दशा फल

विद्यालाभो बन्धुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः।

धर्मलाभो नृपात्पूजा बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

सूर्य के अन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो विद्यालाभ, बन्धुओं का संग, सुस्वादु भोजन की प्राप्ति, धनागम, धर्मलाभ एवं राजा से पूजित होता है।

सूर्यान्तर में केतु की प्रत्यन्तर दषा फल

प्राणभीतिर्महाहानि राजभीतिश्च विग्रहः।

शत्रूणांश्च महावादो केतोः प्रत्यन्तरे भेवत्।।

सूर्यान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो प्राणभय, अधिक हानि, राजभय, विग्रह एवं शत्रुओं के साथ वाद-विवाद होता है।

सूर्यान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा फल

दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह।

स्वल्पा च सुखसम्पत्तिः शुक्रप्रत्यन्तरे भवेत्।।

सूर्यान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा हो तो सुख और दुःख समान रूप से व्यतीत होता है। साथ ही स्वल्प लाभ, अल्प सुख एवं सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

चन्द्रमा के अन्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर दशा फल

भूभोज्यधनसम्प्राप्ती राजपूजा महत्सुखम्।

लाभश्चन्द्रान्तरे ज्ञेयं चन्द्रप्रत्यन्तरे फलम्

चन्द्रान्तर में चन्द्रमा की ही अन्तर दशा हो तो भूमि, भोज्य-वस्तु और धन की प्राप्ति होती है। साथ ही जातक राजा से पूजित होता है एवं उसे परम सुख की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में भौम प्रत्यन्तर दशा फल

मतिवृद्धिर्महापूज्यः सुखं बन्धुजनैः सह।

धनागमः शत्रुभयं कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि में वृद्धि, लोक में मान, स्वबन्धुओं सहित सुख, धनागम

और शत्रुभय रहता है।

चन्द्रान्तर में राहु प्रत्यन्तर दशा फल

भवेत्कल्याणसम्पत्ती राजवित्तसमागमः।
अशुभैरल्पमृत्युष्च राहु प्रत्यन्तरे द्विज!।।

चन्द्रान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो कल्याण, राजकीय धनागम एवं यदि ग्रहों से युत हो तो अपमृत्यु का भय रहता है।

चन्द्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा फल

वस्त्रलाभो महातेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः।
राज्यालंकरणावाप्तिर्गुरुप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो वस्त्रलाभ, प्रभावशाली गुरु सद्गुरु से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति एवं राज्य तथा अलंकार की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर दशा फल

दुर्दिने लभते पीडां वातपित्ताद्विषेषतः।
धनधान्ययशोहानिः शनिप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो वात और पित्त सम्बन्धी रोग से दुर्दिन का अनुभव एवं धनधान्य और यश की हानि होती है।

चन्द्रान्तर में बुध प्रत्यन्तर दशा फल

पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्यालाभो मनोन्नतिः।
शुक्लवस्त्रान्नलाभष्च बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो पुत्र जन्म, अश्व की प्राप्ति, विद्या का लाभ उन्नति, श्वेत वस्त्रा और अन्न की प्राप्ति होती है।

चन्द्रान्तर में केतु प्रत्यन्तर दषा फल

ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः।
सर्वत्र जायते क्लेषः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

चन्द्रान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो ब्राह्मणों के साथ कलह, अपमृत्यु का भय, सुख की हानि एवं सभी जगहों पर कष्ट होता है।

चन्द्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तरदशा फल -

धनलाभो महत्सौख्यं कन्याजन्म सुभोजनम्।

प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यो भृगुप्रत्यन्तरे विधोः।।

चन्द्रान्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर दशा हो तो धनलाभ, पूर्ण सौख्य, कन्या का जन्म, सुभोजन और लोगों में प्रेम रहता है।

चन्द्रान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर फल

अन्नागमो वस्त्रालाभः शत्रुहानि सुखगमः।
सर्वत्र विनयप्राप्तिः सूर्यप्रत्यन्तरे विधोः।।

चन्द्रान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो अन्न का लाभ, वस्त्र का लाभ, शत्रु की हानि, सुख एवं सभी जगह पर विजय प्राप्त होती है।

भौमान्तर में भौम प्रत्यन्तर दशा फल

शत्रुभीतिं कलिं घोरं रक्तस्रावं मृतेर्भयम्।
कुजस्यान्तर्दषायां च कुजप्रत्यन्तरे वदेत्।।

भौमान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुभय, भयंकर कलह एवं रक्तविकार के कारण अपमृत्यु की सम्भावना रहती है।

भौम में राहु प्रत्यन्तर्दशा फल

बन्धनं राजभंगश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहः शत्रुभिर्नित्यं राहु प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, राज्य एवं धन का नाश, कुभोजन कलह और शत्रु का भय रहता है।

भौमान्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा फल

मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिविभ्रम, दुःख का सन्ताप, कलह एवं समस्त वांछित कार्य असफल होते हैं।

भौमान्तर में शनि का प्रत्यन्तर का फल

स्वामिनाषस्तथा पीडा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो स्वामी का नाश, पीडा, धननाश, महाभय, विफलता और कलह का त्रास होता है।

भौमान्तर में बुध का प्रत्यन्तर दशा फल

सर्वथा बुद्धिनाषष्च धनहानिर्ज्वरस्तनौ।
वस्त्रान्नसुहृदां नाषो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि का भ्रम, धन की हानि, शरीर में ज्वर, वस्त्र, अन्न और **मित्रों का नाश होता है।**

भौमान्तर में केतु प्रत्यन्तर दशा का फल

आलस्यं च शिरः पीडा पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राजभीतिः शस्त्राघातो केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौम के अन्तर केतु का प्रत्यन्तर हो तो आलस्य, मस्तक में पीडा, पाप, रोग से कष्ट, अपमृत्यु, राजभय एवं शस्त्रघात आदि होता है।

भौमान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर दशा फल

चाण्डालात्संकटास्त्रासो राजशस्त्रभयं भवेत्।
अतिसारोऽथ वमनं भृगो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो चाण्डाल जाति से संकट, त्रास, राजभय तथा शस्त्रभय एवं अतिसार तथा वमन रोग होता है

भौमान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर दशा फल

भूमिलाभोऽर्थसम्पतिः सन्तोषो मित्रासंगतिः।
सर्वत्र सुखमाप्नोति रवेः प्रत्यन्तरे जनः।।

भौमान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो भूमि, धन, सम्पत्ति की वृद्धि, सन्तोष, मित्रों का समागम और सभी का प्रकार से सुख की प्राप्ति होती है।

भौमान्तर में चन्द्रप्रत्यन्तर दशा फल

याम्यां दिषि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम्।
संसिद्धि सर्वकार्याणां विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

भौमान्तर में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर हो तो दक्षिण दिशा से स का
फेद वस्त्र तथा आभूषण का लाभ एवं समस्त कार्यों की होती है।

राहु के अन्तर में राहु के प्रत्यन्तर फल

बन्धनं बहुधा रोगो बहुघातः सुहृद्भयम्।
राह्वान्तरदषायां च ज्ञेयं राह्वान्तरे फलम्।।

राहु के अन्तर में राहु का ही प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, विभिन्न रोगों से आघात एवं मित्रों का भय रहता है।

राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर फल

सर्वत्र लभते मानं गजाष्वं च धनागमम्।
राहोरन्तर्दषायां च गुरोः प्रत्यन्तरे जनः।।

राहु के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो सर्वत्र मान प्रतिष्ठा, अश्व हाथी आदि वाहन तथा धन का लाभ होता है।

राहु के अन्तर में शनि के प्रत्यन्तर फल

बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च षनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो भयंकर बन्धन, सुख की हानि, महान् भय, विपक्षियों से त्रास और वातरोग होता है।

राहु के अन्तर में बुध के प्रत्यन्तर फल

सर्वत्र बहुधा लाभः स्त्रीसंगाच्च विषेषतः।
परदेषभवा सिद्धिर्बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो सभी कार्यों में सफलता, विशेषकरके स्त्री से लाभ औश्र वैदेशिक कार्य की सिद्धि होती है।

राहु के अन्तर में केतु के प्रत्यन्तर फल

बुद्धिनाषो भयं विघ्नो धनहानिर्महद्भयम्।
सर्वत्रा कलहाद्वेगौ केतोः प्रत्यन्तरे फलम्।।

राहु में केतु का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, भय, कार्यों में विघ्न, धनहानि, सर्वत्रा कलह और उद्वेग होता है।

राहु की अन्तर्दशा मैं शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा फल

योबिनीभ्यो भयं भूयादष्वहानिः कुभोजनम्।
स्त्रीनाषः कुलजं शोकं शुक्र प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो योगिनिय से भय, अश्व की हानि, कुभोजन, स्त्री नाश और अपने वंश में शोक होता है।

राहु के अन्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर फल

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम्।

अल्पमृत्युः प्रमादष्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में प्रत्यन्तर हो तो ज्वर, परम भय, पुत्र-पौत्रों को पीडा, अपमृत्यु और प्रमाद होता है।

राहु के अन्तर में चन्द्रादि प्रत्यन्तर फल

उद्वेगकलहौ चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।

पितुर्विकलता देहे विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

राहु के अन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो उद्वेग और कलह, चिन्ता, माननाश, भय और पिता के शरीर में कष्ट होता है।

राहु के अन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

भगन्दरकृता पीडा रक्तपित्तपीड़नम्।

अर्थहानिर्महोद्वेगः कुजप्रत्यन्तरे फलम्।।

राहु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो भगन्द रोग से पीडा, रक्त-पित्त सम्बन्धी व्याधि, धननाश और उद्वेग होता है।

गुरु के अन्तर में गुरु आदि का प्रत्यन्तर का दशा फल

हेमलाभो धान्यवृद्धिः कल्याणं सुफलोदयः।

गुरोरन्तर्दषायां च भवेद् गुर्वन्तरे फलम्।।

गुरु के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो सुवर्णलाभ, धान्यवृद्धि, कल्याण, भाग्योदय और सुखादि की प्राप्ति होती है।

गुरु के अन्तर में शन्यादि का प्रत्यन्तर फल

गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्र सुखसाधनम्।

संग्रहो ह्यन्नपानादेः शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर में शनि की प्रत्यन्तर दशा हो तो गौ, भूमि, अश्व लाभ एवं अन्न-पानादि के संचय से सुखानुभव होता है।

गुरु के अन्तर में बुधादि प्रत्यन्तर का फल

विद्यालाभो वस्त्रलाभे ज्ञानलाभः समौक्तिकः।

सुहृदां संगमः स्नेहो बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर म बुध का प्रत्यन्तर हो तो विद्या, वस्त्र, ज्ञान, रत्न लाभ, मित्रों का समागम और स्नेह होता है।

गुरु के अन्तर में केतु का प्रत्यन्तर फल

जलभीतिस्तथा चौर्यं बन्धनं कलहो भवेत्।
अपमृत्युर्भयं घोरं केतोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

गुरु के अन्तर मं केतु का प्रत्यन्तर हो तो जल से भय, चोर, बन्धन, कलह और भयंकर अपमृत्यु का भय रहता है।

गुरु के अन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

नानाविद्यार्थसम्प्राप्तिर्हेमवस्त्रविभूषणम्।
लभते क्षेमसन्तोषं भृगोः प्रत्यन्तरे जनः।।

गुरु के अन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो अनेक विद्या और ध्न की प्राप्ति, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण, क्षेम कल्याण और सन्तोष प्राप्त होता है।

गुरु के अन्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर का फल

नृपाल्लाभस्तथा मित्रात् पितृतो मातृतोऽपि वा।
सर्वत्र लभते पूजां रवेः प्रत्यन्तरे जनः।।

गुरु के अन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो राजा, मित्र, माता-पिता और अन्य सभी जगहों से लाभ एवं सभी जगहों से आदर प्राप्त होता है।

गुरु के अन्तर में चन्द्रादि प्रत्यन्तर दशा का फल

सर्वदुःखविमोक्षष्च मुक्तलाभो हयस्य च।
सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि विधोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

गुरु के अन्तर में चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा हो तो सभी आपत्तियों का निवारण, रत्न और अश्वसम्बन्धी वाहनों का लाभ तथा सभी कार्य में सफलता मिलति है।

गुरु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर फल

शस्त्रभतिर्गुदे पीडा वह्निमाद्यमूजीर्णता।
पीडा शत्रुकृता भूमिर्भौमप्रत्यन्तरे भवेत्।।

गुरु के अन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शस्त्रभय, गुदा मार्ग में पीडा, मन्दाग्नि, अजीर्णता और शत्रु से पीडा होती है।

गुरु के अन्तर में राहु प्रत्यन्तर दशा का फल

चाण्डालेन विरोधः स्याद् भयं तेभ्यो धनक्षतिः।

कष्टं जीवान्तरे ज्ञेयं राहोः प्रत्यन्तरे ध्रुवम्।।

गुरु के अन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो चाण्डाल जाति से विरोध, उनके द्वारा ही भय, धननाश आर कष्ट होता है।

शन्यन्तर में शन्यादि प्रत्यन्तर का फल

देहपीडा कलेर्भीतिर्भयमन्त्सजलोकतः।

दुःख शन्यन्तरे नाना शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में शनि का ही प्रत्यन्तर हो तो शारीरिक पीडा, कलह, अन्त्यज (नीच) लोगें से भय एवं विभिन्न प्रकार के दुःख होते हैं।

शन्यन्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिनाषः कलेर्भीतिरन्नपानादिहानिकृत।

धनहानिर्भयं शत्रोः शनेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, कलह, भय, भोजनादि की चिन्ता, धननाश और अपने विपक्षियों से भय रहता है।

शन्यन्तर में केतु प्रत्यन्तर दशा का फल

बन्धः शत्रोर्गृहे जातो वर्णहानिर्बहुक्षुधा।

चित्ते चिन्ता भयं त्रासः केतोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में केतु की प्रत्यन्तर दशा हो तो शत्रु के गृह में बन्धन, छवि-हानि, अधिक क्षुधा, हृदय में चिन्ता, भय और त्रास होता है।

शन्यन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर दशा कां फल

चिन्तितं फलितं वस्तुकल्याणं स्वजने सदा।

मनुष्यकृतितो लाभः भृगोः प्रत्यन्तरे द्विज!।।

हे द्विज! शन्यन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो अभीष्ट कार्य में सफलता, अपने जनों का कल्याण एवं मानविक कार्य से लाभ होता है।

शन्यन्तर में सूर्य प्रत्यन्तर दशा का फल

राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।

ज्वरादिव्याधिपीडा च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो राजा से अधिकार की प्रप्ति, परन्तु अपने गृह में कलह और

ज्वरादि रोग से पीडा होती है

शन्यन्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजा बहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं भोगो विधोः प्रत्यन्तरे शनौ।।

शन्यन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो प्रखर बुद्धि, बडे कार्य का आरम्भ, तेज में मन्दता, अधिक व्यय और अधिक स्त्रियों के साथ समागम होता है।

शन्यन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

तेजोहानिः पुत्रघातो वह्निभीती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीडा कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो प्रभाव में न्यूनता, पुत्र को आघात, अग्नि और शत्रु का भय, वायु तथा पित्त से पीडा होती है।

शन्यन्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

धननाषो वस्त्रहानिर्भूमिनाषो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युः राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शन्यन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो धन, वस्त्र तथा भूमि का नाश, भय देशान्तर में भ्रमण तथा मृत्यु का भय रहता है।

शन्यन्तर में गुरु प्रत्यन्तर दशा का फल

गृहेषु स्वीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथ वा कलिमुद्वेगं गुरोः प्रत्यन्तरे वदेत्।।

शनि के अन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री द्वारा की गई अकर्मण्यता को रोकने में असमर्थता तथा कलह और उद्वेग होता है।

बुधान्तर में बुधादि प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिर्विद्यालाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
बुधस्यान्तर्दषायां च बुधप्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में बुध की प्रत्यन्तर दशा हो तो बुद्धि, विद्या और धन का लाभ, वस्त्र की प्राप्ति एवं परम सुख होता है।

बुधान्तर में केतु प्रत्यन्तर का फल

कठिनान्नस्य सम्प्राप्तिरूदरे रोगसम्भवः।

कामलं रक्तपित्तं च केतो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो कुभोजन, उदर सम्बन्धी रोग की सम्भावना, नेत्र-सम्बन्धी व्याधि एवं रक्त और पित्तविकार होता है।

बुधान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पादात्।
अधिकारो नृपागारो भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो उत्तरदिशा से लाभ, पशुओं से हानि एवं राजगृह में अधिकार की प्राप्ति होती है।

बुधान्तर में सूर्यादि प्रत्यन्तर का फल

तेजोहानिर्भवेद्रोगस्तनुपीडा यदा कदा।
जायते चित्तवैकल्यं रवेः प्रत्यन्तरे बुधे।।

बुधान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो प्रभाव की हानि, रोग का आक्रमण एव मानकि अशान्ति होती है।

बुधान्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

स्त्रीलाभष्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महद्धनम्।
लभते सर्वतः सौख्यं विधोः प्रत्यन्तरे जनः।।

बुधान्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री, धन, सम्पत्ति का लाभ, कन्या की प्राप्ति एवं सभी तरह से सुख होता है।

बुधान्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

धर्मधीधनसम्प्राप्तिष्चौराग्न्यादिप्रपीडनम्।
रक्तवस्त्रं शस्त्रघातः भौमप्रत्यन्तरे भवत्।।

बुधान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो धर्म, बुद्धि तथा धन की प्राप्ति, चोर अग्नि द्वारा पीडा, रक्तवस्त्र का लाभ एवं शस्त्र से आघात का भय रहता है।

बुधान्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः।
राजशस्त्रकृता भीतिः राहोः प्रत्यन्तरे द्विजः।।

हे द्विज! बुधान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो कलह और स्त्री से अकारण भय तथा राजा और शस्त्र से भय रहता है।

बुधान्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

राज्यं राजाधिकारो वा पूजा राजसमुद्भवा।

विद्याबुद्धिसमृद्धिष्च गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

बुधान्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो राज्यलाभ, राजाधिकारी तथा राजा से सम्मान एवं विद्या, बुद्धि की समृद्धि होती है

बुधान्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

वातपित्तमहापीडा देहघातसमुद्भवा।

धननाषमवाप्नोति शनेः प्रत्यन्तरे जनः।।

बुधान्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो वायु तथा पित्त सम्बन्धी रोग, शरीर में आघात और धन का क्षय होता है।

केत्वन्तर में केतु प्रत्यन्तर का फल

आपत्समुद्भवोऽकस्माद् देषान्तरसमागमः।

केत्वन्तरेऽर्थहानिष्च केतो प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो अकस्मात आपत्ति, देशान्तर में भ्रमण और धननाश होता है।

केत्वन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

म्लेच्छभीरर्थनाषो वा नेत्ररोगः षिरोव्यथा।

हानिश्चतुष्पदानां च भृगोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो यवनों से भय, धननाश, नेत्ररोग, शिर में पीडा और चौपायों की हानि होती है।

केत्वन्तर में सूर्य प्रत्यन्तर का फल

मित्रैः सह विरोधष्च स्वल्पमृत्युः पराजयः।

मतिभ्रंषो विवादष्च रवेः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो अपने मित्रों के साथ विरोध, अकाल मृत्यु, पराजय, बुद्धिभ्रंश और विवाद हाता है।

केत्वन्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

अन्ननाषो यषोहानिर्देहपीडा मतिभ्रमः।

आमवातादि वृद्धिष्च विधोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो अन्ननाश, कीर्ति में आघात, शारीरिक पीडा, मतिभ्रम एवं आँव तथा वायु सम्बन्धी रोग की वृद्धि होती है।

केत्वन्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया।
नीचाद् भीती रिपोः शंका कुजप्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो शस्त्रघात, पतन का भय, अग्नि से भय एवं नीच जनों और शत्रुओं से भय रहता है।

केत्वन्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

कामिनीभ्यो भयं भूयात्तथा वैरिसमुद्भवः।
क्षुद्रादपि भवेद् भीती राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री और विपक्षियों से भय एवं क्षुद्र जनों से भी भय का आभास रहता है।

केत्वन्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

धनहानिर्महोत्पातो शस्त्रमित्रविनाषनम्।
सर्वत्र लभते क्लेषं गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

केत्वन्तर में गुरु का प्रत्यन्तर हो तो धन एवं मित्र का विनाश, शस्त्र से महा उत्पात, और सभी जगहों से कष्ट होता है।

केत्वन्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः।
स्वल्पाल्पलाभकरणं शनेः प्रत्यन्तरे फलम्।।

केत्वन्तर में शनि का प्रत्यन्तर हो तो गौ-महिष्यादि पशु और मित्रों का मरण, शरीरिक पीडा और अत्यन्त अल्प लाभ होता है।

केत्वन्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत ज्ञस्य प्रत्यन्तरे फलम्।।

केत्वन्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो बुद्धिनाश, उद्वेग, विद्या की हानि भय और कार्य विफल होते हैं।

शुक्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर का फल

श्वेताष्च-वस्त्र-मुक्ताद्यं दिव्यस्त्रीसंगजं सुखम्।
लभते शुक्रान्तरे प्राप्ते शुक्रप्रत्यन्तरे जनः।।

शुक्रान्तर म शुक्र का प्रत्यन्तर हो तो सफेद वस्त्र, अश्व, मोती आदि रत्न और सुन्दर स्त्री से संगम होता है।

शुक्रान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर का फल

वातज्वरः षिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभोऽपि रवेः प्रत्यन्तरे फलम्।।

शुक्रान्तर में सूर्य का प्रत्यन्तर हो तो वातज्वर, मस्तक में पीडा, राजा और शत्रु से भी पीडा तथा व्यवसाय में अल्प लाभ होता है।

शुक्रान्तर में चन्द्र प्रत्यन्तर का फल

कन्याजन्म नृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः।
राज्याधिकारसम्प्राप्तिः चन्द्रप्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो कन्या की प्राप्ति, राजा से वस्त्रा-आभूषणादि कर प्राप्ति और राज्याधिकार प्राप्त होता है।

शुक्रान्तर में भौम प्रत्यन्तर का फल

रक्तपित्तादिरोगष्च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेषो भवेदत्रा कुजप्रत्यन्तरे द्विज!।।

शुक्रान्तर में भौम का प्रत्यन्तर हो तो रक्त और पित्त सम्बन्धी रोग, कलह ताडन और महान कष्ट होता है।

शुक्रान्तर में राहु प्रत्यन्तर का फल

क्लहो जायते स्त्रीभिरकस्माद् भयसम्भवः।
राजतः शत्रुतः परडा राहोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में राहु का प्रत्यन्तर हो तो स्त्री से कलह, अकस्मात् भय एवं राजा और शत्रु से पीडा होती है।

शुक्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर का फल

महद् द्रव्यं महद्राज्यं वस्त्रमुक्तादिभूषणम्।
गजाष्वादिपदप्राप्तिः गुरोः प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में गुरु प्रत्यन्तर हो तो द्रव्य, राज्य, वस्त्र, मोती, आभूषण, हाथी, अश्व, वाहन आदि का लाभ होता है।

शुक्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर का फल

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लोहमाषतिलादिकम्।
लभते स्वल्पपीडादि शनेः प्रत्यन्तरे जनः।।

शुक्रान्तर में शनि प्रत्यन्तर हो तो गदहा, उष्ट्र, छाग की प्राप्ति, लोहा, माष, तिल आदि से लाभ और कुछ पीडा भी होती है।

शुक्रान्तर में बुध प्रत्यन्तर का फल

धनज्ञानमहल्लाभो राजराज्याधिकारिता।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि ज्ञस्य प्रत्यन्तरे भवेत्।।

शुक्रान्तर में बुध का प्रत्यन्तर हो तो धन, ज्ञान, महान लाभ, राजा से अधिकार की प्राप्ति और दूसरे के निक्षेप धन का लाभ होता है।

अपमृत्युभयं ज्ञेयं देषाद्देषान्तरागमः।
लाभोऽपि जायते मध्ये केतोः प्रत्यन्तरे द्विजः!।।

शुक्रान्तर में केतु का प्रत्यन्तर हो तो अपमृत्यु का भय एवं देश-विदेश में भ्रमण होता है, साथ ही बीच-बीच म आर्थिक लाभ भी होता है।

बोध प्रश्न –

1. सूर्य की प्रारम्भिक अवस्था का दशा फल क्या है।
   क. सुख प्राप्ति ख. दु:ख प्राप्ति ग. हानि घ. लाभ
2. षष्ठ भाव का सूर्य का दशा फल क्या है।
   क. धन प्राप्ति ख. धन हानि ग. स्थिर लक्ष्मी घ. देशाटन
3. सूर्य में सूर्य का प्रत्यन्तर चल रहा हो तो क्या फल होगा।
   क. वाद-विवाद ख. धन हानि ग. शत्रु भय घ. उपर्युक्त सभी
4. चन्द्र में चन्द्र का प्रत्यन्तर हो तो फल –
   क. भूमि प्राप्ति ख. धन की प्राप्ति ग. भूमि एवं धन की हानि घ. कोई नहीं
5. भौम में राहु का प्रत्यन्तर का क्या फल है।
   क. बन्धन ख. भूमि ग. पत्नी प्राप्ति घ. पुत्र प्राप्ति
6. शनि में राहु का प्रत्यन्तर का फल क्या है।
   क. मृत्यु भय ख. पर्यटन ग. लक्ष्मी प्राप्ति घ. विवाह

3.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि फलादेश विचार के क्रम में अन्तर्दशा के पश्चात् और सूक्ष्म फल ज्ञान के लिए ऋषियों द्वारा प्रत्यन्तर्दशा फल का भी विचार किया गया है। इससे फलादेश कथन में और सूक्ष्म दृष्टि समाहित है। अत: इसका ज्ञान ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य ही करना चाहिए।

यद्यपि फलित ज्योतिष के समस्त ग्रन्थों में दशा विचार किया गया है। किन्तु सर्वाधिक दशा साधन अथवा उसके फलित पक्ष का विचार के दृष्टिकोण से 'वृहत्पराशरहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ प्रचलित है। इसके अतिरिक्त फलदीपिका, जातकपारिजात, सर्वार्थचिन्तामणि, लघुजातक, वृहज्जातक, जातकालंकार, ज्योतिष सर्वस्व, ज्योतिष रहस्य आदि विविध ग्रन्थों में फलादेश आदि कथन का सम्यकतया अध्ययन कर सकते हैं। सूर्य की अन्तरर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा हो तो उस समय जातक को लोगों से वाद-विवाद, धनहानि, स्त्री को कष्ट एवं मस्तक में पीडा होती है। यदि सूर्य स्वोच्च में, स्वगृह में, केन्द्र, त्रिकोण, शुभग्रह से युत या दृष्ट, शुभवर्ग में स्थित लग्नेश, भाग्येश, कर्मेश से युत और अन्यत्रा भी शुभ स्थान में बैठा हो तो पूर्वोक्त अशुभफल नहीं देता। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा का फल होता है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

सर्वाधिक – सबसे अधिक।

प्रत्यन्तर्दशा – अन्तर्दशा के मध्य प्रत्यन्तर्दशा होती है।

विविध – नाना प्रकार के

सम्यक् – अच्छी तरह से

लग्नेश – लग्न का स्वामी

शुभ ग्रह – बुध, शुक्र, पूर्णचन्द्र, गुरु

पाप ग्रह – सूर्य, मंगल, शनि, राहु एवं केतु

त्रिकोण – ५,९ भाव।

केन्द्र स्थान – १,४,७,१० भाव।

3.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. ख

2. ख

3. घ

4. ग

5. क

6. क

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची/ सहायक पाठ्यसामग्री

1. सर्वार्थचिन्तामणि - आचार्य वेंकटेश

2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ

3. वृहत्पराशरहोराशास्त्र – आचार्य पराशर

4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र

5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

6. फलदीपिका – आचार्य मन्त्रेश्वर

7. लघुजातक – वराहमिहिर

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूर्य में समस्त चन्द्रादि ग्रहों का प्रत्यन्तर फल लिखिये।

2. चन्द्रमा में सभी ग्रहों का प्रत्यन्तर दशा का फल लिखिये।

3. प्रत्यन्तर्दशा से आप क्या समझते है।

4. राहु में समस्त ग्रहों प्रत्यन्तर्दशा का महत्व बतलाइये।

5. केतु का द्वादश भावों में दशा फल लिखिये।

इकाई - 4 सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सूक्ष्मान्तर्दशा फल परिचय

4.4 सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार

4.4 सारांश

4.5 पारिभाषिक शब्दावली

4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.8 सहायक पाठ्यसामग्री

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई -607 चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार। इससे पूर्व आपने विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, प्रत्यन्तर्दशाओं का दशा फल को जान लिया है। अब आप सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार अध्ययन करने जा रहे है।

दशाओं के फलादेश की सूक्ष्मता में सूक्ष्मान्तर्दशा का ज्ञान ऋषियों द्वारा बतलाया गया है। जिसे प्रत्येक ज्योतिष के अध्येताओं को जानना चाहिए।

अत: आइए इस इकाई में हम लोग 'सूक्ष्मान्तर्दशा फल विचार' के बारे में हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से जानने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- सूक्ष्मान्तर्दशा दशा फल को परिभाषित कर सकेंगे।
- सूक्ष्मान्तर्दशा फल को समझा सकेंगे।
- सूक्ष्मान्तर्दशा फल का विचार कैसे किया जाता है। जान जायेगें।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों में सूक्ष्मान्तर्दशा दशा के फल क्या है। उसका विश्लेषण कर सकेंगे।

4.3 सूक्ष्मान्तर्दशा दशाफल परिचय

सूक्ष्म यथा नाम से ही स्पष्ट है कि जातक के उपर सूक्ष्म प्रकार की चलने वाली दशा। सूक्ष्मान्तर्दशा में जातक के उपर पड़ने वाले शुभाशुभ फलों का विवेचन विविध जातक ग्रन्थों के आधार पर यहाँ किया जा रहा है।

सर्वप्रथम सर्पपाश द्रेष्काणस्थ सूर्य दशा फल कथन

धुजङमत्र्यंशयुतस्य भानोर्दशाविपाके हि भयं विषाद्वा।
नृपाग्निपातित्यमनेकदु:खं पाशादिभृत्यंशयुतस्य चैवम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि सर्प द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विष से भय और राजा, अग्नि और पतित होने से अनेक प्रकार के दु:ख मिलते हैं। इसी तरह की फल पाश द्रेष्काणस्थ सूर्य की दशा में भी प्राप्त होता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

स्वोच्चस्थोऽपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानि:।

स्वकुलजबन्धुविरोधः पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि उच्चराशि में होकर नीचनवांश तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री व धन की हानि होती है। अपने ही कुल के बन्धुजनों से विरोध भी होता है। पिता, चाचा आदि से भी विरोध के कारण उत्पन्न होते हैं। ऐसा मुनियों का वचन है।

नीचराशि उच्चनवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

उच्चांशकयुतो भानुर्नीचस्थोऽपि महत्सुखम्।
करोति राज्यभारं च दशान्ते विपदं कृशाम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि नीच राशि में होकर उच्चनवांश मेष राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है। राज्य का अधिकार भी प्राप्त होता है, लेकिन दशा के अन्त में थोड़ी कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य सूक्ष्म दशा फल

निजभूमिपरित्यागो प्राणनाषभयं भवेत्।
स्थाननाषो महाहानिः निजसूक्ष्मगते रवौ।।

सूर्य के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो अपनी भूमि का त्याग मृत्यु का भय, स्थाननाश और सभी जगहों से हानि होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा फल

देवब्राह्मणभक्तिष्च नित्यकर्मरतस्तथा।
सुप्रीतिः सवैमित्रैष्च रवेः सूक्ष्मगते विधौ।।

सूर्य के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा सूक्ष्म दशा हो तो देव-ब्राह्मण में श्रद्धा, अपने कर्म में सदैव तत्पर और मित्रों में प्रेम रहता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा फल

क्रूरकर्मरतिस्तिग्मषत्रुभिः परिपीडनम्।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवेः सूक्ष्मगते कुजे।।

सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा में भौम की सूक्ष्म दशा में रहने पर कुकर्म में प्रवृति, निष्ठुर, शत्रुओं से पीडा और रक्तपात आदि रोग से जातक आक्रान्त रहता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा फल

चौराग्निविषभीतिष्च रणे भंग पराजयः।

दानधर्मादिहीनष्च रवेः सूक्ष्मगते राहौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा हो तो चोर, अग्नि और विष का भय, युद्ध में पराजय एवं दान-धर्मादि धार्मिक कृत्य में अवरोध होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा फल

नृपसत्काराराजार्हः सेवकैः परिपूजितः।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्यसूक्ष्मगते गुरौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से आदर, राज सेवकों द्वारा पूजित एवं राजा का कृपापात्र होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा फल

चौर्यसाहसकर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम्।
स्थानच्युतिं मनोदुःखं रवेः सूक्ष्मगते शनौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो चोरी और साहसिक कार्य से देवता और ब्राह्मणों को पीडा, उनके द्वारा स्थानत्याग और मानसिक व्यथा होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा फल

दिव्याम्बरादिलब्धिष्च दिव्यस्त्रीपरिभोगिता।
अचिन्तितार्थसिद्धिष्च रवेः सूक्ष्मगते बुधे।।

सूर्य प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर वस्त्रादि का लाभ, सुन्दर स्त्री के साथ भोग-विलास और अचिन्तित कार्य की भी सिद्धि होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा फल

गुरुतार्थविनाषश्च भृत्यदारभवस्तथा।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवेः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

सूर्य प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो सेवक और स्त्री से गौरव, धन का विनाश एवं यदा-कदा सेवक से सुसम्बन्ध भी होता है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा फल

पुत्रामित्राकलत्रादिसौख्यसम्पन्न एव च।
नानाविधा च सम्पत्ती रवेः सूक्ष्मगते भृगौ।।

सूर्य प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो पुत्र, मित्र और कलत्रादि सुख एवं विभिन्न प्रकार की सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

स्वराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि निशाकरस्य नृपाद्धनप्राप्तिमुपैति सौख्यम्।
प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशात्सन्माननं स्त्रीसुतबन्धुसौख्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपनी स्वराशि कर्क में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राजकीय धन लाभ होता है। सुख प्राप्ति होती है। दुष्ट वेश्या के संग भी होता है। राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। मनुष्य को स्त्री पुत्र, बन्धु आदि का सौख्य भी प्राप्त होता है।

अधिशत्रुराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

निशाकरस्याप्यतिशत्रुराशिं गतस्य दाये कलहार्थनाशम्।
कुवस्त्रतां कुत्सितभोजनं च क्षेत्रार्थदारात्मजतापमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को कलह में उलझन पड़ता है। धन की हानि उठानी पड़ती है। मलिन वस्त्र पहनना पड़ता है। अभोज्य भोजन करना पड़ता है। कृषि, धन, स्त्री, पुत्र आदि पक्ष से सन्ताप की प्राप्ति होती है।

शत्रुराशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

यानाम्बरालङ्करणादिहानिं विदेशयानं परिचारकत्वम्।
देशान्तरे गच्छति बन्धुहीनो दुःखी परिक्लिश्यति शत्रुदाये।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि शत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को वाहन, वस्त्र, आभूषण-अलङ्करण आदि की हानि होती है। विदेश यात्रा भी करने पड़ते हैं। दूसरे की सेवा करना पड़ता है। देशान्तर में भी भटकना पड़ता है। बन्धु से हीन रहता है। दुःखी और क्लेश युक्त होना पड़ता है।

मित्र राशिस्थ चन्द्रदशा फल कथन

मित्रर्क्षगस्यापि निशाकरस्य पाकेऽर्थलाभं क्षितिपालमैत्रीम्।
उद्योगसिद्धिं जलवस्तुलाभं चित्राम्बराभूषणवाग्विलासम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने मित्र ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धनलाभ होता है। शासको से मित्रता होती है। प्रयास या पुरुषार्थ सफल होता है।

जल सम्बन्धी वस्तुओं का भी लाभ होता है। चित्र-विचित्र रङग के वस्त्र, आभूषण का लाभ होता है। हास्य-विलास या मनोरंजन करने का अवसर सुलभ होता है।

अधिमित्र राशिस्थ चन्द्र दशा फल कथन

सुधाकरस्याप्यतिमित्रराशिं गतस्य दाये त्वतिसौख्यमेति।
विद्याविनोदाङ्कितराजपूजां क्षेत्रार्थदारात्मजकामलाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में चन्द्र यदि अपने अधिमित्र की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को बहुत अधिक सौख्य की प्राप्ति होती है। विद्या (ज्ञान) प्राप्ति होती है, जिससे राजा को प्रभावित कर सम्मानित भी होता है। कृषि योग्य भूमि का लाभ होता है। अर्थ, स्त्री, पुत्र के साथ-साथ मनुष्य की अभिलाषा पूर्ण होती है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

चन्द्र प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

भूषणं भूमिलाभष्च सन्मानं नृपपूजनम्।
तामसत्त्वं गुरुत्वं च निज सूक्ष्मगते कुजे।।

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो आभूषण और भूमि का लाभ, सम्मान, राजा से पूजित, तामस प्रकृति और गौरव होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितुर्मृतिः।
वातपित्तापित्तकफोद्रेकः विधोः सूक्ष्मगते कुजे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो दुःख, शत्रु से विरोध, पेट सम्बन्धी रोग, पिता का मरण एवं वात, पित्त और कफ सम्बन्धी रोग होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

क्रोधनं मित्रबन्धुनां देषत्यागो धनक्षयः।
विदेशान्निगडप्राप्तिर्विधोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो मित्र तथा बन्धुओं का क्रोध, देशत्याग, धन-क्षय और विदेश में बन्धन होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।

सर्वत्रसुखमाप्नोति विधोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो राजचिह्न (छत्रा$चामर) से युत ऐश्वर्य एवं पुत्र रूपी सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सर्वत्र सुख होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

राजोपद्रवभीतिः स्याद्व्यवहारे धनक्षयः।
चौरत्वं विप्रभीतिष्च विधोः सूक्ष्मगते शनौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा हो तो राजा का कोप और भय, अपने ही व्यवहार से धन क्षय एवं चोर और ब्राह्मणों का भय रहता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

राजमानं वस्तुलाभो विदेषाद्वहनादिकम्।
पुत्रपौत्रसमृद्धिष्च विधोः सूक्ष्मगते बुधे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से सम्मान, वस्तुओं से लाभ, देशान्तर से वाहन लाभ, एवं पुत्र-पौत्रादि सन्तान की वृद्धि होती है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

आत्मनो वृत्ति हननं सस्यश्रृंगवृषादिभिः।
अग्निसूर्यादिभीतिः स्याद्विधो सूक्ष्मगते ध्वजे।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो सस्य (अन्न) औषधि पशु आदि के द्वारा अपनी वृत्ति का हनन एवं अग्नि और सूर्य किरण से भय रहता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

विवाहो भूमिलाभष्च वस्त्राभरणवैभवम्।
राज्यलाभश्च कीर्तिश्च विधोः सूक्ष्मगते रवौ।।

चन्द्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो विवाह, भूमि लाभ, वस्त्र, आभरणादि वैभव, राज्य और यश का लाभ होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

क्लेशात क्लेषः कार्यनाशः पशुधान्यधनक्षयः।
गात्रवैषम्यभूमिष्च विधो सूक्ष्मगते रवौ।।

चन्द्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो भयंकर कष्ट, कार्यनाश, पशु-धन-धान्य का क्षय, शरीर

में विषमता होती है।

भौम दशा फल -

नीच राशिस्थ भौम दशा फल कथन

नीचस्थितस्यापि धरासुतस्य दाये कुवृत्त्या स्वजनादिरक्षा।
कुभोजनं गोगजवाजिनाशं स्वबन्धुनाशं नृपवह्निचौरैः।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपनी नीच कर्क राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कुवृत्ति अर्थात् अशोभनीय कार्य व्यवसाय से स्वजनों-कुटुम्बियों की रक्षा करता है। अभोज्य भोजन उसे प्राप्त होता है। गाय, हाथी, घोड़ों की हानि भी हो जाती है। उसके बन्धुओं की हानि भी होती है। चोर, ... और राजा से हानि उठानी पड़ती है।

मूलत्रिकोणस्थ भौमदशां फल कथन

मूलत्रिकोणस्थितभौमदाये मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिम्।
पुराणधर्मश्रवणं मनोज्ञं भ्रात्रादिसौख्यं कृषिलाभमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि मूल त्रिकोण राशि मेष में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य मधुन अन्न-पान के साथ वस्त्र, आभूषण आदि प्राप्त करता है। उसे पुराण आदि शास्त्रों से धर्म कथा श्रवण करने का अवसर प्राप्त होता है। वह विचारशील होता है। भ्राता, बन्धु, मित्र आदि का सौख्य पूर्ण होता है। कृषि कार्य से भी उसे लाभ कमाने का अवसर सुलभ होता है।

स्वराशिस्थ भौम दशा फल कथन

स्वक्षेत्रगस्यापि धरासुतस्य दशाविपाके लभतेऽर्थभूमिम्।
स्थानाधिपत्यं सुखवाहनं च नामद्वयं भ्रातृसुखं सुखाप्तिम्।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि स्वराशि मेष या वृश्चिक में स्थित हो तो उसकी दशा के समय मनुष्य भूमि और धन लाभ के अवसर प्राप्त करता है। स्थान विशेष का अधिकारी भी वह होता है। आरामदेह वाहन का सुख प्राप्त होता है। उसका दो नाम होता है। भ्रातृसुख के साथ अन्य अनेक प्रकार के सुख की प्राप्ति भी होती है।

अधिशत्रु राशिस्थ भौम दशा फल कथन

घरासुतस्याप्यतिशत्रुराशिं मतस्य दाये कलहादिदुःखम्।
नरेशकोपं स्वजनैर्विरोधं भूम्वर्थदारात्मजमित्ररोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कलह से दुःखी रहता है। राजा के कोप का भाजन होता है। स्वजनों से विरोध होता

है। भूमि, धन, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि से सम्बन्धित समस्यायें कष्ट व क्लेश देने वाले होते है।

शत्रु राशिस्थ भौम दशा फल कथन

भूनन्दनस्याप्रिराशिगस्य दशाविपाके समरे च पीडाम्।
शोकाग्निभूपालविषैः प्रमादं पीडातिकृछ्रादिगुदाक्षिरोगम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि शत्रु राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा में मनुष्य को युद्ध से पीड़ा की प्राप्ति होती है। शोक, अग्नि, राजा, विष आदि के कारण भी पीड़ा होती है। अतिकृच्छ्रादि गुदारोग और नेत्र रोग भी होते हैं।

मित्र राशिस्थ भौमदशाफल कथन

मित्रर्क्षजस्यापि कुजस्य दाये मित्रत्वमायाति सपत्नसङ्घः।
चौराग्निमान्द्याक्षिविपादभूमिं कृषेर्विनाशं कलिकोप्दुःखम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अपने मित्र ग्रह की राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य शत्रुओं से मित्रता भी करने का प्रयत्न करता है। चोर, अग्नि आदि से भय उत्पन्न होता है। मन्द दृष्टि दोष के साथ पैरों में विवाई फटने से परेशानी होती है। भूमि और कृषि की हानि भी सम्भव होता है। झगड़ा-लड़ाई, क्रोध आदि से भी दुःख झेलना पड़ता है।

अधिमित्रराशिस्थ भौम दशा फल कथन

कुजस्य दाये त्वतिमित्रराशिगतस्य भूपालकृतार्थभूमिम्।
वस्त्रादियज्ञादिविवाहदीक्षामुपैतिर देशान्तरलब्धभाग्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अधिमित्र ग्रह की राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुश्य राजकीय धन और भूमि की प्राप्ति करता है। वस्त्र आदि भी उसे मिलता है। यज्ञ आदि अनुष्ठान कार्य भी सम्पन्न कराता है। विवाह होता है। दीक्षा लेता है तथा उसकी भाग्योदय देशान्तर में होता है।

समराशिस्थ भौमदशाफल कथन

धरासुतस्यापि समर्क्षगस्य गृहोपकार्य त्वधनप्रमाणात्।
स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदराणां शत्रुत्वमाप्नोति नृपाग्निपीडाम्।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि समराशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य निर्धनता के कारण गृहस्थी के छोटे-छोटे जरूरतों की पूर्ति में पीड़ा होती है।

शुभ ग्रह से दृष्ट भौम दशा फल कथन

शुभेक्षितधरासूनोर्दाये भूम्यर्थनाशनम्।

तस्मिन् गोचरसंयुक्ते त्वत्यन्तं शोभनं भवेत्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के भूमि और धन का हरण होता है। अपनी दशा के समय में मंगल यदि गोचर से भी उस राशि में आ जाय, तो मनुष्य को अत्यन्त शुभफल प्राप्त होता है।

अशुभग्रह से दृष्ट भौमदशा फल कथन

आरस्य पापग्रहवीक्षितस्य प्राप्तौ दशायां बहुदुःखकष्टे।
जनः परित्यक्तकलत्रमित्रो देशान्तरस्थः क्षितिपालकोपात्।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि अशुभ (पाप) ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बहुत अधिक दुःख और कष्ट सहन करने का बाध्य होता है। राजा के कोप से बचने के लिए स्त्री, पुत्र आदि परिजन को छोड़कर वह देशान्तर में रहता है।

केन्द्रभावस्थ भौमदशा फल कथन

केन्द्रगतभौमदाये चोरविषाभ्यामुपैति दुःखानि।
कलहो वा स विरोधं लभते देशान्तरं याति।।

जिस किसी की कुण्डली में मंगल यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य चोर, विष आदि के भय से दुःखी रहता है। कलह-झगड़ा अथवा विरोध के कारण वह देशान्तर में चला जाता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

भौम की दशा में भौम के अन्तर में भौम प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

भूमिहानिर्मनःखेटो ह्यपस्मारी च बन्धुयुक्।
पुरक्षोभमनस्तापो निजसूक्ष्मगते कुचे।।

भौम के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो भूमि की हानि, मन में खेद, मृगी रोग, बन्धन, नगर में क्षोभ और मानसिक ताप होता है।

भौम प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

अंगदोषो जनाद् भीतिः प्रमदावंषनाशनम्।
वह्निसर्पभयं घोरं भौमे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो देह में दोष, लोगों से भय, स्त्री-सन्तान का नाश एवं अग्नि, सर्प का भयंकर भय होता है।

भौम प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

देवपूजा-रतिष्चात्र मन्त्राभ्युत्थानतत्परः।
लोके पूजा प्रमोदष्च भौमे सूक्ष्मगते गुरौ।।

भौम प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो देव पूजा में प्रेम, मन्त्रसिद्धि, लोक में सम्मान और आनन्द होता है।

भौम प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

बन्धनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः।
भृत्यार्थबहुलः श्रीमान् भौमे सूक्ष्मगते शनौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो बन्धन से मुक्ति, धन-धान्यादि का लाभ तथा सेवक और धन की प्राप्ति होती है।

भौम प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

वाहनं छत्रसंयुक्तं राज्यभोगपरं सुखम्।
कासष्वासादिका पीडा भौमे सूक्ष्मगते बुधे।।

भौम के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन, छत्र तथा चामर आदि राज्यभोग्य वस्तुओं से सुख, परन्तु शरीर में कास और श्वाससम्बन्धि रोग से पीडा होती है।

भौम प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

परप्रेरितबुद्धिष्च सर्वत्राऽपि च गर्हिता।
अषुचिः सर्वकालेषु भौमे सूक्ष्मगते ध्वजे।

भौम के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो दूसरे के कथन पर विश्वास कर जातक निन्दित कार्य करता है एवं सदैव अपवित्र रहता है।

भौम प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

इष्टस्त्री-भोग-सम्पत्तिरिष्ट भोजनसंग्रहः।
इष्टार्थस्यापि लाभष्च भौमे सूक्ष्मगते भृगौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो इच्छित स्त्री के साथ सम्पर्क, धन तथा अभीष्ट भोजन का संग्रह और अभीष्ट वस्तुओं का लाभ होता है।

भौम प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

राजद्वेषो द्विजात् क्लेशः कार्याभिप्रायवंचकः।

लोकेऽपि निन्द्यतामेति भौमे सूक्ष्मगते रवौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो राजा का कोप, विप्रों से कष्ट, कार्यों में असफलता और लोक में निन्दा होती है।

भौम प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

शुद्धत्वं धनसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः।
व्याधिना परिभूयेत् भौमे सूक्ष्मगते विधौ।।

भौम के प्रत्यन्तर में चन्द्र की सूक्ष्म दशा हो तो शुद्धता, धन प्राप्ति, देव-ब्राह्मण में निष्ठा, परन्तु शरीर में रोग का भय बना रहता है।

राहु दशाकालिक सामान्य फल कथन

राहोर्दशायां सम्प्राप्तौ नृपचौराग्निपीडनम्।
विदेशयानं दुःखार्ति वनवासाद्भयं ध्रुवम्।।

जिस किसी की कुण्डली में यदि राहु की दशा हो, तो उस समय मनुष्य राजा, अग्नि, चोर आदि के कारण पीड़ा प्राप्त करता है। विदेश यात्रा होती है। दुःख से दयनीय अवस्था को पाता है। वनवास या निर्वासित होने का भय भी निश्चय ही उसे होता है।

लग्नभावस्थ राहु दशा फल कथन

लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः।
बन्धुविनाशं लभते दुःखार्ति च पराजयं समरे।।

जिस किसी की कुण्डली में राहु यदि लग्नभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य बुद्धिहीनता का शिकार होता है। विष, अग्नि, शस्त्र आदि से उसे भय रहता है। बन्धुओं की हानि होती है। दुःख से वह आर्त्त होता है। युद्ध में पराजित होता है।।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

राहु की दशा में राहु के अन्तर में राहु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

लोकोपद्रवबुद्धिष्च स्वकार्ये मतिभ्रमः।
शून्यता चित्तदोषः स्यात् स्वीये सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो लोक में उपद्रव करने में उद्यत, अपने कार्य में मतिविभ्रम, शून्यता और चित्त दूषित होता है।

राहु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

दीर्घरोगी दरिद्रश्च सर्वेषां प्रियदर्शनः।
दानधर्मरतः शस्तो राहोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो दीर्घ रोग, धनाभाव, परन्तु लोक में सबका प्रिय एवं दान धर्मादि धार्मिक कृत्यों में उसकी अभिरुचि रहती है।

राहु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

कुमार्गात कुत्सितोऽर्थश्च दुष्टश्च परसेवकः।
असत्संगमतिर्मूढो राहोः सूक्ष्मगते शनौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो कुमार्ग से धन संग्रह, दुष्ट स्वभाव, दूर के कार्य में रत एवं धूर्तों की संगति रहती है।

राहु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

स्त्रीसम्भोगमतिर्वाग्मी लोकसम्भावनावृतः।
अन्नूच्छंस्तनुग्लानि राहोः सूक्ष्मगते बुधे।।

राहु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री भोग की इच्छा में वृद्धि, वाचाल, लोक-व्यवहार का ज्ञाता एवं अन्न की इच्छा से ग्लानि होती है।

राहु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

माधुर्यं मानहानिष्च बन्धनं चाप्रमाकरम्।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

राहु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो मधुरता, मानहानि, बन्धन, कठोरता, और धन तथा जीवहानि होती है।

राहु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दषा-फल

बन्धनान्मुच्यते बद्धः स्थानमानार्थसंचयः।
कारणाद् द्रव्यलाभष्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो कारागार से मुक्ति, स्थान-मान-अर्थ का संग्रहः और विभिन्न कारणों से द्रव्य का लाभ होता है।

राहु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

व्यक्तार्शो गुल्मरोगष्च क्रोधहानिस्तथैव च।

वहनादि सुखं सर्वं राहोः सूक्ष्मगते रवौ।।

श्राहु के प्रत्यन्तर में रवि की सूक्ष्म दशा हो तो देशान्तर में निवास, गुल्मरोग, क्रोध का नाश एवं वाहनादि का सुख होता है।

राहु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपानशीलवान।
देवार्चनपरो भक्त्याः राहोः सूक्ष्मगते विधौ।।

राहु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो मणि, रत्न आदि धन की प्राप्ति, विद्या की उपासना में तत्पर, एवं देवपूजा में श्रद्धावान होता है।

राहु प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

निर्जितो जनविद्रावो जने क्रोधश्च बन्धनम्।
चौर्यषीलरतिर्नित्यं राहो सूक्ष्मगते कुजे।।

राहु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो पराजित होकर पलायन, क्रोध, बन्धन और चोरी के कार्य में प्रवृति होती है।

केन्द्रभावस्थ गुरु दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां देशान्तरे वित्तमुपैति भूपात्।
देवार्चनं भूसुरतर्पणं च तीर्थाभिषेकं गुरुपूज्यतां च।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य अन्य देश में राजा से धन प्राप्त करता है। देवताओं का पूजन भी करता है। ब्राहमण भोजन भी करवाता है। तीर्थों में पवित्र जल स्नान भी करता है तथा गुरु का पूजन भी करता है।

केन्द्रगतजीवदाये राज्यं भूदारराजसन्मानम्।
विविधसुखानन्दकरं बहुजनरक्षां प्रधानतां याति।।

जिस किसी की कुण्डली में गुरु यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को राज्य मिलता है। भूमि, स्त्री के साथ राजा से सम्मान भी प्राप्त होता है। अनेक तरह से सुख का आनन्द लेता है। उसके द्वारा अनेक लोगों की रक्षा भी सम्भव होता है। जनसमूहों का नेता व प्रधान होता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

गुरु की दशा में गुरु के अन्तर में गुरु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं स्वीये सूक्ष्मगते गुरौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो शोक की निवृति, धनाधिक्य, अग्निहोत्र, शिवपूजक, छत्रादि सहित वाहन का लाभ होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

व्रतभंगो मनस्तापो विदेशे वसु नाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः सूक्ष्मगते शनौ।।

गुरु के प्रगत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो स्वीकृत व्रत भंग, मानकि सन्ताप, विदेशगमन, धननाश और बन्धु बान्धवों से विरोध होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च स-सम्मानं धनागमः।
गृहे सर्वविधं सौख्यं गुरोः सूक्ष्मगते बुधे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो विद्य-बुद्धि की वृद्धि, लोक में सम्मान, धनागम एवं घर में हर प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

ज्ञानं विभवपाण्डित्ये शास्त्रश्रोता शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ज्ञानी, ऐश्वर्य सम्पन्न, पाण्डित्यपूर्ण, शास्त्रश्रोता, शिवपूजक, अग्निहोत्री और गुरु में भक्ति रखने वाला होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिसौख्यं च गुरोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोग से छुटकारा, सुखभोग, धन-धान्य का समागम और स्त्री-पुत्रादि को सुख होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्माद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः सूक्ष्मगते रवौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो वात-पित्त का प्रकोप एवं कफ और रस-विकार से शूल रोग होता है।

गुरु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्राकुक्षिगता पीडा गुरोः सूक्ष्मगते विधौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो छत्र, चामरयुक्त ऐश्वर्य, पुत्रोत्पत्ति एवं नेत्रा तथा कुक्षि में पीडा होती है।

गुरु प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं च रुजोभयम्।
देषान्तरगमो भ्रन्तिर्गुरोः सूक्ष्मगते कुजे।।

गुरु के प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री द्वारा विष का प्रयोग, बन्धन, रोगभय, दशान्तर में भ्रमण और बुद्धि भ्रम हो जाता है।

गुरु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

व्याधिभिः परिभूतिः स्याच्चौरैरपहृतं धनम्।
सर्पवृष्चिकभीतिष्च गुरोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

गुरु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो रोगोत्पति, चोर से धन का अपहरण, एवं सर्प, बिच्छु आदि जन्तुओं से भय होता है।

शनि दशा फल -

मूलत्रिकोणनिलयस्य शनेर्दशायां देशान्तरादिवनवासमुपैति काले।
नामद्वयं यदि सभानगराधिपत्यं विद्वेषणं सुतकलत्रधनादिभिर्वा।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर देश-देशान्तर आदि की यात्रा भी करता है, वन में प्रवास भी करता है। उपाधि नाम के साथ वह दो नाम प्राप्त करता है। सभा में सभापतित्व और नगराधिपतित्व का लाभ भी पाता है। पुत्र, पत्नि, धन आदि से विद्वेष उत्पन्न हो जाता है अर्थात् स्वतंत्र जीवन को महत्त्व देता है।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी पापग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर गोपनीय रूप से पाप कर्म करता है। विशेष रूप से किसी नीचकर्म करने वाली स्त्री का

गमन भी करता है। चोर आदि नीच कर्म करने वालों से विशेष रूप में कलह या विवाद करता है। वह पत्नी रहित होता है।

शुभग्रह युक्त शनि दशा फल कथन

शुभान्वितस्यापि शनेर्दशायां विशेषतो ज्ञानमुपैति काले।
परोपकारं नृपलब्धभाग्यं कृष्णानि धान्यान्ययशश्च लाभम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी शुभग्रह से युक्त हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समयानुसार विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त करने में सफल होता है। परोपकार करने की उसकी प्रवृत्ति होती है। राजा से भाग्योपलब्धि होती है। काले वर्ण के अन्न और लोहा जैसी धातुओं और यश का लाभ होता है।

पापग्रहदृष्ट शनि दशा फल कथन

पापेक्षितस्यापि शनेर्दशायां भृत्यार्थदारात्मजसोदराणाम्।
नाशं समायाति परापवादं कुभोजनं कुत्सितगंधमाल्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य सेवक, धन, पत्नि, पुत्र, भ्राता आदि से सम्बन्धित हानि होती है। दूसरे लोगों द्वारा मिथ्या-अपवाद या कलंक प्राप्त होता है। दूषित भोजन और त्याज्य सुगन्धिद्रव्य-पुष्पमाला आदि की प्राप्ति होती है।

शुभग्रह दृष्ट शनि दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि शनेर्दशायां स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमुपैति काले।
पश्चादुपैत्यत्र महत्वकष्टं गोभूमिवाणिज्यकृषेर्विनाशम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि किसी शुभग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य समय पर स्त्री, पुत्र, सेवक, धन आदि में अभिवृद्धि प्राप्त करता है। अपना महत्त्व प्रदर्शित करने पर कष्ट भी पाता है। उसके गोधन, कृषि, भूमि और व्यापार की हानि होती है।

केन्द्रभावस्थ शनि दशा फल कथन

केन्द्रान्वितशनेर्दाये कलहायासपीडनम्।
पुत्रमित्रार्थदारादिबन्धूनां मरणं ध्रुवम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शनि यदि केन्द्रभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य कलह, श्रम आदि से पीड़ा अनुभव करता है। पुत्र, मित्र, धन आदि की हानि भी उसे सहन करना पड़ता है। भ्राता की मृत्यु भी अवश्य होती है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

शनि की दशा में शनि के अन्तर में शनि प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

धनहानिर्महाव्याधिः वातपीडाकुलक्षयः।
भिन्नाहारी महादुःखी निजसूक्ष्मगते शनौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो धनहानि, महाव्याधि, वात से पीडा, कुलनाश, पृथक भोजन और दुःख होता है।

शनि प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

वाणिज्यवृत्तेर्लाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभष्च महीप्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते बुधे।।

शनि के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या और ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं स्त्री तथा भूमि का लाभ होता है।

शनि प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

चौरोपद्रवकुष्ठादिवृत्तिक्षय-विगुम्फनम्।
सर्वांगपीडनं व्याधिः शनेः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

शनि के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो चोरों का उपद्रव, कुष्ठादि रोग काभय, जीविका का नाश, गुम्फन और समस्त अंगों में पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासः पुत्रलाभोऽभिषेचनम्।
आरोग्यं धनकामौ च शनेः सूक्ष्मगते भृगौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो ऐश्वर्य का लाभ, शास्त्राभ्यास, पुत्रोत्पत्ति, अभिषेक, आरोग्य एवं धन और मनोकामना की सिद्धि होती है।

शनि प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

राजतेजोऽधिकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनेः सूक्ष्मगते रवौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो राजा से वैरभाव, अपने घर में झगडा और अपने शरीर में कुछ पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजा बहुव्ययः।

स्त्रीपुत्रैष्च समं सौख्यं शने सूक्ष्मगते विधौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो बुद्धि में अधिक निर्मलता, बडे कार्य का प्रारम्भ, छवि मे न्यूनता, अधिक खर्च एवं स्त्री-पुरुष से सुख होता है।

शनि प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

तेजोहानिर्महाद्वेगो वह्निमान्द्यं भ्रमः कलिः।

वातपित्तकृता पीडा शनेः सूक्ष्मगते कुजे।।

शनि के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो कान्ति की हानि, उद्वेग, अग्नि-मन्दता, भ्रम, कलह और वात-पित्त जन्य रोगों से पीडा होती है।

शनि प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

पितृमातृविनाषश्च मनोदुःखं गुरु-व्ययम्।

सर्वत्र विफलत्वं च शनेः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो पितृ-मातु वियोग, मानसिक दुःख, अधिक-व्यय एवं सभी जगहों से विफलता की प्राप्ति होती है।

शनि प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

सन्मुद्राभोगसन्मानं धनधान्यविवर्धनम्।

छत्रचामरसम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शनि के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर मुद्रा का भोग, सम्मान, धन धान्यों की वृद्धि एवं छत्र-चामरादि राजचिह्न की प्राप्ति होती है।

मूलत्रिकोणान्वितसौम्यदाये राज्यं महत्सौख्यकरं च कीर्तिम्।

विद्याविलासं निगमार्तिशीलं पुराणधर्मश्रवणादिपूतः।।

केन्द्रभावगत बुध दशा फल कथन

केन्द्रोपगस्य हि दशा शशिनन्दनस्य भूपालमित्रधनधान्यकलत्रपुत्रान्।

यज्ञादिकर्मनृपमानयशः प्रलब्धिं मृद्वन्नपानशयनाम्बरभूषणानि।।

जिस किसी की कुण्डली में बुध यदि केन्द्र भाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य की राजा से मित्रता होती है। धन, अन्न, स्त्री, पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। यज्ञ-अनुष्ठान आदि कर्म का सम्पादन होता है। राजकीय सम्मान प्राप्त होता है। मुलायम अन्न-पेय वस्तु, शय्या-शयन, वस्त्र-

आभूषण आदि का सुख सुलभ होता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

बुध प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादि सम्पदः।
सर्वेषां प्रियदर्षी च निजसूक्ष्मगते बुधे।।

बुध के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, राजा से सम्मान, धन धान्य सम्पत्ति का लाभ और सबसे प्रीति होती है।

बुध प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

बालग्रहोऽग्निभीस्तामः स्त्रीगदोद्भवदोषभाक्।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बौधे सूक्ष्मगते ध्वजे।।

बुध के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो बालग्रह का दोष, अग्निभय, सन्ताप, स्त्री का रोग, कुमार्ग में प्रवेश और कुभोजन प्राप्त होता है।

बुध प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

वाहनं धनसम्पतिर्जलजान्नार्थसम्भवः।
शुभकीर्तिर्महाभोगो बौधे सूक्ष्मगते भृगौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो वाहन, धन, सम्पति, जल से उत्पन्न अन्न और धन की प्राप्ति, सुन्दर यश और महाभोग की प्राप्ति होती है।

बुध प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

ताडनं नृपवैषम्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक्।
हानिर्जनापवादं च बौधे सूक्ष्मगते रवौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो ताडन, राजा से विषमता, चंचल बुद्धि, रोग, धन हानि और लोक में अपसश होता है।

बुध प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसम्मानसम्पदः।
सुहृदां गुरुसंचारो बौधे सूक्ष्मगते विधौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो सौभाग्य, स्थिरबुद्धि, राजसम्मान, सम्पति, मित्र तथा गुरुजनों से समागम होता है।

बुध प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता।
विभ्रमष्च महाद्वेगो बौधे सूक्ष्मगते कुजे।।

बुध के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि से दाह और विषभय, मूर्खता, दरिद्रता, मतिभ्रम एवं उद्वेग होता है।

बुध प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निसर्पनृपाद् भतिः कृच्छ्रादरिपराभवः।
भूतावेश्भ्रमाद् भ्रान्तिर्बौधे सूक्ष्मगतेऽप्यहौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि, सर्प और राजा से भय, अधिक परिश्रम से शत्रु पराजित एवं भूतों से उपद्रव द्वारा मतिभ्र्रम होता है।

बुध प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

गृहोपकरणं भव्यं दानं भोगादिवैभवम्।
राजप्रसादसम्पत्तिर्बौधे सूक्ष्मगते गुरौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो सुन्दर गुह का निर्माण, दान में तत्परता, भोग-ऐश्वर्य की वृद्धि एवं राजदरबार से धनलाभ होता है।

बुध प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

वाणिज्यवृत्तिलाभष्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभष्च महाव्याप्तिर्बोधे सूक्ष्मगते शनौ।।

बुध के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो व्यापार से लाभ, विद्या, ऐश्वर्य की वृद्धि, स्त्रीलाभ और व्यापकता होती है।

षष्ठभावस्थ केतु दशा फल कथन

केतोस्त्वरिगतस्यापि दशाकाले महद्भयम्।
चौराग्निविषभीतिश्च दशार्त्तिं समुपैति च।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि षष्ठ भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य महाभय का शिकार होता है। चोर, अग्नि विष आदि से भय प्राप्त होता है। वह दयनीय दशा (अवस्था) को प्राप्त होता है।

सप्तमभावस्थ केतु दशा फल कथन

कलत्रराशिसंयुक्तकेतोर्दाये महद्भयम्।

दारपुत्रार्थनाशं च मूत्रकृच्छं[a] मनोरुजम्।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि सप्तमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को बहुत अधिक भय की प्राप्ति होती है। स्त्री, पुत्र, धन आदि की भारी हानि भी होती है। मूत्ररोग से कष्ट होता है। मनोरोग भी उसे झेलने को बाध्य होता है।

अष्टमभावस्थ केतु दशा फल कथन

केतोरष्टमयुक्तस्य दशाकाले महद्भयम्।

पितृमृत्युश्वासकासग्रहण्यादिक्षयान्वितः।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि अष्टमभाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को अत्यधिक फल प्राप्त होता है। माता-पिता की मृत्यु भी होती है। श्वास सम्बन्धी रोग, कास या खाँसी, संग्रहणी रोग आदि के साथ क्षय रोग से भी वह युक्त होता है।

नवमभावस्थ केतु दशा फल कथन

नवमस्थस्य केतोस्तु दशापाके पितुर्विपत्।

गुरोर्वा विपदं दुःखं शुभकर्मविनाशनम्।।

जिस किसी की कुण्डली में केतु यदि नवम भाव में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के पिता विपत्तिग्रस्त होता है अथवा गुरु को विपत्ति और दुःख मिलता है। उसके शुभकर्मों की हानि भी होती है।।

दशमभावस्थ केतु दशा फल कथन

कर्मस्थकेतोः सम्प्राप्तौ दशायां सुखमेति च।

मानहानिं मनोजाडयमपकीर्तिं मनोरुजम्।।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

केतु प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रावैषम्यमेव च।

दारिद्रयाद् भिक्षुवृत्तिष्च नैजे सूक्ष्मगते ध्वजे।।

केतु के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो पुत्र-स्त्री से दुःख, शरीर में विषमता एवं दरिद्रता के कारण भिक्षावृत्ति होती है।

केतु प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

रोगनाषोऽर्थलाभश्च गुरुविप्रानुवत्सलः।
संगमः स्वजनैः सार्द्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो रोग से निवृत्ति, धनलाभ, गुरु और ब्राह्मण में श्रद्धा एवं स्वजनों का संगम होता है।

केतु प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

युद्धं भूमिविनाषश्च विप्रवासः स्वदेषतः।
सुहृद्विपत्तिरार्तिष्च केतोः सूक्ष्मगते रवौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो कलह, भूमि की हानि, देशान्तर में निवास, मित्रों को भी विपत्ति और शत्रु भय होता है।

केतु प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धे लब्धिर्जयस्तथा।
ललिता कीर्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो दास-दासियों की वृद्धि, युद्ध में विजय और लोक में सुन्दर यश प्राप्त होता है।

केतु प्रत्यन्तर में भौम की सूक्ष्म दशा-फल

आसने भयमष्वादेष्चौरदुष्टादिपीडनम्।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे।।

केतु के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो अश्व आदि सवारियों से गिरने का भय, चोरों और दुष्टों से पीडा एवं गुल्म तथा मस्तक रोग होता है।

केतु प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

विनाशः स्त्रीगुरुणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघुः।
वमनं रुधिरं पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो स्त्री तथा गुरु आदि मान्य जनों का विनाश, दुष्टा स्त्री के संग के कारण लघुता, वमन, रक्तविकार और पित्ताम्बन्धी रोग होता है।

केतु प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

रिपोर्विरोधः सम्पत्ति सहसा राजवैभवम्।

पशुक्षेत्रविनाशार्तिः केतोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रु से विरोध, अकस्मात् राजवैभव की प्राप्ति एवं पशु और क्षेत्र की हानि के कारण दुःख होता है।

केतु प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

मृषा पीडा भवेत् क्षुद्रसुखोत्पत्तिष्च लंघनम्।
स्त्रीविरोधः सत्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ।।

केतु के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो मिथ्या पीडा, स्वल्प सुख, उपवास, स्त्री से विरोध और सत्यता की हानि होती है।

केतु प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

नानाविधजनाप्तिष्च विप्रयोगोऽरिपीडनम्।
अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे।।

केतु के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो विभिन्न प्रकार के लोगों से संयोग एवं वियोग, शत्रुओं से पीडा तथा धन-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

परमनीचगत शुक्र दशा फल कथन

उद्वेगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः।
अतिनीचगस्य दाये शुक्रस्यात्मार्थदारपुत्रार्तिम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि परमनीच अर्थात् कन्याराशि के 26 अंश पर स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य उद्वेग रोग से ग्रस्त होता है। वह अपने कार्यों में विफल रहने के बावजूद सदा ही सफलता के लिए कार्यों को करते रहने में लगा रहता है। उसको अपने स्वास्थ्य, स्त्री, पुत्र सम्बन्धी पीड़ा भी होती है।

मूलत्रिकोणस्थ शुक्र दशा फल कथन

मूलत्रिकोणभाजो भृगोर्दशायां महाधिपत्यं स्यात्।
क्रयविक्रयेषु कुशलो धनकीर्तिसमन्वितो विधिज्ञश्च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी मूल त्रिकोण कुम्भराशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को महत्त्वपूर्ण अधिकार की प्राप्ति होती है। लेने-देने या क्रय-विक्रय के कार्य में निपुण भी होता है। धन व कीर्ति भी मिलती है। नियम-कानून को जानने में प्रवृत्त रहता है।

स्वराशिस्थ शुक्रदशा फल कथन

शुक्रक्षेत्रदशायां लभते स्त्रीपुत्रमित्रधनशौर्यम्।

नित्योत्साहं द्वेषं परोपकारं महत्त्वं च।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अपनी राशि वृष या तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य स्त्री, पुत्र, मित्र, पराक्रम आदि से सम्पन्न होता है। नित्य नये उत्साह से युक्त रहता है। द्वेष भी उत्पन्न होता है। परोपकार करने में प्रवृत्त होता है। अपना महत्त्व वह स्थापित करता है।।54।।

अधिशत्रु राशिस्थ शुक्र दशा फल कथन

भृगोर्दशायामतिशत्रुराशिं गतस्य पुत्रार्थकलत्रहानिम्।
प्रभग्नसंसारविशीर्णदेहं गुल्माक्षिरोगं ग्रहणी प्रकोपम्।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि अधिशत्रु ग्रह की राशि में हो, तो पुत्र एवं पत्नी की हानि होती है। तथा जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य के सम्मान में बाधा आती है। धन भी अपव्यय करने पड़ते है। उसे दुःख की प्राप्ति होती है। पत्नि से विरोध मिलता है। अपने पद से अवनति और विदेश में प्रवास से वह अपने कर्म-दायित्व से रहित जीवन जीता है।

शुभग्रह दृष्ट शुक्र दशा फल कथन

शुभेक्षितस्यापि भृगोर्विपाके धनाम्बरं भूपतिपूजनं च।
जनाधिपत्यं स्वशरीरकान्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यमेति।।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि शुभ ग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को धन, वस्त्र और राजकीय सम्मान की प्राप्ति होती है। जन समूह का नेता भी होता है। उसके शरीर में कान्ति होती है। पत्नि, मित्र, पुत्र आदि का सुख भी प्राप्त करता है।

केन्द्रभावस्थ शुक्र दशा फल कथन

केन्द्रे गतस्य हि दशा भृगुनन्दनस्य यानाम्बरदिमणिभूषितदेहकान्तिम्।
राज्यार्थभूमिकृषिवाहनवस्त्रशस्त्रदुर्गाधियानवनवासजलाभिषेकम्।

जिस किसी की कुण्डली में शुक्र यदि केन्द्रभाव में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य वाहन, वस्त्र आदि तथा मणि से युक्त आभूषण का लाभ करता है। कान्ति युक्त शरीर वाला होता है। राज्य, धन, भूमि, कृषि कार्य, वाहन, वस्त्र, शस्त्र आदि की प्राप्ति होती है। किला में वास करता हुआ वन्य जल से स्नान करने को मिलता है।

सूक्ष्म दशा फल - (वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ के अनुसार)

शुक्र प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा-फल

शत्रुहानिर्महत्सौख्यं शंकरालयनिर्मितिः।

तडागकूपनिर्माणं निजसूक्ष्मगते भृगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में शुक्र की सूक्ष्म दशा हो तो विपक्षियों का नाश, महान सुख एवं शिवालय या देवमन्दिर तथा तडाग-कूपादि जलाशय का निर्माण होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा-फल

उरस्तापो भ्रमष्चैव गतागतविचेष्टितम्।

क्वचिल्लाभः क्वचिद्धानिर्भृगोः सूक्ष्मगते रवौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में सूर्य की सूक्ष्म दशा हो तो हृदय में सन्ताप, मतिभ्रम, इधर-उधर घूमना, कभी लाभ एवं कभी हानि होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा-फल

आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।

बुद्धिविद्याविवृद्धिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते विधौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो निरोगता, धन-सम्पत्ति की वृद्धि, गमनागमन से कार्यसिद्धि एवं बुद्धि और विद्या की वृद्धि होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा-फल

जडत्वं रिपुवैषम्यं देषभ्रंषो महद्भयम्।

व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो मूर्खता, शत्रु से विषमता, देशत्याग, भय, रोग और दुःख होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा-फल

राज्याग्निसर्पजा भतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा।

स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्नि और सर्प से भय बन्धु नाश, महारोग, स्थान त्याग और महाभय होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा-फल

सर्वत्र कार्यलाभष्च क्षेत्रार्थविभवोन्नतिः।

वणिग्वृत्तेर्महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो सभी जगह से लाभ, खेती और धन-ऐश्वर्य की उन्नति एवं व्यापार से अधिक लाभ होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा-फल

शत्रुपीडा महद्दुःखं चतुष्पादविनाशनम्।
स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्म दशा हो तो शत्रु से पीडा, महादुःख, पशुओं की हानि एवं अपने वंश और गुरुजनों की हानि सम्भव होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा-फल

बान्धवादिषु सम्पत्तिर्व्यवहारो धनोन्नतिः।
पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो अपने बन्धु-बान्धवों में धन की वृद्धि, व्यवहार कुशलता के कारण धनलाभ एवं पुत्र और स्त्री से सुख होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा-फल

अग्निरोगो महापीडा मुखनेत्रषिरोव्यथा।
संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे।।

शुक्र के प्रत्यन्तर में केतु की सूक्ष्म दशा हो तो अग्निभय, महारोग से पीडा, मुख नेत्र और मस्तक में पीडा, संचित धन का नाश और मानसिक सन्ताप होता है।

बोध प्रश्न –

1. शुक्र के प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्म दशा हो तो क्या होता है।
   क. भय ख. रोग ग. दुःख घ. उपर्युक्त सभी
2. बुध के प्रत्यन्तर में गुरु की सूक्ष्म दशा हो तो दशा फल होगा-
   क. सुन्दर गृह का निर्माण ख. चोर भय ग. धन वृद्धि घ. मान हानि
3. जिस जातक की कुण्डली में शुक्र यदि पापग्रह से देखा जाता हो, तो उसकी दशा के समय क्या फल होगा।
   क. मान वृद्धि ख. मान नाश ग. धन प्राप्ति घ. शत्रु पराजय
4. बुध के प्रत्यन्तर में बुध की सूक्ष्म दशा हो तो क्या फल होता है।
   क. भाग्योन्नति ख. भाग्य में कमी ग. शरीर सुख घ. ऐश्वर्य वृद्धि

5. गुरु के प्रत्यन्तर में चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा हो तो फल क्या होगा।

   क.पुत्र प्राप्ति ख. पत्नी प्राप्ति ग. आयु वृद्धि घ. मान हानि

4.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि सूक्ष्म यथा नाम से ही स्पष्ट है कि जातक के उपर सूक्ष्म प्रकार की चलने वाली दशा।

धुजङमत्र्यंशयुतस्य भानोर्दशाविपाके हि भयं विषाद्वा।
नृपाग्निपातित्यमनेकदु:खं पाशादिभृत्यंशयुतस्य चैवम्।।

जिस जातक की कुण्डली में सूर्य यदि सर्प द्रेष्काण में स्थित हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को विष से भय और राजा, अग्नि और पतित होने से अनेक प्रकार के दु:ख मिलते हैं। इसी तरह की फल पाश द्रेष्काणस्थ सूर्य की दशा में भी प्राप्त होता है।

उच्चराशि-नीच नवांशस्थ सूर्य दशाफल कथन

स्वोच्चस्थोऽपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानि:।
स्वकुलजबन्धुविरोध: पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम्।।

जिस किसी की कुण्डली में सूर्य यदि उच्चराशि में होकर नीचनवांश तुला राशि में हो, तो उसकी दशा के समय मनुष्य को स्त्री व धन की हानि होती है। अपने ही कुल के बन्धुजनों से विरोध भी होता है। पिता, चाचा आदि से भी विरोध के कारण उत्पन्न होते हैं। ऐसा मुनियों का वचन है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के सूक्ष्मान्तर्दशा का फल समझना चाहिए।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

सूक्ष्म दशा – प्रत्यन्तर्दशा के पश्चात् सूक्ष्म दशा होती है।

उच्च स्थान – सभी ग्रहों के उच्च स्थान होते है। जैसे सूर्य का मेष, चन्द्र का वृष आदि।

भार्या – पत्नी

नवमांश – राशि का नवां भाग।

दशा – स्थिति

पतित – नीच

अग्नि – आग

4.8 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. क
3. ख
4. क
5. क

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सूक्ष्मान्तर्दशा फल से आप क्या समझते है।
2. सूर्य ग्रह का सूक्ष्मान्तर्दशा का फल लिखिये।
3. चन्द्र एवं गुरु सूक्ष्म दशा का फल लिखें।
4. शनि एवं राहु ग्रह का सूक्ष्म फल लिखें।
5. केतु ग्रह का सूक्ष्म दशा फल लिखें।

इकाई – 5 प्राणदशा फल विचार

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 प्राण दशा परिचय

5.4 प्राण दशा फल विचार

5.5 सारांश

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम खण्ड की पाँचवी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – प्राणदशा दशाफल। इससे पूर्व आपने महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा, तथा सूक्ष्म दशा आदि के शुभाशुभ फलाफल का अध्ययन कर लिया है अब आप दशा क्रम में ही प्राण दशा के फलों का अध्ययन करने जा रहे है।

जातक की दशाओं के अन्तर्गत प्राण दशा सबसे सूक्ष्म दशा मानी गयी। अत: इसका ज्ञान भी ज्योतिष के अध्येताओं को अवश्य जानना चाहिए।

आइए इस इकाई में हम लोग 'प्राण दशा फल' के बारे में तथा उसके शुभाशुभ प्रभाव के बारे में जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- प्राण दशा को परिभाषित कर सकेंगे।
- प्राण दशा के अवयवों को समझा सकेंगे।
- प्राण दशा के शुभ फलों को समझ लेंगे।
- प्राण दशा के अशुभ प्रभावों को जान लेंगे।
- प्राण दशा के महत्व का निरूपण कर सकेंगे।

5.3 प्राणदशा परिचय

दशाओं के फलाफल ज्ञान क्रम में प्राण दशा के बारे में अब आप अध्ययन करने जा रहे है। आपको यह जानना चाहिए कि दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा प्राण दशा होती है। इसके आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश करने करना सरल हो जाता है। यह सूक्ष्म दशा के पश्चात् आता है। प्राण दशा के आधार पर व्यक्ति का एक दिवस का पूरा-पूरा फलादेश किया जा सकता है। यद्यपि इसका ज्ञान कठिन है। इसके आधार पर फलादेश करना भी आजा की स्थिति में दुष्कर है, किन्तु आचार्यों ने जो यह ज्ञान हमें ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से घोर अनुसन्धान के द्वारा दिया है उसका अवलोकन करते है।

सूर्य से लेकर शुक्र पर्यन्त सभी ग्रहों के प्राण दशाओं का शुभाशुभ फल का विवेचन क्रमश: यहाँ आपके ज्ञानार्थ दिया जा रहा है।

दशा ज्ञान हेतु वृहत्पराशरहोराशास्त्र ज्योतिष शास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ है। सर्वाधिक दशाओं का विवरण इसी ग्रन्थ में प्राप्त होता है। अत: इसी ग्रन्थ के आधार पर यहाँ प्राण दशा फल का वर्णन किया जा रहा है।

5.4 प्राणदशा फल विचार –

सर्वप्रथम सूर्य ग्रह से आरम्भ करते है। यदि सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राण दशा चल रही हो तो उसका क्या फल होगा। इसका विचार करते है। तत्पश्चात् क्रम से चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु एवं शुक्र ग्रहों का भी प्राणदशा फल का विवरण किया जायेगा।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राण दशा फल –

पौश्चल्यं विषजा बाधा चौराग्निनृपजं भयम्।

कष्टा सूक्ष्मदशाकाले रवौ प्राणदशां गते।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो गुदा मैथुन में प्रवृत्ति, विष में बाधा, चौर, अग्नि और राजभय एवं एवं शारीरिक कष्ट होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशाफल -

सुखं भोजनसम्पत्ति: संस्कारो नृपवैभवम्।

उदारादिकृपाभिश्च रवे: प्राणगते विधौ।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो सुख, भोजन-सम्पत्ति की प्राप्ति, बुद्धि में परिवर्तन, राजा से ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं सन्त सज्जन उदारादि पुरुषों की कृपा रहती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशाफल –

भूपोपद्रवमन्यार्थे द्रव्यनाशो महद्भयम्।

महत्यपचयप्राप्ती रवे: प्राणगते कुजे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो अन्यों के कारण राजा से उपद्रव, द्रव्यनाश, भय और महान हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशाफल –

अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्सपत्तिर्विशेषत:।

अर्थाग्निराजभि: क्लेशो रवे: प्राणगतेऽप्यहौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो अन्न से कष्ट, विशेषकर विषभय, अग्नि तथा राजा के द्वारा धननाश और क्लेश होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

नानाविद्यार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।

नृपाविप्राश्रमे सूक्ष्मे रवेः प्राणगते गुरौ।।

अर्थात् सूर्य की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो विभिन्न विद्या, धन, सम्पत्ति का लाभ, गमनागमन से कार्य सिद्धि और राजा तथा ब्राह्मण से सम्बन्ध रहता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

बन्धनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च।

बहुबाधा महाहानी रवेः प्राणगते शनौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो बन्धन, प्राणनाश, मन में उद्वेग, कार्य में विघ्न और महान हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राण दशा फल –

राजान्नभोगः सततं राजलांछनतत्पदम्। केतु

आत्मा सन्तर्पयेदेवं रवेः प्राणगते बुधे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में बुध कीप्राणदशा हो तो निरन्तर राजान्न, भोजन, राजचिह्न की प्राप्ति या राजपद की प्राप्ति से आत्मसंतोष प्राप्त होता है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

अन्योऽन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः।

गुरुस्त्रीबन्धुवर्गैश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे।।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा रहने पर पूज्य जनों और स्त्री, स्वबन्धु जनों के साथ परस्पर कलह से धन की हानि होती है।

सूर्य की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

राजपूजा धानाधिक्यं स्त्रीपुत्रादिभवं सुखम्।

अन्नपानादिभोगादि सूर्यप्राणगते भृगौ।।

सूर्य की सूक्ष्म दश में शुक्र की प्राणदशा हो तो राजा से पूजित, धन की वृद्धि स्त्री पूत्रादि से सुख और अन्न पानादि का भोग होता है।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

स्त्रीपुत्रादिसुखं द्रव्यं लभते नूतनाम्बरम्।

योगसिद्धिं समाधिश्च निजप्राणगते विधौ।।

चन्द्रमा की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा होत तो स्त्री पुत्रादि से सुख, धन और नूतन वस्त्र का

लाभ एवं योग और समाधि की सिद्धि होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल -

क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशं रक्तस्रावान्महद्भयम्।
भूतावेशादि जायेत विधोः प्राणगते कुजे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो क्षय, कुष्ठरोग, बन्धुओं का विनाश, रक्तस्राव से भय एवं भूत और पिशाचादि का भय रहता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

सर्पभीतिर्विशेषेण भूतोप्रदववान सदा।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशो विधोः प्राणगतेऽप्यगौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो विशेषकार सर्प का भय, सदा भूतों का उपद्रव, ऑख में रोग और मतिभ्रंश होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

धर्मवृद्धिः क्षमाप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रप्राणगते गुरौ।।

अर्थात् चन्द्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो धार्मिक कृत्यों में वृद्धि, क्षमाप्राप्ति, देव-ब्राह्मणों का पूजन, भाग्योदय और अपने प्रियजनों से भेंट होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

सहास देहपतनं शत्रूपद्रववेदना।
अन्धत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो शरीर में अकस्मात् कष्ट, शत्रुओं के उपद्रव से वेदना, दृष्टि में कमी और धन की प्राप्ति होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

चामरच्छत्रसम्प्राप्ती राज्यलाभो नृपात्तत:।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रप्राणगते बुधे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो राजचिह्न की प्राप्ति या राजा से राज्य लाभ और समस्त जीवों में समता की बुद्धि होती है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

शस्त्राग्निपुजा पीडा विषाग्निः कुक्षिरोगिता।
पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रप्राणगते ध्वजे।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो शस्त्र, अग्नि और शत्रु से पीड़ा, विषभय, पेट में रोग एवं स्त्री पुत्रादि का वियोग होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः।
सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रप्राणगते भृगौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र, मित्र, स्त्री आदि की प्राप्ति, विदेश से धनागम एवं सभी प्रकार के सुख-सम्पत्ति का लाभ होता है।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

क्रूरता कोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रप्राणगते रवौ।।

चन्द्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो क्रूरता, कोप की बढ़ोत्तरी, प्राणनाश, मानसिक व्यथा, देशत्याग और महाभय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

कलहो रिपुभिर्बन्धः रक्तपित्तादिरोगभीः।
निजसूक्ष्मदशामध्ये कुजे प्राणगते फलम्।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो शत्रु से विवाद, बन्धन एवं रक्त पित्त सम्बन्धी रोगभय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

विच्युतः सुतदारैश्च बन्धूपद्रवपीडितः।
प्राणत्यागी विषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो स्त्री पुत्रों से विछोह, अपने बन्धुओं के उपद्रव से पीड़ा एवं विष से प्राणत्याग का भय होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

देवार्चनपरः श्रीमान्मन्त्रानुष्ठानतत्परः।
पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो देवपूजन में तत्पर, पूज्य मन्त्रों के अनुष्ठान में

तत्परता एवं पुत्र पौत्रों से सुख की प्रप्ति होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

अग्निबाधा भवेन्मृत्युरर्थनाश: पदच्युति:।
बन्धुभिर्बन्धुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो अग्निभय, मरण, धननाश, स्थान त्याग, परन्तु बन्धुओं में भ्रातृत्व की वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषित:।
दिव्यांगनाया: सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो दिव्य वस्त्रों की प्राप्ति, सुन्दर आभूषण से भूषित और सुन्दर स्त्री का लाभ होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

पतनोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम्।
भुजंगाद् द्रव्याहानिश्च भौमप्राणगते ध्वजे।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो गिरने का भय, उत्पात, नेत्ररोग, सर्प से भय एवं धन का नाश होता है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

धनधान्यादिसम्पत्तिर्लोकपूजा सुखागमा।
नानाभोगैर्भवेद् भोगी भौमप्राणगते भृगौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो धन-धान्य सम्पत्ति की वृद्धि, लोक में सम्मान, सुख एवं अनेक प्रकार के भोग प्राप्त होते हैं।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

ज्वरोन्माद: क्षयोऽर्थस्य राजविस्नेहसम्भव:।
दीर्घरोगी दरिद्र: स्याद् भौमप्राणगते रवौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो ज्वर, उन्माद, धननाश, राजा से सम्बन्ध विच्छेद, दीर्घ रोग एवं दरिद्रता होती है।

मंगल की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

भोजनादिसुखप्राप्तिर्वस्त्राभरणजं सुखम्।

शीतोष्णव्याधिपीडा च भौमाप्राणगते विधौ।।

मंगल की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो भोजन, वस्त्र, आभरणादिजन्य सुख एवं शीत तथा उष्ण सम्बन्धी व्याधि से पीड़ा होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशाकाल –

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च।
साहसाद्धननाशश्च राहौ प्राणगते भवेत्।।

राहु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो अन्न से निर्मित भोजन में अरूचि, विषभय एवं अकस्मात् धननाश होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशाकाल –

अंगसौख्यं विनिर्भीतिर्वाहनोदश्च संगता।
नीचैः कलहसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते गुरौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो शारीरिक सुख, निर्भरता, वाहनों का लाभ और नीच जनों से कलह होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशाकाल –

गृहदाहः शरीरे रूग नीचैरपहृतं धनम्।
तथा बन्धनसम्प्राप्ती राहोः प्राणगते शनौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो गृहदाह, शरीर में रोग, नीचों के द्वारा धन का अपहरण और बन्धन होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशाकाल –

गुरुपदेशविभवो गरुसत्कारवर्द्धनम्।
गुणवांछीलवांश्चापि राहोः प्राणगते बुधे।।

राहु की सूक्ष्म दशा मे बुध की प्राणदशा हो तो गुरु के ज्ञान से युक्त, उनकी कृपा से धन की वृद्धि एवं गुणी और शीलवान होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशाकाल –

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्च गृहान्निष्क्रमणादपि।
साहसात्कार्यहानिश्च राहोः प्राणगते ध्वजे।।

राहु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो स्त्री-पुत्रादि से विरोध, गृह से निष्क्रमण एवं साहस से कार्यनाश होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशाकाल –

छत्रवाहनसम्पत्ति: सर्वार्थफलसंचय:।
शिवार्चनगृहारम्भो राहो: प्राणगते भृगौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो छत्र, वाहन, सम्पत्ति की प्राप्ति, सभी कार्यों का फलसंग्रह, शिवपूजन और गृहारम्भ होता है।

राहु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशाकाल –

अर्शादिरोगभीतिश्च राज्योपद्रवसम्भव:।
चतुष्पादादिहानिश्च राहो: प्राणगते रवौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो बवासीर आदि रोग का भय, राजा के उपद्रव की सम्भावना एवं पशुओं की हानि होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशाकाल –

सौमनस्यं च सद्बुद्धि: सत्कारो गुरुदर्शनम्।
पापाद् भीतिर्गन: सौख्यं राहो: प्राणगते विधौ।।

राहु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो मन और बुद्धि का विकास, लोक में आदर, पूज्य जनों का अगमन, पाप से भय और मानसिक सुख की अनुभूति होती है।

राहु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशाकाल –

चाण्डालग्निवशाद् भीति: स्वपदच्युतिरापद:।
मलिन: श्वादिवृत्तिश्च राहो: प्राणगते कुजे।।

राहु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो चाण्डाल और अग्नि से भय, पदत्याग, विपत्ति, मलिनता और नीच कार्य होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

हर्षागमो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं निजप्राणगते गुरौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा रहने पर हर्ष, धन की वृद्धि, अग्निहोत्र, शिवपूजन एवं वाहन और छत्र आदि का लाभ होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

व्रतहानिर्विषादश्च विदेशे धननाशनम्।
विरोधे बन्धुवर्गैश्च गुरो: प्राणगते शनौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो व्रत में बाधा, विषाद, विदेशगमन, धननाश एवं अपने बन्धुवर्गों से विरोध होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च लोके पूजा धनागम:।
स्त्रीपुत्रादिसुखप्राप्तिर्गुरो: प्राणगते बुधे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो विद्या तथा बुद्धि की वृद्धि, लोक में आदर, धनागम एवं स्त्री पुत्रादि से सुख प्राप्त होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रज्ञानं शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरो: प्राणगते ध्वजे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो ज्ञान, ऐश्वर्य, पाण्डित्य, शास्त्रज्ञान, शिवपूजन, अग्निहोत्र और गुरु में निष्ठा रहती है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

रोगान्मुक्ति: सुखं भोगो धनधान्यसमागम:।
पुत्रदारादिजं सौख्यं गुरो: प्राणगते भृगौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो रोग से छुटकारा, सुखभोग, धन धान्य का आगमन एवं स्त्री पुत्र से सुख होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

वातपित्तप्रकोपं च श्लेषमोद्रेकं तु दारूणम्।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरो: प्राणगते रवौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो वात, पित्त और कफसम्बन्धीा रोग का भय एवं रस-व्याधि के कारण शूल रोग होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में चन्द्र का प्राणदशा फल –

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पद:।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरो: प्राणगते विधौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो छत्र चामरयुत ऐश्वर्य की प्राप्ति, पुत्रलाभ एवं नेत्र तथा पेट में पीड़ा होती है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

स्त्रीजनाच्च विषोत्सपत्तिर्बन्धनं चातिनिग्रह:।

देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरो: प्राणगते कुजे।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो स्त्री से विषभय, कारागार में प्रवेश, देशान्तर में गमन और मतिभ्रंश होता है।

गुरु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

व्याधिभि: परिभूत: स्याचौरैपहृतं धनम्।

सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरो: प्राणगतेऽप्यहौ।।

गुरु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो रोग से आच्छादित, चोर द्वारा धन का अपहरण एवं सर्प, बिच्छु आदि का भय होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

ज्वरेण ज्वलिता कान्ति: कुष्ठरोगोदरादिरूक्।

जलाग्निकृतमृत्यु: स्यान्निजप्राणगते शनौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो ज्वर से कान्ति का नाश, कुष्ठ तथा उदर रोग एवं जल और अग्नि से मरण सम्भव रहता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहारभिपूजनम्।

देवब्राह्मणभक्तिश्च शने: प्राणगते बुधे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो धन-धान्य एवं मंगल की प्राप्ति, व्यवहार में कुशलता, लाभ तथा देवता और ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

मृत्युवेदनदु:खं च भूतोपद्रवसम्भव:।

परदाराभिभतत्वं शने: प्राणगते ध्वजे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो मरणसदृश कष्ट, दु:ख, भूतों का उपद्रव एवं परस्त्री से अपमान होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

पुत्रार्थविभवै: सौख्यं क्षितिपालादित: सुखम्।

अग्निहोत्रं विवाहश्च शने: प्राणगते भृगौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो पुत्र एवं अर्थ का लाभ, राजा से ऐश्वर्यलाभ, अग्निहोत्र, विवाहादि मांगलिक कार्य होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

अक्षिपीडा शिरोव्याधि: सर्पशत्रुभयं भवेत्।
अर्थहानिर्महाक्लेश: शने: प्राणगते रवौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो आँख और मस्तक में रोग, सर्प एवं शत्रु का भय तथा धननाश और क्लेश होता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शने: प्राणगते विधौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा हो तो आरोग्य एवं पुत्र की प्राप्ति, शान्ति तथा पौष्टिक कार्य सम्पन्न एवं देवता और ब्राह्मणों में भक्ति होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

गुल्मरोग: शत्रुभीतिर्मृगया प्राणनाशनम्।
सर्पाग्निविषतो भीति: शने: प्राणगते कुजे।।

शनि की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो गुल्म रोग, शत्रु से भय, मृग के कारा मरण भय एवं सर्प, अग्नि और विष का भय रहता है।

शनि की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

देशत्यागो नृपाद् भीतिर्मोहनं विषभक्षणम्।
वातपित्तकृता पीडा शने: प्राणगतेऽप्यहौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो देशत्याग, राजा से भय, मोहन, विषपान एवं वात पित्तसम्बन्धी रोग से पीड़ा होती है।

शनि की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

सेनापत्यं भूमिलाभ: संगम: स्वजनै: सह।
गौरवं नृपसम्मानं शने: प्राणगते गुरौ।।

शनि की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो सेनानायक, भूमिलाभ, अपने बन्धुओं का संगम, गौरव और राजा से सम्मान प्राप्त होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

आरोग्यं सुखम्पत्तिर्धर्मकर्मादिसाधनम्।

समत्वं सर्वभूतेशु निजप्राणगते बुधे।।

बुध की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो नीरोग, सख-सम्पत्ति -धर्म और कर्म साधन एवं सभी जीवों में समभाव रहता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

वह्नितस्करतो भीति: परमाधिर्विषोद्भव:।

देहान्तकरणं दु:खं बुधप्राणगते ध्वजे।

बुध की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो अग्नि, चोर और परम विष का भय एवं मरणसदृश दु:ख होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

प्रभुत्वं धनसम्पत्ति: कीर्तिर्धर्म: शिवार्चनम्।

पुत्रदारादिकं सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो स्वामित्व, धन-सम्पत्ति और यश, धर्म की प्राप्ति, शिवपूजक, पुत्र और स्त्री से सुख होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादौ बान्धवानां रति: स्त्रिया:।

प्राप्यते स्तेयसम्पत्तिर्बुधप्राणगते रवौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में रवि की प्राणदशा हो तो आन्तरिक सन्ताप, ज्वर, उन्माद, बन्धु और स्त्री में प्रेम और अपहरण किया गया धन प्राप्त होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में चन्द्र का प्राणदशा फल –

स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्ति: कन्यालाभो धनागम:।

लभते सर्वत: सौख्यं बुधप्राणगते विधौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो स्त्री और धनलाभ, कन्याप्राप्ति, धनागम एवं सभी जगहों से सुख की प्राप्ति होती है।

बुध की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

पतित: कुक्षिरोगी च दन्तनेत्रादिजा व्यथा।

अर्शांसि प्राणसन्देहो बुधप्राणगते कुजे।।

बुध की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो पतित कार्य में प्रवृत्ति, उदर, दन्त और नेत्रसम्बन्धी

रोग एवं बवासीर और मरण का भय होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

वस्त्राभरणसम्पत्तिर्वियोगो विप्रवैरिता।
सन्निपातोद्भवं दुःखं बुधप्राणगतेऽप्यहौ।।

बुध की सक्ष्म दशा में राहु की प्राणदश हो तो वस्त्र, आभरण और सम्पत्ति से वियोग, ब्राह्मणों से वैरभाव और सन्निपात रोग होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

गुरुत्वं धनसम्पत्तिर्विद्या सद्गुणसंग्रहः।
व्यवसायेन सल्लाभो बुधप्राणगतौ गुरौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो गौरव, धन-सम्पत्ति और विद्या का लाभ, सद्गुणों की वृद्धि एवं स्व-व्यवसाय में उचित लाभ होता है।

बुध की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

चौर्येण निधनप्राप्तिर्विधनत्वं दरिद्रता।
याचकत्वं विशेषेण बुधप्राणगते शनौ।।

बुध की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदश हो तो चोर के द्वारा ा मरण की संभावनायें, निर्धनता, दरिद्रता और भिक्षावृत्ति होता ी है।

केतु की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

अश्वपातेन घातश्च शत्रुतः कलहागमः।
निर्विचारवधोत्पत्तिर्निजप्राणगते ध्वजे।।

केतु की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो घोड़े से गिरने से घात, शत्रु से कलह एवं विवेकशून्यता से वधजन्य पाप होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मनःसुखम्।
पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतोः प्राणगते भृगौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो क्षेत्र एवं अश्व का लाभ, शत्रुनाश, मानसिक सुख, धन की प्राप्ति एवं खेती और पशुओं की वृद्धि होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

स्तेयाग्निरिपुभीतिश्च धनहानिर्मनोव्यथा।
प्राणान्तकरणं कष्टं केतोः प्राणगते रवौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो चौर, अग्नि और शत्रुभय, धननाश, मानसिक रोग एवं मरणतुल्य कष्ट होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घयात्रा धनं सुखम्।
कर्णे वा लोचने रोगः केतोः प्राणगते विधौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देव और ब्राह्मणें में भक्ति, लम्बी यात्रा, धन का सुख एवं कान और नेत्र में रोग होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

पित्तरोगो नसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः।
स्वबन्धुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे।।

केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो पित्तरोग, नसावृद्धि, बुद्धि में भ्रम, सन्निपात रोग और अपने बन्धुओं से द्वेष होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत्।
स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो स्त्री पुत्रों से विरोध, गृहत्याग एवं अपने साहस से कार्य की हानि होती है।

केतु की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

शस्त्रव्रणैर्महारोगो हृत्पीडादिसमुद्भवः।
सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो शस्त्र से आघात, व्रण, हृदयरोग और स्त्री-पुत्रों से वियोग होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

मतिविभ्रमतीक्ष्णत्वं क्रूरकर्मरतिः सदा।
व्यसनाद् बन्धनं दुःखं केतोः प्राणगते शनौ।।

केतु की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो मतिभ्रम, क्रूर कर्म में प्रवृत्ति, कठिन व्यसन से बन्धन और दु:ख होता है।

केतु की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशाफल –

> **कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम्।**
> **सौख्यं सर्वांगभोग्यं च केतो: प्राणगते बुधे।।**

केतु की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो पुष्प, शय्या, आभूषण, लेपन, सुन्दर भोजन और सुख प्राप्त होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र का प्राणदशा फल –

> **ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च सन्तोषश्च धनागम:।**
> **पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च निजप्राणगते भृगौ।।**

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शुक्र की प्राणदशा हो तो ज्ञान, ईश्वर में भक्ति, सन्तोष, धन का लाभ एवं पुत्र-पौत्रों की वृद्धि होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य का प्राणदशा फल –

> **लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जित:।**
> **उष्णादिरोगजं दु:खं शुक्रप्राणगते रवौ।।**

शुक्र की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो लोक में प्रसिद्धि और सुयश, पुत्रसुख से विहीन एवं उष्ण रोगादि से दु:ख होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा का प्राणदशा फल –

> **देवार्चने कर्मरतिर्मन्त्रतोषणतत्पर:।**
> **धनसौभाग्यसम्पत्ति: शुक्रप्राणगते विधौ।।**

शुक्र की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो देवपूजक, कार्यकुशलता, मन्त्र से सन्तोष एवं धन तथा भाग्योदय होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में मंगल का प्राणदशा फल –

> **ज्वरो मसूरिका स्फोट कण्डू चिपिटकादिका:।**
> **देव ब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे।।**

शुक्र की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो ज्वर, घाव, दाद, खुजली, रोग और देव तथा ब्राह्मण का पूजक होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में राहु का प्राणदशा फल –

नित्यं शत्रुकृता पीडा नेत्रकुक्षिरुजादयः।

विरोधः सुहृदां पीडा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में राहु की प्राणदशा हो तो सदैव शत्रु से पीड़ा, नेत्र, पेट में रोग एवं मित्रों से विरोध के कारण मानसिक पीड़ा होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु का प्राणदशा फल –

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।

छत्रवाहनसम्प्राप्तिः शुक्रप्राणगते गुरौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, पुत्र, स्त्री, धन की वृद्धि एवं छत्र, वाहन आदि की प्राप्ति होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शनि का प्राणदशा फल –

राजोपद्रवजा भीतिः सुखहानिर्महारूजः।

नीचैः सह विवादश्च भृगोः प्राणगते शनौ।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में शनि की प्राणदशा हो तो राजा का उपद्रव, सुखरनाश, रोगभय एवं नीचों के साथ विवाद होता है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में बुध का प्राणदशा फल –

सन्तोषो राजसम्मानं नानादिग्भूमिसम्पदः।

नित्यमुत्साहवृद्धिः स्याच्छुक्रप्राणगते बुधे।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में बुध की प्राणदशा हो तो सन्तोष, राजा से आदर, विभिनन दिशा से भूमि का लाभ एवं सदैव उत्साह की वृद्धि होती है।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में केतु का प्राणदशा फल –

जीवितात्म यशोहानिर्धन धान्य परिक्षयः।

त्यागभोगधनानि स्युः शुक्रप्राणगते ध्वजे।।

शुक्र की सूक्ष्म दशा में केतु की प्राणदशा हो तो जीवन एवं यश की हानि, निर्धनता एवं धान्य रहित होकर केवल दान तथा भोगधन अवशेष रहता है।

बोध प्रश्न : -

1. सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो क्या फल होता है –

   क. भाग्य वृद्धि ख. सुख प्राप्ति ग. बुद्धि परिवर्तन घ. सभी

2. सर्वाधिक दशाओं का विवरण किस ग्रन्थ में मिलता है।
   क. जातकपारिजात ख. वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग. फलदीपिका घ. कोई नहीं
3. शुक्र की सूक्ष्म दशा में गुरु की प्राणदशा हो तो क्या फल मिलता है।
   क. आयु वृद्धि ख. धन लाभ ग. पत्नी प्राप्ति घ. अश्व प्राप्ति
4. केतु की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो कौन सा रोग होता है।
   क. कफ प्रकृति वाला रोग ख. असाध्य रोग ग. पित्त प्रकृति संबंधित रोग घ. ज्वर
5. शनि की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो शरीर के किस अंग में रोग होता है।
   क. आँख और मस्तक में ख. उदर में ग. पैर में घ. छाती में

5.5 सारांश –

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया होगा कि दशाओं के फलाफल ज्ञान क्रम में प्राण दशा के बारे में अब आप अध्ययन करने जा रहे है। आपको यह जानना चाहिए कि दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा प्राण दशा होती है। इसके आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म फलादेश करने करना सरल हो जाता है। यह सूक्ष्म दशा के पश्चात् आता है। प्राण दशा के आधार पर व्यक्ति का एक दिवस का पूरा-पूरा फलादेश किया जा सकता है। यद्यपि इसका ज्ञान कठिन है। इसके आधार पर फलादेश करना भी आजा की स्थिति में दुष्कर है, किन्तु आचार्यों ने जो यह ज्ञान हमें ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से घोर अनुसन्धान के द्वारा दिया है उसका अवलोकन करते है। सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राणदशा हो तो गुदा मैथुन में प्रवृत्ति, विष में बाधा, चौर, अग्नि और राजभय एवं एवं शारीरिक कष्ट होता है।सूर्य की सूक्ष्म दशा में चन्द्रमा की प्राणदशा हो तो सुख, भोजन-सम्पत्ति की प्राप्ति, बुद्धि में परिवर्तन, राजा से ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं सन्त सज्जन उदारादि पुरुषों की कृपा रहती है। सूर्य की सूक्ष्म दशा में मंगल की प्राणदशा हो तो अन्यों के कारण राजा से उपद्रव, द्रव्यनाश, भय और महान हानि होती है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी प्राण दशा फल होती है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

प्राण दशा – दशाओं में सबसे सूक्ष्म दशा होती है।

अनुसन्धान – नवीन खोज।

उदर – पेट

कटि – कमर

दशा – स्थिति

पतित – नीच

अग्नि – आग

द्रव्य – धन

5.7 बोधप्रश्न के उत्तर

1. घ
2. ख
3. क
4. ग
5. क

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. ज्योतिष सर्वस्व – सुरेश चन्द्र मिश्र
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1. वृहत्पराशरहोराशास्त्र - आचार्य पराशर
2. जातकपारिजात – आचार्य वैद्यनाथ
3. सर्वार्थचिन्तामणि – आचार्य वेंकटेश
4. फलदीपिका – मन्त्रेश्वर
5. वृहज्जातक – आचार्य वराहमिहिर

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. प्राण दशा फल से आप क्या समझते है।
2. चन्द्र एवं मंगल ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।
3. शनि ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।
4. पराशर मतानुसार गुरु एवं शुक्र ग्रहों में सभी ग्रहों की प्राण दशा का फल लिखिये।
5. राहु ग्रह का सभी ग्रहों में प्राण दशा का फल लिखिये।

खण्ड - 2

प्रकीर्ण फल विवेचन

इकाई – 1 पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पंचमहाभूत परिचय

1.3.1 पंचमहाभूत फल विचार

1.4 पंचमहापुरुष परिचय एवं फल विचार

1.5 सारांश

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय खण्ड की पहली इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरूष फल विचार। इससे पूर्व आपने दशा अन्तर्दशाओं कासाधन तथा उसके शुभाशुभ फलाफल से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष फल विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

पंचमहाभूत से तात्पर्य हैं – भूमि, जल, वह्नि, आकाश एवं वायु। पंचमहापुरुष के अन्तर्गत रूचक, भद्र, हंस, मालव्य एवं शश योग आते हैं।

आइए इस इकाई में हम लोग 'पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष फल विचार' के बारे में तथा उसके फलित स्कन्ध में वर्णित महत्व को जानने का प्रयास करते है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पंचमहाभूत को परिभाषित कर सकेंगे।
- पंचमहाभूत के अवयवों को समझा सकेंगे।
- पंचमहापुरुष योग क्या है ? इसे समझ लेंगे।
- पंचमहाभूत के फल विचार जान लेंगे।
- पंचमहापुरुष के फल विचार का प्रतिपादन करने में समर्थ हो सकेंगे।

1.3 पंचमहाभूत परिचय

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की वर्तमान दशा के ज्ञानार्थ ऋषियों द्वारा पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया ज्ञान का वर्णन किया गया है। हम सभी जानते है कि मानव शरीर तथा ब्रह्माण्ड का निर्माण भी इन्हीं पंचमहाभूतों (अग्नि, भूमि, वायु, आकाश एवं जल) से मिलकर हुआ है। अत: इन सभी का ज्ञान परमावश्यक है। समस्त वेद एवं वेदांगो या शास्त्रों में इनका उल्लेख हमें प्राप्त होता है। आइए हम सभी महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में कथित पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया का अध्ययन इस इकाई में यहाँ करते है।

आपको जानकर यह हर्ष होगा कि 'वृहत्पराशहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ में आचार्य पराशर जी ने 'पंचमहाभूतफलाध्याय' नामक एक स्वतन्त्र अध्याय का ही लेखन किया है। अत: हम सभी उसका यहाँ अवलोकन कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। सर्वप्रथम महर्षि पराशर जी ने पंचमहाभूतों के अधिपतियों का वर्णन करते हुए कहा है कि –

शिखिभूखाम्बुवातानामधिपा मंगलादय:।
तत्तद्बलवशाज् ज्ञेयं तत्तद्भूतभवं फलम्।।

अर्थात् अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के अधिपति क्रम से मंगलादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) ग्रह होते हैं। जो ग्रह बली हो, उस ग्रह से सम्बन्धित महाभूत का फल जानना चाहिए।

1.3.1 पंचमहाभूत फल विचार

सबले मंगले वह्निस्वभावो जायते नर:।
बुधे महीस्भाव: स्यादाकाशप्रकृतिर्गुरौ।।
शुक्रे जलस्वभावश्च मारुतप्रकृति: शनौ।
मिश्रैर्मिश्रस्वभावश्च विज्ञेयो द्विजसत्तम।।

श्लोक का अर्थ है कि जन्मकाल में या गोचरकाल में यदि मंगल बली हो तो अग्निप्रकृति, गुरु के बली होने पर आकाशप्रकृति, शुक्र बली होने पर जलप्रकृति एवं शनि के बली होने पर वातप्रकृति होता है। अधिक ग्रहों के बली रहने पर मिश्र स्वभाव होता है।

सूर्ये वह्निस्वभावश्च जलप्रकृतिको विधौ।
स्वदशायां ग्रहाश्छायां व्यंजयन्ति स्वभूतजाम्।।

अर्थात् सूर्य के बली होने पर अग्निस्वभाव और चन्द्र के बली होने पर जलस्वभाव होता है। सभी ग्रह अपनी-अपनी दशा में अपने महाभूत से सम्बन्धित छाया का दर्शन कराते हैं।

वह्निस्वभाव युक्त पुरुष का लक्षण

क्षुधार्तश्चपल: शूर: कृश: प्राज्ञोऽतिभक्षण:।
तीक्ष्णो गौरतनुर्मानी वह्निप्रकृतिको नर:।।

वह्नि स्वभाव वाला पुरुष क्षुधा से दुःखी, चंचल, शूर, कृश, बुद्धिमान्, अधिक भोग करने वाला, तीक्ष्ण, गौर वर्ण और अभिमानी होता है।

भूमिस्वभाव युक्त पुरुष का लक्षण

कर्पूरोत्पलगन्धाढयो भोगी स्थिरसुखी बली।

क्षमावान् सिंहनादाश्च महीप्रकृतिको नर:।।

भूतत्त्व वाला पुरुष कपूर तथा कमल के समान गन्ध वाला, भोगी, स्थिर सुख से युक्त, बली, क्षमता करने में सक्षम एवं सिंह के समान शब्द वाला होता है।

आकाश प्रकृतिक पुरुष का लक्षण

शब्दार्थवित् सुनीतिज्ञो प्रगल्भो ज्ञानसंयुत:।
विवृतास्योऽतिदीर्घश्च व्योमप्रकृतिसम्भव:।।

व्योम प्रकृति वाला पुरुष शब्द तथा अर्थ को जानने वाला, नीति का ज्ञाता, चतुर, ज्ञान से युत, अनावृत मुख वाला एवं लम्बे कद वाला होता है।

जलस्वभावयुक्त पुरुष का लक्षण

कान्तिमान भारवाही च प्रियवाक् पृथ्वीपति:।
बहुमित्रो मृदुर्विद्वान् जलप्रकृतिसम्भव:।।

जलप्रकृति वाला व्यक्ति कान्तियुक्त, भार वहन करने वाला, मधुरभाषी, राजा अधिक मित्रों से युक्त, कोमल और विद्वान् होता है।

वायुप्रकृतिक पुरुष का लक्षण

वायुतत्वाधिको दाता क्रोधी गौरोऽटनप्रिय:।
भूपतिश्च दुराधर्ष: कृशांगो जायते जन:।।

वायु तत्व वाला पुरुष दाता, क्रोधी, गौर वर्ण से युक्त, भ्रमणकारक, शत्रु को जीतने वाला एवं दुबले-पतले शरीर वाला होता है।

अग्नि तत्व की छाया

स्वर्णदीप्ति: शुभा दृष्टि: सर्वकार्यार्थसिद्धिता।
विजयो धनलाभश्च वह्निभार्यां प्रजायते।।

जब अग्नि तत्व का उदय होता है तो शरीर में सोने के सदृश कान्ति, सुन्दर दृष्टि, समस्त कार्यों की सिद्धि, विजय और धनलाभ का आधिक्य रहता है।

भूतत्त्व की छाया

इष्टगन्ध: शरीरे स्यात् सुस्निग्धनखदन्तता।
धर्मार्थसुखलाभाश्च भूमिच्छाया यदा भवेत्।।

अर्थात् भूतत्त्व का उदय होने पर शरीर में अनेक प्रकार की सुगन्धि, नाखून, दाँत और केश स्वच्छ तथा धर्म, धन और सुख का अभ्युदय हो जाता है।

व्योमच्छाया-लक्षण

स्वच्छा गगनजा छाया वाक्पटुत्वप्रदा भवेत्।
सुशब्दश्रवणोद्भूतं सुखं तत्र प्रजायते।।

अर्थात् आकाशतत्त्व का उदय होने पर पुरुष में स्वच्छता, सुन्दरता बोलने में पटुता होती है तथा सुन्दर शब्द (गीतादि या भजनादि) श्रवण करने में उसे आनन्दानुभति होती है।

जलच्छाया का लक्षण

मृदुता स्वस्थता देहे जलच्छाया यदा भवेत्।
तदाऽभीष्टरसास्वादसुखं भवति देहिनः।।

जब जलतत्त्व का अभ्युदय हो तो शरीर में मृदुता, स्वस्थता तथा विभिन्न प्रकार के सुन्दर स्वाद वाले भोजन मिलने से सुखानुभति होती है।

वायुतत्त्वच्छाया का लक्षण

मालिन्यं मूढता दैन्यं रोगाश्च पवनोद्भवाः।
तदा च शोकसन्तापौ वायुच्छाया यदा भवेत्।।

जब वायु तत्त्व का उदय हो तो उस समय में शरीर में मलिनता, मूढ़ता, दीनता, वायुसम्बन्धी रोग का उदय एवं शोक और सन्ताप का प्राबल्य रहता है।

एवं फलं बुधैर्ज्ञेयं सबलेषु कुजादिषु।
निर्बलेषु तथा तेषु वक्तव्यं व्यत्ययाद् द्विज।।

इस प्रकार महाभूत (पंच तत्वों) का जो फल ऊपर कहा गया है, वह फल भौमादि ग्रहों के बलवान होने पर पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, अन्यथा बलानुसार फलों में भी अल्पता तारतम्य से समझनी चाहिए।

नीचशत्रुभगैश्चापि विपरीतं फलं वदेत्।
फलाप्तिरबलैः खेटैः स्वप्निचिन्तासु जायते।।

यदि ग्रह स्वनीच, शत्रुराशि आदि अनिष्ट स्थानगत हो तो विपरीत फल समझना चाहिए। जो ग्रह बलहीन हो, उसका फल स्वप्नावस्था में या मानसिक कल्पना में ही प्राप्त होता है।

तदुष्टफलशान्त्यर्थमपि चाज्ञातजन्मनाम्।
फलपक्त्या दशा ज्ञेया वर्तमाना नभःसदाम्।।

अर्थात् जिस जातक का जन्मसमय ज्ञात न हो, उसके उक्त दशाफल के अनुसार वर्तमान ग्रहदशा समझ कर दुष्ट फल हो तो उसके शान्त्यर्थ उक्त ग्रह की आराधना करनी चाहिए।

1.4 पंचमहापुरुष परिचय एवं लक्षण

पंचमहाभूत के ज्ञान हो जाने के पश्चात् पंचमहापुरुष का यहाँ वर्णन किया जा रहा है। वस्तुत: पंचमहापुरुष का सम्बन्ध ज्योतिष शास्त्र में राजयोग से ही है। यह एक प्रकार का अत्यन्त शुभ योग कहा गया है। पंचमहापुरुष योग के अन्तर्गत रूचक, भद्र, हंस, मालव्य एवं शश योग का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। इसके लक्षणों के बारे में हम यहाँ अध्ययन करते हैं -

वृहत्पराशरहोराशास्त्र में कथित पंचमहापुरुष योग लक्षण –

अथ वक्ष्याम्यहं पंच-महापुरुषलक्षणम्।
स्वभोच्चगतकेन्द्रस्थैर्बलिभिश्र कुजादिभिः।
क्रमशो रुचको भद्रो हंसो मालव्य एव च।।
शशश्चैते बुधैः सर्वामहान्तः पुरुषाः स्मृदाः।।

अर्थात् पराशर जी बोले-हे मैत्रेय! अब मैं आपसे पंच महापुरुष के लक्षण कहता हूँ। यदि भौमादि ग्रह बलवान होकर अपने उच्च, स्वगृह या केन्द्र में होते हैं तो जातक क्रमशः रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश नामक प्रसिद्ध महापुरुष होते हैं।

रुचकलक्षण -

दीर्घाननो महोत्साहो स्वच्छकान्तिर्महाबलः।
चारुभ्रूर्नीलकेशश्रच सुरुचिश्रच रणप्रयः।।
रक्तश्यामौऽरिहन्ता च मन्त्रविच्चोरनायकः।
क्रूरो भर्ता मनुष्याणां क्षमाऽड्घ्रिर्द्विजपूजकः।।
वीणावज्रधनुःपाशवृषचक्राडतः करे।
मन्त्राभिचारकुशली दैर्घ्ये चैव शतांगुलः ।
मुखदैर्घ्यसमं मध्यं तस्य विज्ञैः प्रकीर्तितम्।
तुल्यस्तुलासहस्त्रेण रुचको द्विजपुंगव! ।
भुनक्ति विन्ध्यसह्यद्रिप्रदेशः सप्ततिं समाः।
शस्त्रेण वह्निपस वाऽपि स प्रयाति सुरालयम् ।

रुचक नामक पुरुष लम्बे मुख वाला, महान् उत्साही, निर्मल कान्ति वाला, महाबली, सुन्दर भौंह वाला, काले केश वाला, सब वस्तुओं में रुचि रखने वाला, युद्धप्रिय, रक्त कृष्ण वर्ण, शत्रु का हनन करने वाला, मन्त्र को जानने वाला, चोर का नायक, क्रूर स्वभाव वाला, मनुष्यों का स्वामी, दुर्बल पैर वाला, विप्रों का पूजक, हाथ में वीणा, वज्र, धनुष, पाश, वृष चक्रांकित और चक्ररेखा से

युक्त तथा गुह्य विचार एवं मन्त्राभिचार (मारण, उच्चाटनादि) में दक्ष होता है। वह लम्बाई में सौ अड़्गुल, मुख की लम्बाई के समान ही मध्य भाग वाला तथा तौल में एक हजार के समान होता है। वह विन्ध्याचल तथा सह्यचल पर्वत का राजा होकर ७० वर्ष तक राज्य कर ७० वर्ष की आयु में शस्त्र या अग्ति के द्वारा देवलोक में जाता है।

भद्रलक्षण

शार्दूलप्रतिभः पीनवक्षा गजगतिः पुमान्।
पीनाजानुभुजः प्राज्ञश्चतुरस्रश्च योगवित्।।
सात्त्विकः शोभनांघ्रिश्च शोभनश्मश्रुसंयुतः।
कामी शंख गदाचक्र-शर-कुंजरचिह्नकैः ।।
ध्वजलांगल चिह्नश्च चिह्नितांघ्रिकराम्बुजः।
सुनासश्शास्त्रविद् धीरः कृष्णाकुंजितकेशभृत्।।
स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रीणनक्षमः।
ऐश्वर्यं भुज्यते चास्य नित्यं मित्रजनैः परैः।।
तुलया तुलितो भारप्रमितः स्त्रीसुतान्वितः।
सक्षेमो भूपतिः पाति मध्यदेशं शतं समाः।।

अर्थात् सिंह के तुल्य प्रतापी, ऊँचे वक्षः स्थल वाला, हाथी के समान गति वाला, जानुपर्यन्त लम्बी भुजा वाला, पण्डित, चौकोर, योग को जानने वाला, सत्त्व गुणी, सुन्दर चरण और सुन्दर दाढ़ी-मूछ वाला, कामी, शंख-गदा-चक्र-शेर-हाथी-ध्वजा-हल-इन चिन्हों से अंकित हैं चरण और भुज जिनके, सुन्दर नासिका वाला, शास्त्र को जानने वाला, गम्भीर, काले और घुँघराले बालों से सुशोभित, समस्त कार्यों में स्वतन्त्र एवं अपने जनों का भरण-पोषण करने में सक्षम भद्र पुरुष होता है। अपने मित्र जन तथा अन्य जन भी इसके धन का उपभोग करते हैं।

इनका तौल एक भार के तुल्य होता है। यह स्त्री-पुत्र से युक्त, सामर्थ्यवान एवं मध्य देश का पालक होकर एक सौर साल तक जीवित रहता है।

हंस लक्षण –

हंसो हंसस्वरो गौरः सुमुखोन्नतनासिकः।
श्लेष्मलो मधुपिंगाक्षो रक्तवर्णनखः सुधीः।।
पीनगण्डस्थलो वृत्तशिराः सुचरणो नृपः।
मत्स्यांकुश धनुः शंख कंज खट्वांग चिह्नकैः।।

चिहिन्तांघ्रिकरः स्त्रीषु कामार्तो नैति तुष्टताम्।
षण्णवत्यंगुलो दैर्घ्ये जलक्रीडारतः सुखी।।
गंगायमुनयोर्मध्यदेशं पाति शतं समाः।
वनान्ते निधनं याति भुक्त्वा सर्वसुखं भुवि।।

हंस के तुल्य स्वर वाला, सुन्दर मुख और उच्च नाक वाला, कफ प्रकृतिक, मधु के समान पीला नेत्र, लाल नाखून, सुन्दर बुद्धि वाला, मजबूत गण्डस्थल वाला, वृत्ताकार (गोल) शिर वाला एवं सुन्दर चरण वाला राजा होता है। उसके चरण और बाहू मछली, अंकुश, धनुष, शंख, कमल, खटिया के समान रेखाओं से अंकित होते हैं। वह कामी होता है और सम्भोग से तृप्त नहीं होता। वह लम्बाई में ९६ अंगुल का होता है। जलविहार में रत होकर सुखपूर्वक गड्डा तथा यमुना के मध्चय देश का रक्षक होकर समस्त भूमि का सुख भोगकर सौ वर्ष के अनन्तर वन में हंसपुरुष का निधन होता है।

मालव्य पुरुष का लक्षण –

समौष्ठः कृशमध्यश्च चन्द्रकान्तिरूचिः पुमान्।
सुगन्धो नातिरक्तांगो न ह्रस्वो नातिदीर्घकः।।
समस्वच्छरदो हस्तिनाद आजानुबाहुधृक्।
मुखं विश्वांगुलं दैर्घ्ये विस्तारे च दशांगुलम्।।
मालव्यो मालवाख्यं च देशं पाति स सिन्धुकम्।
सुखं सप्ततिवर्षान्तं भुक्त्वा याति सुरालयम्।।

इस श्लोक का अर्थ है कि - सुन्दर ओष्ठ, मध्य भाग पतला, चन्द्रमासदृश सुन्दर कान्ति वाला, शरीर में सुगन्ध वाला, सामान्य रक्त वर्ण वाला, न छोटा और न अधिक लम्बा, बल्कि मध्यम कद वाला, सुन्दर और स्वच्छ दाँत वाला, हाथी के समान शब्द वाला, घुटनों तक लम्बी भुजा वाला एवं १३ अंगुल लम्बाई और चौड़ाई में १० अंगुल मुख वाला मालव्य पुरुष होता है। वह सिन्धु तथा मालव्य देश का सुखपूर्वक पालन करके ७० वर्ष की अवस्था में देवलोक चला जाता है।

शश पुरुष का लक्षण –

तनुद्विजमुखः शूरो नतिह्रस्वः कृशोदरः।
मध्ये क्षामः सुजंघश्च मतिमान पररन्ध्रवित्।।
शक्तो वनाद्रिदुर्गेषु सेनानीर्दन्तुरः शशः।
चंचलो धातुवादी च स्त्रीशक्तोऽधनान्वितः।।

मालावीणामृदंगाऽस्र- रेखांकितकरांघ्रिक:।
भूपोऽयं वसुधा पाति जीवन् खाद्रिसमा: सुखी।।

अर्थात् शरीर, दाँत और मुख से सामान्य आकार वाला, शूर, कमर पतला, बीच में रेशमी, सुन्दर जंघा, बुद्धिमान्, शत्रुओं का छिद्र जानने वाला, वन तथा पर्वत और दुर्ग में रहने वाला, सेना का स्वामी, सामान्यतया ऊँचे दाँत वाला, चंचल, धातुवादी, स्त्री में अनुरक्त एवं दूसरे के धन से युक्त लक्षण वाला शश पुरुष होता है। इसके हाथ और पैर में माला, वीणा, मृदड़ तथा शस्त्र के समान रेखा के चिन्ह होते हैं। यह पृथ्वी के अधिकतर भागों पर ७० वर्ष तक शासन करने के उपरान्त देवलोक में चला जाता है।

बोध प्रश्न –

1. पंचमहाभूत कौन-कौन से है?

क. पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु ख. क्षिति, धूम्र, पावक, आकाश, वायु
ग. पृथ्वी, ग्रह, पावक, आकाश, वायु घ. क्षिति, जल, मेघ, आकाश, वायु

2. मानव शरीर का निर्माण कितने तत्वों से मिलकर हुआ है।

क. ६ ख. ७ ग.८ घ.५

3. जन्मकाल के दौरान जातक का मंगल प्रबल हो तो किस तत्व की अधिकता होगी।

क. वायु ख. आकाश ग. अग्नि घ. जल

4. निम्न में रुचक योग किस ग्रह से बनता है।

क. बुध ख. मंगल ग. शुक्र घ. शनि से

5. मालव्य पुरुष के ओष्ठ कैसा होगा।

क. सुन्दर ख. काला ग. कुरुप घ. कोई नहीं

6. भद्र पुरुष का लक्षण कैसा होगा।

क. चोर ख. राजा ग. सिंह के समान प्रतापी घ. शूरवीर

7. शश नामक योग किस ग्रह से बनता है।

क. बुध ख. मंगल ग. शुक्र घ. शनि से

1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की वर्तमान दशा के ज्ञानार्थ ऋषियों द्वारा पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया ज्ञान का वर्णन किया गया है। हम सभी जानते है कि मानव शरीर तथा ब्रह्माण्ड का निर्माण भी इन्हीं पंचमहाभूतों (अग्नि, भूमि, वायु, आकाश एवं जल) से मिलकर हुआ है। अत: इन सभी का ज्ञान परमावश्यक है। समस्त वेद एवं वेदांगो या शास्त्रों में इनका उल्लेख हमें प्राप्त होता है। आइए हम सभी महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत ज्योतिष शास्त्र में कथित पंचमहाभूत सम्बन्धी छाया का अध्ययन इस इकाई में यहाँ करते है। 'वृहत्पराशहोराशास्त्र' नामक ग्रन्थ में आचार्य पराशर जी ने 'पंचमहाभूतफलाध्याय' नामक एक स्वतन्त्र अध्याय का ही लेखन किया है। अग्नि, भूमि, आकाश, जल और वायु के अधिपति क्रम से मंगलादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) ग्रह होते हैं। जो ग्रह बली हो, उस ग्रह से सम्बन्धित महाभूत का फल जानना चाहिए।

1.6 पारिभाषिक शब्दावली

शकुन – शकुन का शाब्दिक अर्थ है –पक्षी। दूसरा अर्थ निमित्त भी होता है।

पल्ली – छिपकली

अश्व – घोड़ा

गज – हाथी

गौ – गाय

पंचांग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के समूह को पंचांग कहते है।

ज्योतिर्विद – ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला

निमित्त – कारण

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. घ
3. ग
4. ख
5. क
6. ग
7. घ

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशर होरा शास्त्र –

जातक पारिजात –

1.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशर होरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

सूर्य सिद्धान्त

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पंचमहाभूत से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।
2. पंचमहापुरुष के लक्षण लिखिये।
3. पंचमहाभूत का फल लिखिये।
4. रुचक आदि योगों का वर्णन कीजिये।

इकाई - 2 सत्वादि गुणफल

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 सत्वादि गुणफल परिचय
2.4 सत्वादि गुणों का फल
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय खण्ड की दूसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – सत्वादि गुणफल। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े पंचमहाभूत एवं पंचमहापुरुष लक्षण से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'सत्वादिगुण फल' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

'सत्वादि गुण' से तात्पर्य है – सत्व, रज एवं तम गुण। सर्वविदित है कि प्रत्येक मनुष्य में तीन तरह के गुण (सत्व, रज, और तम) पाये जाते हैं। इन्हीं गुणों के अनुसार व्यक्तियों के व्यवहार एवं चरित्र भी होते हैं। अत: इनका ज्ञान भी परमावश्यक है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'सत्वादि गुण फल' के बारे में तथा उसके शुभाशुभ लक्षणों के बारे में जानने का प्रयास करते है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- सत्वादि गुण को परिभाषित कर सकेंगे।
- सत्वादि गुणों के अवयवों को समझा सकेंगे।
- सत्वादि गुणों के कारणों को समझ लेंगे।
- सत्वादि गुणों के लक्षणों को जान जायेंगे।
- सत्वादि गुणों के महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे।

2.3 सत्वादि गुण फल परिचय

भारतीय वैदिक वांग्मय में प्रत्येक मानव के अन्दर गुणत्रय होने की बात कही गयी है। ये तीन गुण हैं – सत्व, रज एवं तम। इन्हीं गुणों के व्यक्ति के भीतर अधिक- कम मात्रा में होनें से तदनुसार उसकी प्रवृत्ति हो जाती है। अर्थात् यदि किसी में सत्व की अधिकता होगी, तो वह व्यक्ति भी सत्य बोलने वाला होगा और सदाचारी होगा। यदि किसी में रजोगुण की अधिकता होगी तो राजसी प्रवृत्ति का होगा। इसी प्रकार यदि किसी में तम गुण की आधिक्ता होगी तो वह आलसी, प्रमादी एवं अहंकारी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।

गुण के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति बदल जाती है, ऐसा आचार्यों के द्वारा कहा गया है। अब

वृहत्पराशर होरा शास्त्र में आचार्य पराशर द्वारा प्रणीत सत्वादि गुण फल का विचार यहाँ आप सभी के लिए किया जा रहा है।

2.4 सत्वादि गुण फल विचार

सर्वप्रथम आचार्य गुणत्रय की फलों की बात करते हुए कहते है कि -

मूल श्लोक: -

अथो गुणवशेनाहं कथयामि फलं द्विज।
सत्वग्रहोदये जातो भवेत् सत्वाधिक: सुधी:।।
रज: खेटोदये विज्ञो रजोगुणसमन्वित:।
तम: खेटोदये मूर्खो भवेज्जातस्तमोऽधिक:।।
गुणसाम्ययुतो जातो गुणसाम्यखगोदये।
एवं चतुर्विधा विप्र जायन्ते जन्तवो भुवि।।
उत्तमो मध्यमो नीच उदासीन इति क्रमात्।
तेषां गुणानहं वक्ष्ये नारदादि प्रभाषितान्।।

अर्थात् जब अधिक सत्व गुण ग्रहों की प्रबलता रहती है तो उस समय उत्पन्न जातक सत्वगुणी और सुन्दर बुद्धिवाला होता है। रजोगुणाधिक समय में उत्पन्न जातक रजोगुण से युक्त एवं विद्वान होता है। तमोगुणाधिक समय में उत्पन्न जातक तमोगुणी एवं विवेकशून्य होता है। गुण-साम्य समय में उत्पन्न जातक मिश्रित गुण वाला और मध्यम बुद्धि का होता है। इस प्रकार उत्तम, मध्यम, अधम, उदासीन से चार प्रकार के जन्तु संसार में उत्पन्न होते हैं। अब यहाँ उनके गुणों को कहा गया है, जिसको नारदादि महर्षियों ने कहा है।

उत्तम पुरुषों के लक्षण-

शमो दमस्तप: शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
अलोभ: सत्यवादित्वं जने सत्वधिके गुणा:।।

इन्द्रिय तथा मन को नियन्त्रण करना, तपस्या, पवित्रता, क्षमा, सरलता, लोभरहित, सत्यवादी और सात्विक गुणों से युक्त उत्तम पुरुष होता है, यह सरस तथा कोमल भी होता है।

मध्यम पुरुषों के गुण-

शौर्यं तेज धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाऽप्यपलायनम्।

साधूनां रक्षणं चेति गुणा ज्ञेयां रजोऽधिके।।

शूरता, तेजस्वी, धैर्य, चतुरता, युद्ध में पीछे न हटना, साधुओं की रक्षा करना रजोगुणाधिक पुरुषों के गुण हैं।

अधम पुरुषों के लक्षण-

लोभश्चासत्यवादित्वं जाडयमालस्यमेव च।
सेवाकर्मपटुत्वंच गुणा एते तमोऽधिके।।

लोभी, असत्य बोलने वाला, मूर्ख, आलसी तथा सेवाकार्य में चतुरता – ये तमोगुणी पुरुषों के गुण हैं।

उदासीन पुरुषों के गुण-

कृषिकर्मणि वाणिज्ये पटुत्वं पशुपालने।
सत्यासत्यप्रभाषित्वं गुणसाम्ये गुणा इमे।।

कृषि कर्म, व्यापार और पशुपालन में पटुता, असत्य तथा सत्य बोलना- ये गुण साम्य सत्व, रज, तममिश्रित उदासीन पुरूषों के लक्षण हैं।

एतैश्च लक्षणैर्लक्ष्य उत्तमो मध्यमोऽधम:।
उदासीनश्च विप्रेन्द्र तं तत्कर्मणि योजयेत्।।

हे विप्र पूर्वोक्त लक्षणों का अवलोकन करके ही पुरुषों के उत्तम, मध्यम, नीच और उदासीन भेद को जानना चाहिए। तदुनसार जो जिस कार्य का सम्पादन करने में सक्षम हो, उसे उसी कार्य में लगाना चाहिए।

द्वाभ्यामेकोऽधिको यश्च तस्याधिक्यं निगद्यते।
अन्यथा गुणसाम्यं च विज्ञेयं द्विजसत्तम्।।

पूर्वोक्त सत्व, रज, तम- इन तीनों गुणों में जो एक गुण, शेष दो गुणों से प्रबल हो उसकी अधिकता मानी जाती है। इसके विपरीत अर्थात् किसी भी एक का बल शेष दो से अधिक न होने पर पर गुणसाम्य माना जाता है।

गुणज्ञान का महत्व –

सेव्य सेवकयोरेवं कन्यका वरयोरपि।
गुणै: सदृशयोरेव प्रीतिर्भवति निश्चला।।

स्वामी तथा सेवक में तथा वर एवं कन्या में यदि तुल्य गुण हो तो दोनों में सुदीर्घकालिक प्रेम होता है।

उदासीनोऽधमस्यैवमुदासीनस्य मध्यम:।

मध्यमस्योत्तमो विप्र प्रभवत्याश्रयो मुदे।।

पूवोक्त ४ प्रकार के मनुष्यों में अधम का स्वामी उदासीन, उदासीन का स्वामी मध्यम एवं मध्यम का स्वामी उत्तम जन हो तभी परस्पर प्रेम और आनन्दजनक सुख होता है।

अतोऽवरा वरात् कन्या सेव्यत: सेवकोऽवर:।
गुणैस्तत: सुखोत्पत्तिरन्यथा हानिरेव हि।।

वर से कन्या एवं स्वामी से सेवक गुण में कम हो तो आपस में प्रेम और सुख होता है। इससे अन्यथा कन्या से वर एवं सेवक से स्वामी यदि हीन वर्ण का हो तो वहाँ सदैव हानि ही होती है।

वीर्यं क्षेत्रं प्रसूतेश्च समय: संगतिस्तथा।
उत्तमादिगुणे हेतुर्बलवानुत्तरोत्तरम्।।

माता, पिता, जन्मसमय, संसर्गजन्य गुण- ये सभी उत्तमादि गुणों के कारण होत है। इनमें उत्तरोत्तर हेतु बलवान होता है।

अत: प्रसूतिकालस्य सदृशे जातके गुण:।
जायते तं परीक्ष्यैव फलं वाच्यं विचक्षणै:।।

इसलिए जन्मकाल में जिस गुण का प्राबल्य रहता है वही गुण जातक में भी प्राप्त होता है। अत: जन्मकाल की सम्यक् प्रकार से परीक्षा करके ही फलादेश करना चाहिए।

काल: सृजति भूतानि पात्यथो संहरत्यपि।
ईश्वर: सर्वलोकानामव्ययो भगवान विभु:।।

समस्त लोकों के स्वामी अविनाशी एवं व्यापक भगवान काल ही समस्त चराचर जगत् के उत्पादक, पालक और संहारक भी हैं।

तच्छक्ति: प्रकृति: प्रोक्ता मुनिभिस्त्रिगुणात्मिका।
तथा विभक्तो ऽव्यक्तोऽपि व्यक्तो भवति देहिनाम्।।

उस काल भगवान की त्रिगुणात्मिका शक्ति ही प्रकृति कही जाती है, जिससे विभाजित भगवान अव्यक्त काल भी व्यक्त होते हैं।

चतुर्धाऽवयवास्तस्य स्वगुणैश्च चतुर्विध:।
जायन्ते ह्युत्तमो मध्य उदासीनोऽधम: क्रमात्।।

उस व्यक्त स्वरूप वाले भगवान काल के अपने प्रकृति गुण के अनुसार क्रम से उत्तम, मध्यम, उदासीन तथा अधम- ये ४ प्रकार के अवयव होते हैं।

उत्तमे तूत्तमो जन्तुर्मध्यमेंग च मध्यम:।

उदासीने ह्युदासीनो जायते चाऽधमेऽधमः।।

उस व्यापक भगवान काल के उत्तम अंग में उत्तम जीव (चर या अचर), मध्यम अंग में मध्यम जन्तु, उदासीन अंग में उदासीन जन्तु और अधम अंग में अधम प्राणी की उत्पत्ति होती है।

उत्तमांग शिरस्तस्य मध्यमांगमुर:स्थलम्।
जंघाद्वयमुदासीनमधमं पदमुच्यते।।

व्यापक काल भगवान का उत्तम अंग मस्तक, मध्यम अंग दोनों हाथ तथा छाती, उदासीन अंग दोनों जंघा तथा अधम अंग दोनों पैर कहा गया है।

एवं गुणवशादेव कालभेद: प्रजायते।
जातिभेदस्तु तद्भेदाज्जायतेऽत्र चराऽचरे।।

इस प्रकार गुण के भेद से ही कालभेद हो जाता है और कालभेद के अनुरूप ही चर तथा अचर में जातिभेद हो जाता है।

एवं भगवता सृष्टं विभुना स्वगुणै: समम्।
चतुर्विधेन कालेन जगदेतच्चतुर्विधम्।।

इस प्रकार चतुर्विध परमेश्वर काल ने अपने गुणों के अनुरूप ही संसार को चार भेदों से समन्वित बताया है।

बोध प्रश्न -

1. गुणत्रय से तात्पर्य है।
   क. सत्व, रज एवं तम   ख. रज, नभ, तम   ग. सत्व, वायु, अग्नि घ. कोई नहीं।
2. तमोगुणी होन से व्यक्ति होता है।
   क. अभिमानी   ख. सात्विक   ग. परोपकारी   घ. राजा
3. काल के कितने अवयव होते हैं।
   क. २   ख.४   ग.६   घ. ३
4. लोभी निम्न में किसका गुण है।
   क. रज   ख. तम   ग. सत्व   घ. कोई नहीं
5. मन को नियन्त्रण में रखना किस पुरुष का गुण है।
   क. उत्तम   ख. मध्यम   ग. अधम   घ. राजा

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि भारतीय वैदिक वांग्मय में प्रत्येक मानव के अन्दर गुणत्रय होने की बात कही गयी है। ये तीन गुण हैं – सत्व, रज एवं तम। इन्हीं गुणों के व्यक्ति के भीतर अधिक- कम मात्रा में होनें से तदनुसार उसकी प्रवृत्ति हो जाती है। अर्थात् यदि किसी में सत्व की अधिकता होगी, तो वह व्यक्ति भी सत्य बोलने वाला होगा और सदाचारी होगा। यदि किसी में रजोगुण की अधिकता होगी तो राजसी प्रवृत्ति का होगा। इसी प्रकार यदि किसी में तम गुण की आधिक्ता होगी तो वह आलसी, प्रमादी एवं अहंकारी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।

गुण के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति बदल जाती है, ऐसा आचार्यो के द्वारा कहा गया है। अब वृहत्पराशर होरा शास्त्र ग्रन्थ में प्रणीत सत्वादि गुणों का फल इस इकाई में वर्णित है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

सत्वादि गुण – सत्व, रज, तम गुणों को सत्वादि गुण कहा जाता है।

गुण त्रय – सत्वादि तीन गुणों को गुणत्रय कहा जाता है।

सात्विक – सत्य बोलने वाला, सदाचारी, धर्मात्मा, साधु।

राजसी – विलासी जीवन जीने वाला।

तामसी – अभिमानी, राक्षस।

पंचमहाभूत – अग्नि, वायु, आकाश, जल, पृथ्वी

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. क
3. ख
4. ख
5. क

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशर होरा शास्त्र –

जातक पारिजात –

2.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशर होरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

सूर्य सिद्धान्त

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सात्विक गुण से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।
2. सात्विक गुणों के फल लिखिये
3. उत्तम, मध्यम एवं अधम पुरुषों का वर्णन करते हुए उनका फल लिखिये।
4. फलित ज्योतिष में सात्विक गुण फल का महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई - 3 मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मानव शरीर के अंगों का लक्षण परिचय

3.4 नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण

3.5 सारांश

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण। इससे पूर्व आपने फलित या होरा ज्योतिष से जुड़े विभिन्न विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'शरीर के अंगों का लक्षण' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

ज्योतिष शास्त्र में कथित मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का ज्ञान विविध फलित ग्रन्थों के आधार पर हम इस इकाई में करने जा रहे हैं।

आइए इस इकाई में हम लोग 'मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण' के बारे में जानने का प्रयास करते है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- शरीर के अंगों के लक्षण को परिभाषित कर सकेंगे।
- स्त्रियों के विभिन्न अंगों के लक्षण को जान जायेंगे।
- पुरुषों के अंगों का लक्षण समझ लेंगे।
- शरीर के अंगों के लक्षण को प्रतिपादित करने में समर्थ हो सकेंगे।
- शरीर अंगों के लक्षण के महत्व को बता सकेंगे।

3.3 मानव शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण परिचय

ज्योतिष शास्त्र में ऋषियों ने निरन्तर अनुसन्धान कर मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण को बतलाया है। शीर्ष से पाद (पैर) तक मानव शरीर के विभिन्न अंगों की आकृतियों एवं उनके रूपों तथा लक्षणों के आधार पर अलग-अलग फल कहे गये हैं। वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थ में आचार्य पराशर ने स्त्री के शरीर के विभिन्न अंगों को अंगलक्षणाध्याय (८३ वाँ अध्याय) में विस्तृत रूप में प्रतिपादित किया है। उनका कथन है कि स्त्रियों के समान ही पुरुषों के अंगों का भी लक्षण जानना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य के शरीरांगों की बात करें तो सबमें कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है, जैसे कोई मोटा होता है कोई पतला, कोई गोरा कोई काला, किसी की आँखें बड़ी होती है किसी की छोटी, किसी के बाल लम्बे होते हैं, किसी के छोटे, किसी के घुँघराले तो किसी के सीधे।

किसी का ओष्ठ काला तो किसी का लाल होता है। किसी की कमर मोटी होती है, तो किसी की पतली, किसी के नख खुदरे होते है, तो किसी के चिकने आदि इत्यादि। इन्हीं सभी लक्षणों एवं गुणों के आधार पर शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का विचार किया जाता है।

हम जानते हैं कि सृष्टि की क्षमता नारी के पास होती है। अत: सृष्टि, समाज व परिवार में स्त्रियों का विशेष योगदान है। अत: स्त्रियों की प्रधानता को देखते हुए ऋषियों ने उनके शरीर के विभिन्न अंगों का जो लक्षण कहा है, उसे यहाँ आप लोगों के ज्ञानार्थ वर्णन किया जा रहा है।

मानव शरीर के विभिन्न अंगों से अभिप्राय - शीर्ष (मस्तक), मुख, आँख, कान, दन्त, केश, हस्त, हृदय, ग्रीवा, उदर, छाती, स्तन, नख, पीठ, पैर, नितम्ब, गुह्यमार्ग, पादतल, अँगुली, जानु, उरु, जंघा आदि से हैं। कुछ विशेष एक-दो अंग को छोड़ दिया जाय तो पुरुष एवं स्त्रियों दोनों में ये सभी अंग होते हैं।

3.4 नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण विचार

सर्वप्रथम मैत्रेय मुनि के कहने पर आचार्य पराशर जी ने स्त्रियों के अंग लक्षणों को बताते हुए कहा कि- **मूल श्लोक:-**

बहुधा भवता प्रोक्तं जन्मकालात् शुभाऽशुभम्।
श्रोतुमिच्छामि नारीणामंगचिह्नैः फलं मुने।।

अर्थात् मैत्रेय ने कहा-हे मुने! अपने जन्मकालिक लग्न के अनुसार बहुत से शुभाशुभ फलों को कहा, अब मैं नारियों के अंग लक्षण के माध्यम से शुभाशुभ फल सुनना चाहता हूँ।

पराशर उवाच –

श्रृणु विप्र प्रवक्ष्यामि नारीणामंगलक्षणम्।
फलं यथाऽऽह पार्वत्यै भगवान् शंकरस्तथा।।

श्लोक का अर्थ है कि पराशर ने कहा-हे विप्र! पूर्व समय में जिस प्रकार भगवान् शंकर ने पार्वती को नारियों के अंग लक्षण द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया था, उसी प्रकार मैं भी आपको नारियों के अंगलक्षण द्वारा शुभाशुभ फल बतलाता हूँ।

पादतल लक्षण-

स्निग्धं पादतलं स्त्रीणां मृदुलं मांसलं समम्।
रक्तमस्वेदमुष्णं च बहुभोग- प्रदायकम्।।
विवर्णं परुषं रूक्षं खण्डितं विषमं तथा।

सूर्याकारंच शुष्कं च दुःखदौर्भाग्यदायकम्।।

जन्मकाल में जिस स्त्री के पैर के तलुए (निचला भाग) चिकने, कोमल, पुष्ट, सम (न अधिक बड़ा, न छोटा), रक्त, पसीने से हीन और गरम हों वह स्त्री अधिक भोग करने वाली होती है। जिसके तलुए खराब वर्ण के, कठोर, रूखे, कटे-फटे, विषम, टेढ़े-मेढ़े, सूर्प के सदृश और शुष्क हों तो वह स्त्री दुःख तथा दुर्भाग्य का भोग करने वाली होती है।

पादतलरेखा –

शंख-स्वस्तिक-चक्राऽब्ज ध्वज-मीनाऽऽतपत्रवत्।
यस्याः पादतले चिह्नं सा ज्ञेया क्षितिपांगना।।
भवेत् समस्तभोगाय तथा दीर्घोर्ध्वरेखिका।
रेखाः सर्पाऽऽखु- काकाभा दुःखदारिद्रयसूचिकाः।।

जिस स्त्री के पादतल में शंख, स्वस्तिक, चक्राकार, कमल, ध्वज, मछली एवं छाता के चिन्ह अंकित हों एवं ऊर्ध्व रेखा लम्बी हो तो वह स्त्री बहुत सुख भोगने वाली रानी होती है। जिस स्त्री के पादतल में सर्प, मूषक या कौवे के समान चिन्ह हो वह स्त्री दुःख भोगने वाली दरिद्रा होती है।

पादनखलक्षण-

रक्ताः समुन्नताः स्निग्धा वृत्ताः पादनखाः शुभाः।
स्फुटिताः कृष्णवर्णाश्च ज्ञेया अशुभसूचकाः।।

जिस स्त्री के पैर के नाखून लाल वर्ण के, ऊँचे, गोलाकार एवं चिकने हों तो वे शुभदायक होते हैं। जिसके पैर के नाखून फटे हुए और काले हों, वे अशुभता को सूचित करते हैं।।७।।

अंगुष्ठलक्षण –

उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटो दुःखदारिद्रयसूचक।।

जिस स्त्री के पैर का अँगूठा ऊँचा, पुष्ट और गोलाकार हो, वह अतुल भोग को भोगने वाली होती है, साथ ही यदि अंगूठा टेढ़ा, छोटा एवं चिपटा हुआ हो तो वह दुःख एवं दरिद्रता का सूचक होता है।

पाद के अंगुलियों का लक्षण –

मृदवोऽङ्गुलयः शस्ता घना वृत्ताश्च मांसलाः।
दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा कृशाभिर्धनवर्जिता।।

पैर की अंगुलियाँ कोमल, घनी, वृत्ताकार और पुष्ट हों, तो शुभकारक; लम्बी हों तो कुलटा एवं पतली अंगुली होने पर स्त्री धन से हीन होती है।

भवेद्ध्रस्वाभिरल्पायुर्विषमाभिश्च कुट्टनी
चिपटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिश्च निर्धना।
यस्या मिथ: समारुढा: पादांगुल्यो भवन्ति हि।
बहूनपि पतीन् हत्वा परप्रेष्या च सा भवेत्।।

जिस स्त्री के चरण की अंगुलियाँ छोटी हों वह अल्पायु होती है। विषम (छोटी-बड़ी, टेढ़ी-मेढ़ी) हो तो कु...नी, चिपटी हो तो दासी, छिद्र वाली हो तो निर्धनी एवं जिसकी अंगुलियाँ ऊपर उठी हों वह बहुत पतियों का हनन कर अन्त में दूसरे की सेविका होकर जीवन-यापन करने वाली होती है।

यस्या: पथि चलन्त्याश्च रजो भूमे: समुच्छलेत्।
सा पांसुला भवेन्नारी कुलत्रयविघातिनी।।
यस्या: कनिष्ठिका भूमिं गच्छन्त्या न परिस्पृशेत्।
सा हि पूर्वपतिं हत्वा द्वितीयं कुरुते पतिम्।।

जिस स्त्री के मार्ग में चलने पर धूल उड़े वह स्त्री तीनों कुल में लांछन लगाने वाली कुलटा होती है। जिस स्त्री के चलने पर कनिष्ठिका अंगुली से भूमि का स्पर्श न हो, वह स्त्री पूर्व पति का हनन कर दूसरा पति बना लेती है।

मध्यमाऽनासिका चापि यस्या भूमिं न संस्पृशेत्।
पतिहीना च सा नारी विज्ञेया द्विजसत्तम।।
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठाद् व्यतिरेकिणी।
कन्यैव दूषिता सा स्यात् कुलटा च तदग्रत:।।

जिस स्त्री के चलने पर मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों से भूमि का स्पर्श न हो, वह नारी पतिहीन (विधवा) होती है। जिस स्त्री के अंगूठे के अतिरिक्त उसके ऊपर भी अंगुली हो, वह कन्यावस्था में ही पुरुष के स... से दूषित कुलटा भी होती है।

पादपृष्ठ लक्षणम् –

उन्नतं पादपृष्ठं चेत् तदा राज्ञी भवेद् ध्रुवम्।

अस्वेदमशिराढयंच मांसलं मसृणं मृदु।।
अन्यथा धनहीना च शिरालं चेत्तदाऽध्वगा।
रोमाढयं चेद् भवेद्दासी निर्मासं यदि दुर्भगा।।

जिस स्त्री का पादपृष्ठभाग उन्नत हो एवं पसीने से रहित, शिरारहित, पुष्ट, चिकना और कोमल हो वह रानी होती है। इसके विपरीत होने पर धन से हीन दरिद्रा होती है। पाद का पृष्ठभाग शिरादृष्ट हो तो मार्ग में भ्रमण करने वाली, रोमसहित हो तो दासी और माँसरहित हो तो दुर्भगा होती है।

पैर के पिछले भाग का लक्षण –

सुभगा समपार्ष्णि: स्त्री पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा।
कुलटोन्नत पार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिश्च दु:खिता।।

जिस स्त्री के पैर का पिछला भाग (एड़ी) बराबर हो वह सुभगा, स्थूल हो तो दुर्भगा, ऊँचा रहने पर कुलटा एवं लम्बा हो तो दुःखभोगिनी होती है।

जंघा लक्षण –

अरोमे च समे स्निग्धे यस्य जंघे सुवर्तुले।
विसिरे च सुरम्ये सा राजपत्नी भवेद् ध्रुवम्।।

जिस स्त्री का जंघा (पैर के ऊपर एवं घुटने के नीचे का भाग) रोमरहित, समान, चिकना, गोलाकार, शिराहीन एवं देखने में सुन्दर हो, वह स्त्री राजपत्नी होती है।

जानु लक्षण –

वर्तुलं मांसलं स्निग्धं जानुयुग्मं शुभप्रदम्।
निर्मासं स्वैरचारिण्या निर्धनायाश्च विश्लथम्।।

जिस स्त्री का जानु (घुटना) गोलाकार, पुष्ट तथा चिकना हो तो वह उसके लिए शुभप्रद होता है। मांसहीन हो तो वह स्त्री स्वच्छन्द घूमने वाली एवं शिथिल हो तो धनहीन दरिद्रा होती है।।२०।।

ऊरु लक्षण –

घनौ करिकराकारौ वर्तुलो मृदुलौ शुभौ।
यस्या ऊरु शिराहीनौ सा राज्ञी भवति ध्रुवम्।।
चिपिटौ रोमशौ यस्या विधवा दुर्भगा च सा।।

जिस स्त्री का उरु (जाँघ) हाथी के सूँड के समान गोलाकार हो, घने (मिले हुए), कोमल एवं शिरा से

रहित हो, वह स्त्री रानी होती है। जिस स्त्री का जाँघ चिपटा और रोमयुक्त हो वह स्त्री विधवा और दुर्भगा होती है।

कटि लक्षण –

चतुर्भिर्विंशतियुतैरंगुलैश्च समा कटिः।
समुन्नत नितम्बाढया प्रशस्ता स्यात् मृगीदशाम्।।

जिस स्त्री की कटि (कमर) २४ अंगुल हो, नितम्ब उन्नत हो तो ऐसी मृगनयनी स्त्री सौभाग्यवती होती है।

विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः।
ह्रस्वाः रोमैः समायुक्ता दुःखवैधव्यसूचिका।।

जिस कन्या की कटि टेढ़ी, चिपटी, लम्बी, मांसरहित, संकुचित, छोटी एवं रोमयुक्त हो, वह स्त्री दुःख तथा वैधव्य को प्राप्त करने वाली होती है।

नितम्बलक्षण –

नितम्बः शुभदः स्त्रीणामुन्नतो मांसलः पृथुः।
सुखसौभाग्यदः प्रोक्तो ज्ञेयो दुःखप्रदोऽन्यथा।।

स्त्री का उन्नत, पुष्ट एवं स्थूल नितम्ब सुख-सौभाग्यदायक होता है, इससे विपरीत होने पर दुःखप्रद होता है।

भग लक्षण –

स्त्रीणां गूढमणिस्तुंगो रक्ताभो मुदुरोमकः।
भगः कमठपृष्ठाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः।।

स्त्री का भग यदि छिपा हुआ, मणितुल्य, उच्च लाल वर्ण का, मुलायम रोम से युक्त, कछुए के पीठ के सदृश उन्नत एवं पीपल के पत्ते के तुल्य हो तो उसे शुभप्रद माना गया है।

कुरंगखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः।
रोमशो दृश्याशश्च विवृतास्योऽशुभप्रदः।।

मृग के खुर के समान, चूहे के उदर (पेट) के तुल्य, कठोर रोमयुक्त, ऊँची मणि वाला एवं खुला मुख वाला भग अशुभप्रद कहा गया है।

वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रजो दक्षिणोन्नतः।
शंखावर्तो भगो यस्याः सा विगर्भाऽङ्गना मता।।

जिस स्त्री का भग बाँयीं ओर ऊँचा हो तो वह भग कन्या सन्तानकारक एवं दक्षिण तरफ उन्नत हो तो वह पुत्र सन्तानकारक होता है। शंख के तुल्य वलय वाला भग हो तो उस भग द्वारा गर्भ धारण नहीं होता।

वस्ति लक्षण –

मृद्वी वस्तिः प्रशस्ता स्याद् विपुलाल्पसमुन्नता।
रोमाढया च शिराला च रेखांका न शुभप्रदा।।

जिसकी वस्ति (नाभि से नीचे एवं योनि से ऊपर का भाग) मुलायम, बड़ा एवं थोड़ा ऊँचा हो तो उसे शुभकारक जानना चाहिए। रोग से युक्त, शिरासहित एवं रेखायुक्त वस्ति को अशुभप्रद जानना चाहिए।

नाभिलक्षण –

गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभिः सर्वसुखप्रदा।
व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्ता न शोभना।।

जिस स्त्री की नाभि दबी हुई एवं दक्षिण तरफ घुमी हुई हो तो वह समस्त सुख प्रदान करने वाली होती है तथा कुछ ऊपर की ओर उठी हुई, वाम तरफ घुमी हुई और उठी हुई ग्रन्थि वाली हो तो वह अशुभकारक होती है।

कुक्षि लक्षण-

पृथुकुक्षिः शुभा नारी सूते सा च बहून सुतान्।
भूपतिं जनयेत् पुत्रं मण्डूकाभेन कुक्षिणा।।

जिस स्त्री की कुक्षि (पेट) विस्तारयुक्त हो तो वह शुभ होती है और अधिक पुत्रों को उत्पन्न करने में सक्षम होती है तथा जिसका पेट मेढ़क के समान हो, उसका पुत्र राजा होता है।

उन्नतेन वलीभाजा सावर्तेन च कुक्षिणा।
वन्ध्या संन्यासिनी दासी जायते क्रमशोऽबला।।

उन्नत कुक्षि वाली स्त्री वन्ध्या होती है, वलीयुत उदर वाली संन्यासिनी होती है एवं भँवरयुक्त कुक्षि वाली स्त्री दासी होती है।

पार्श्वलक्षण-

समे समांशे मृदुले पार्श्वे स्त्रीणां शुभप्रदे।
उन्नते रोमसंयुक्ते शिराले चाऽशुभप्रदे।।

स्त्री का पार्श्व भाग समान, पुष्ट एवं कोमल हो तो शुभप्रद होता है। यदि पार्श्व भाग उन्नत रोमयुक्त एवं शिरा से व्याप्त हो तो अशुभ होता है।

हृदय लक्षण –

निर्लोमं हृदयं स्त्रीणां समं सर्वसुखप्रदम्।
विस्तीर्णा च सलोमं च विज्ञेयमशुभप्रदम्।।

जिस स्त्री का हृदय रोमरहित और समान हो तो वह समस्त सुखों को देने वाला होता है, साथ ही हृदय यदि रोमयुत और विस्तृत हो तो उसे अशुभप्रद समझना चाहिए।

कुच लक्षण –

समौ पीनौ घनौ वृत्तौ दृढौ शस्तौ पयोधरौ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ स्त्रीणां नैव शुभप्रदौ।।

जिस स्त्री के दोनों स्तन बराबर, पुष्ट, घने, वृत्ताकार और दृढ़ हों तो वे शुभप्रद होते हैं। स्तन के अग्रभाग स्थूल, दोनों भिन्न-भिन्न और माँसरहित शुष्क हों तो उन्हें अशुभकारक जानना चाहिए।

दक्षिणोन्नतवक्षोजा नारी पुत्रवती मता।
वामोन्नतस्तनी कन्याप्रजा प्रोक्ता पुरातनैः।।

जिस स्त्री का दहिना कुच उन्नत हो वह पुत्रवती होती है और वाम स्तन के उन्नत होने पर कन्यावती होती है-ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है।

स्कन्धलक्षण –

स्त्रीणां स्कन्धौ समौ पुष्टौ गूढसन्धी शुभप्रदौ।
रोमाढयावुन्नतौ वक्रौ निर्मासांवशुभौ स्मृतौ।।

जिस स्त्री के कन्धे सम (न ऊँच, न नीच) एवं पुष्ट हों, सन्धि दबे हुए हों तो शुभप्रद होती है। रोम के सहित, उन्नत, वक्र (टेढ़े-मेढ़े) एवं मांसरहित हों तो उन्हें अशुभप्रद कहा गया है।

कक्ष काँख लक्षण –

सुसूक्ष्मरोमे नारीणां पुष्टे स्निग्धे शुभप्रदे।

कक्षे शिराले गम्भीरे न शुभे स्वेदमेदुरे।।

स्त्री की कक्षा (काँख) सुन्दर, सूक्ष्म रोमों से युक्त, पुष्ट एवं मुलायम रहने पर शुभप्रद होती है। शिरायुक्त, गहरी, मांसरहित एवं पसीने से युक्त काँख अशुभप्रद कही गई है।

भुज लक्षण-

गूढास्थी कोमलग्रन्थी विशिरौ च विरोमकौ।
सरलौ वर्तुलौ चैव भुजौ शस्तौ मृगीदृशाम्।।
निर्मांसौ स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ चैव शिराततौ।
वक्रौ भुजौ च नारीणां क्लेशाय परिकीर्तितौ।।

जिस स्त्री की भुजा दबी हुई हड्डियों वाली हो, गाँठ कोमल हो, शिरा तथा रोम से हीन हो एवं सरलाकार गोल हो तो वह भुजा शुभप्रद और मांसहीन स्थूल रोमों से युक्त, छोटी, शिरायुत, टेढ़ी भुजा स्त्री के लिए क्लेश प्रदान करने वाली होती है।

हस्त अंगुष्ठ लक्षण –

सरोजमुकुलाकारौ करांगुष्ठौ मृगीदृशाम्।
सर्वसौख्यप्रदौ प्रोक्तौ कृशौ वक्रौ च दुःखदौ।।

जिस स्त्री के हाथ के अंगूठे कमल के कली के समान हों तो उसे समस्त सुखों को देने वाला कहा गया है। यदि कृश, दुबला-पतला, टेढ़ा अंगुष्ठ हो तो दुःखदायक होता है।

करतल लक्षण –

स्त्रीणां करतलं रक्तं मध्योन्नतमरन्ध्रकम्।
मृदुलं चाल्परेखाढयं ज्ञेयं सर्वसुखप्रदम्।।
विधवा बहुरेखेण रेखाहीनेन निर्धना।
भिक्षुका च शिराढयेन नारी करतलेन हि।।

जिस स्त्री की हथेली रक्त वर्ण, मध्य भाग सामान्य ऊँची, अंगुली मिलाने पर छिद्रहीन, कोमल एवं अल्प रेखा से युत हो तो सब प्रकार से सुखप्रद जानना चाहिए। बहुत रेखा वाली हो तो विधवा, रेखा से हीन हो तो दरिद्रा एवं हथेली में शिरा हो तो वह स्त्री भिक्षुणी (भीख माँगने वाली) होती है।

करपृष्ठ लक्षण –

पाणिपृष्ठं शुभं स्त्रीणां पुष्टं मृदु विरोमकम्।

शिरालं रोमां निम्नं दुःख दारद्रिय सूचकम्।।

स्त्री के हाथ का पृष्ठभाग पुष्ट, मुलायम और रोम से हीन रहने पर शुभ होता है। वही यदि शिरा से युक्त, रोमसहित एवं दबा हुआ हो तो दुःख तथा दरिद्रता की सूचना देता है।

करतल रेखा लक्षण –

यस्या: करतले रेखा व्यक्ता रक्ता च वर्तुला।
स्निग्धा पूर्णा च गम्भीरा सा सर्वसुखभागिनी।।
मत्स्येन सुभगा ज्ञेया स्वस्तिकेन धनान्विता।
राजपत्नी सरोजेन जननी पृथिवीपते:।
सार्वभौमप्रिया पाणौ नद्यावर्ते प्रदक्षिणे।।
शंखातपत्रकमठैर्भूपस्य जननी भवेत्।।

जिस स्त्री के हथेली की रेखा स्पष्ट, लाल वर्ण, गोल, कोमल, पूर्ण एवं दबी हुई हो वह सभी सुखों का भोग करने वाली होती है। यदि हथेली में मत्स्य रेखा हो तो सौभाग्ययुक्त, स्वस्तिक चिन्ह हो तो धनवती एवं कमल के तुल्य रेखा हो तो राजपत्नी तथा राजमाता होती है। नदी के समान रेखा होने पर वह स्त्री चक्रवर्ती राजा की प्राणप्रिया होती है। स्त्री का हाथ यदि शंख, छत्र और कछुए के सदृश चिन्हों से युक्त हो तो वह स्त्री राजमाता होती है।

रेखा तुलाकृति: पाणौ यस्या: सा हि वणिग्वधू:।
गज वाजि वृषाभा वा करे वामे मृगीदश:।।

जिस स्त्री के वाम हथेली में तराजू अथवा हाथी, घोड़ा या बैल के तुल्य रेखा हो तो वह स्त्री व्यापारी की पत्नी होती है।

रेखा प्रसादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम्।
कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा।।
चामरांकुश चापैश्च राजपत्नी पतिव्रता।
त्रिशूलाऽसि गदा शक्ति दुन्दुभ्याकृति रेखया।।

जिस स्त्री की हथेली में दरबार (महल) या वज्र के समान रेखा हो, वह स्त्री शास्त्र-निर्माता या संप्रदायसंस्थापक पुत्र को उत्पन्न करने वाली होती है। जिसकी हथेली में बैलगाड़ी, हल या जूआ सदृश चिन्ह हो वह स्त्री कृषक की पत्नी होती है। जिसके हाथ में चँवर, अंकुश, त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति एवं दुन्दुभि के तुल्य रेखा हो, तो ऐसी स्त्री पतिव्रता राजपत्नी होती है।

जिस स्त्री के अंगुष्ठमूल से निकल कर कनिष्ठा तक रेखा गई हो वह नारी पति का हनन करने वाली होती है। ऐसी स्त्री को दूर से ही त्याग देना चाहिए। जिसके हाथ में कौआ, मेढ़क, श्रृंगार, भेड़, बिच्छू, सर्प, गदहा, उष्ट्र या बिल्ली के सदृश रेखा हो वह स्त्री दुःख भोगने वाली होती है।

अंगुलि लक्षण –

मृदुलाश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः क्रमात् कृशाः।
अरोमकाः शुभाः स्त्रीणामंगुल्यः परिकीर्तिताः।।
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विमला रोमसंयुताः।
बहुपर्वयुता वाऽपि पर्वहीनश्च दुःखदा।।

जिस स्त्री के हाथ की अंगुलियाँ कोमल हों, सुन्दर पर्वों से युत हों, दीर्घ, वृत्ताकार, कृश एवं रोमरहित हों तो उन्हें शुभकारक कहा गया है। जिसकी अंगुलियाँ अत्यन्त छोटी हों, कृश, टेढ़ी, छिद्र तथा रोमयुक्त हों, अधिक पर्व अथवा पर्वरहित हों तो उन्हें दुःखदायक जानना चाहिए।

नखलक्षण –

रक्तवर्णा नखास्तुंगा सशिखाश्च शुभप्रदाः।
निम्ना विवर्णा पीता वा पुष्पिता दुःखदायकाः।।

जिस स्त्री का नाखून रक्त वर्ण, उन्नत एवं शिखयुक्त हो तो वह शुभप्रद होता है। गहरा, मलिन, पीला, सफेद बिन्दुओं से युक्त हों तो ऐसे नख दुःखदायक होते हैं।

पृष्ठभागलक्षण –

अन्तर्निमग्नवंशास्थि पृष्ठं स्यान्मांसलं शुभम्।
स शिरं रोमयुक्तं वा वक्रं चाऽशुभदायकम्।।

स्त्री का पृष्ठ भाग दबा हुआ, हड्डी एवं मांसयुक्त तथा पुष्ट हो तो शुभ एवं शिरा तथा रोमयुक्त और टेढ़ा हो तो अशुभदायक होता है।

कण्ठलक्षणम् –

स्त्रीणां कण्ठस्त्रिरेखांकस्त्वव्यक्तास्थिश्च वर्तुलः।
मांसलो मृदुलश्चैव प्रशस्तफलदायकः।।
स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी।

वन्ध्या च चिपिटग्रीवा लघुग्रीवा च निःसृता।।

जिस स्त्री का कण्ठ तीन रेखा से युक्त, हड्डी न दिखने वाली, गोलाकार, मांसयुक्त एवं कोमल हो तो वह शुभ फलदायक; स्थूल कण्ठ विधवाकारक एवं टेढ़ कण्ठ दासी बनाने वाली होती है। चिपटी ग्रीवा वाली स्त्री वन्ध्या एवं छोटी कण्ठ हो तो सन्तान से हीन होती है।

कृकाटिका लक्षण –

श्रेष्ठा कृकाटिका ऋज्वी समांसा च समुन्नता।
शुष्का शिराला रोमाढया विशाला कुटिलाऽशुभा।।

जिस स्त्री की कृकाटिका (काठी अर्थात् कण्ठ का उठा हुआ मध्य भाग) सीधी, मांस से पुष्ट एवं सामान्य उन्नत हो तो वह शुभप्रद होती है एवं यदि शुष्क (मांसरहित), शिरा तथा रोम से युक्त, बड़ी और टेढ़ी हो तो उसे अशुभदायक समझना चाहिए।।५९।।

चिबुकलक्षण –

अरुणं मृदुलं पुष्टं प्रशस्तं चिबुकं स्त्रियाः।
आयातं रोमशं स्थूलं द्विधा भक्तमशोभनम्।।

जिस स्त्री का चिबुक लाल वर्ण, मुलायम और पुष्ट हो तो वह शुभ होता है। फैला हुआ, रोमयुक्त, स्थूल और दो भाग में विभक्त रहने वाले चिबुक को अशुभप्रद जानना चाहिए।

कपोल लक्षण –

कपोलावुन्नतौ स्त्रीणां पीनौ वृत्तौ शुभप्रदौ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसो चाऽशुभप्रदौ।।

जिस स्त्री का गाल उन्नत, पुष्ट और गोल हो तो वह शुभ होता है। यदि रोमसहित, कठोर, दबा हुआ एवं मांसहीन हो तो अशुभप्रद होता है।

मुख लक्षण –

स्त्रीणां मुखं समं पृष्ठं वर्तुलं च सुगन्धिमत्।
सुस्निग्धं च मनोहारि सुख सौभाग्यसूचकम्।।

स्त्री का मुख, सम (न बड़ा, न छोटा), पुष्ट, गोलाकार, सुगन्धित, चिकना, मुलायक, देखने में सुन्दर एवं मन को हरण करने वाला हो तो उसे शुभप्रद कहा गया है, इससे विपरीत मुख को अशुभ जानना चाहिए।

अधरलक्षण –

वर्तुल: पाटल: स्निग्धा रेखाभूषितमध्यभू:।
मनोहरोऽधरो यस्या: सा भवेद् राजवल्लभा।।
निर्मास: स्फुटितो लम्बो रुक्षो वा श्यामवर्णक:।
स्थूलोऽधरश्च नारीणां वैधव्यक्लेशसूचक:।।

जिस स्त्री का अधर (नीचे का ओठ) श्वेत-रक्त मिले हुए रंग वाला, गोलाकार, मुलायक, मध्य भाग में रेखा से युक्त, सुन्दर एवं मनोहर हो तो वह स्त्री राजप्रिया होती है। मांसहीन, फटा हुआ, लम्बा, रूखा, श्याम वर्ण एवं स्थूल अधर रहने पर वैधव्य तथा क्लेश का सूचक होता है।

उत्तरोष्ठ लक्षण –

रक्तोत्पलनिभ: स्निग्ध उत्तरोष्ठो मृगीदृशाम्।
किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमा सुखसौभाग्यदो भवेत्।।

जिस स्त्री का ऊपर का ओठ रक्तकमलसदृश लाल, चिकना, सामान्य रूप से मध्य भाग उठा हुआ हो

एवं रोमरहित हो तो वह सुख-सौभाग्यदायक होता है। इससे भिन्न को अशुभप्रद जानना चाहिए।

दन्त लक्षण –

स्निग्धा दुग्धनिभा: स्त्रीणां द्वात्रिंशद्दशना: शुभा:।
अधस्तादुपरिष्टाच्च समा: स्तोकसमुन्नता:।।
अधस्तादधिका: पीता श्यामा दीर्घा द्विपंक्तय:।
विकटा विरलाश्चापि दशना न शुभा: स्मृता:।।

स्त्री के दाँत चिकने, दूध के समान सफेद, संख्या में ३२, ऊपर तथा नीचे के समान एवं थोड़े उन्नत हों तो शुभकारक होते हैं। यदि ऊपर की अपेक्षा नीचे अधिक, पीले या काले, लम्बे, दो पंक्ति में, विकट एवं अलग-अलग हों तो उन्हें अशुभप्रद माना गया है।

जिह्वालक्षण –

शोणा मृद्वी शुभा जिह्वा स्त्रीणामतुलभोगदा।
दु:खदा मध्यसंकीर्णा पुरोभागेऽतिविस्तरा।।
सितया मरणं तोये श्यामया कलहप्रिया।
मांसलया धनैर्हीना लम्बयाऽभक्ष्यभक्षिणी।।

प्रमादसहिता नारी जिह्वया च विशालया।

जिस स्त्री का जीभ लाल वर्ण तथा कोमल हो, वह असंख्य भोगों का भोग करने वाली होती है। जिसका मध्य भाग संकुचित एवं अग्र भाग अति विस्तृत हो वह दुःख का भोग करने वाली होती है। सफेद जीभ वाली स्त्री का जल से मरण होता है एवं जिसकी जीभ श्याम वर्ण की हो तो ऐसी स्त्री कलहकारिणी होती है। इसी प्रकार मोटी जीभ वाली दरिद्रा, लम्बी जीभ वाली अखाद्य वस्तु का भक्षण करने वाली एवं विशाल जीभ वाली स्त्री प्रमादयुक्ता होती है।

तालु लक्षण –

सुस्निग्धं पाटलं स्त्रीणां कोमलं तालु शोभनम्।
श्वेते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत्।
कृष्णे सन्ततिहीना स्याद् रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी।।

जिस स्त्री का तालु चिकना श्वेत-रक्त मिश्रित (पाटल) वर्ण एवं कोमल हो तो वह शुभ; केवल श्वेत तालु वाली स्त्री विधवा, पीली तालु वाली संन्यासिनी, कृष्ण तालु वाली सन्तानहीना, रूखी तालु होने पर स्त्री अधिक परिवार वाली होती है।

हास्य लक्षण –

अलक्षितरदं स्त्रीणां किंचित्फुल्लकपोलकम्।
स्मितं शुभप्रदं ज्ञेयमन्यथा त्वशुभप्रदम्।।

जिस स्त्री के हँसते समय दाँत न दिखाई दें, कुछ उठे हुए गाल हों और मन्द हास्य हो तो ऐसी स्त्री शुभप्रद होती है। इससे भिन्न हो तो उसे अशुभप्रद जानना चाहिए।

नासिका लक्षण –

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभप्रदा।
स्थूलाग्रा मध्यनिम्ना वा न प्रशस्ता मृगीदृशाम्।।

जिस स्त्री का नासिका समान, गोलाकार एवं जिसके दोनों छिद्र लघु हों तो वे शुभप्रद एवं नाक का अग्रभाग स्थूल तथा मध्य भाग गहरा हो तो अशुभप्रद होता है।

रक्ताग्राऽऽकुंचिताग्रा वा नासा वैधव्यकारिणी।
दासी सा चिपिटा यस्या ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया।।

जिस स्त्री की नासिका का अग्रभाग रक्त वर्ण और संकुचित हो तो वह विधवा होती है। चिपटी

नासिका वाली स्त्री दासी एवं अधिक छोटी या अधिक लम्बी नासिका वाली स्त्री कलहकारिणी होती है।

नेत्र लक्षण –

शुभे विलोचने स्त्रीणां रक्तान्ते कृष्णतारके।
गोक्षीरवर्णे विशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी।।

स्त्री की आँखें अन्त में लाल वर्ण वाली, पुतलियाँ काली, गाय के दुग्धसदृश श्वेत एवं बड़ी-बड़ी चिकनी काली पलकों वाली हों तो उन्हें शुभ कहा गया है।

उन्नताक्षी च दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत्।
रमणी मधुपिंगाक्षी सुखसौभाग्यदायिनी।।
पुंश्चली वामकाणाक्षी वन्ध्या दक्षिणकाणिका।
पारावताक्षी दु:शीला गजाक्षी नैव शोभना।।

जिस स्त्री की आँखें ऊँची हों वह अल्पायु होती है; गोलाकार आँख वाली स्त्री कुलटा होती है; सुन्दर, मधुसदृश पि...ल नेत्र वाली स्त्री सुख और सौभाग्य को भोगने वाली होती है; जिसकी बाँयीं आँख कानी हो वह व्यभिचारिणी होती है; दाहिनी आँख से कानी स्त्री बाँझ होती है; कबूतर के समान नेत्र वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली होती है एवं हाथी के समान आँख वाली स्त्री शुभाकारक नहीं होती।

पक्ष्म लक्षण –

मृदुभि: पक्ष्मभि: कृष्णैर्घनै: सूक्ष्मै: सुभाग्ययुक्।
विरलै: कपिलै: स्थूलैर्भामिनी दु:खभागिनी।।

स्त्री के पलक कोमल, काले, घने और सूक्ष्म हों तो वह सौभाग्यवती होती है। विरल, कपिल वर्ण, स्थूल पलक रहने वाली स्त्री दुःखभागिनी होती है।

भ्रूलक्षण –

वर्तुलौ कार्मुकाकारौ स्निग्धे कृष्णे असंहते।
सुभ्रुवौ मृदुरोमाणौ सुभ्रुवां सुखकीर्तिदौ।।

स्त्री की भौंहें गोलाकार, धनुष के सदृश, चिकनी काली, परस्पर न मिली हुई एवं कोमल रोमों से युक्त होने पर सुख तथा कीर्ति प्रदान करने वाली होती हैं।

कर्णलक्षण –

कर्णौ दीर्घौ शुभावर्तौ सुतसौभाग्यदायकौ।
शष्कुलीरहितौ निन्द्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ।।

जिस स्त्री के दोनों कान लम्बे, गोलाकार एवं साथ घूमे हुए हों तो वह पुत्र तथा सौभाग्य को प्राप्त करती है। विस्तारहीन, शिरायुत, टेढ़े एवं मांसरहित कर्ण अशुभता को प्रकट करते हैं।

भाललक्षण –

शिराविरहितो भाल: निर्लोमाऽर्धशशिप्रभ:।
अनिम्नस्त्र्यंगुलस्त्रीणां सुतसौभाग्यसौख्यद:।।
स्पष्टस्वस्तिकचिह्नश्च भालौ राज्यप्रद: स्त्रिया:।
प्रलम्बो रोमशश्चैव प्रांशुश्च दु:खद: स्मृत:।।

जिस स्त्री का भाल (ललाट) शिरा तथा रोमरहित, अर्ध चन्द्राकार के समान एवं लम्बाई में तीन अंगुल हो, वह पुत्र के साथ-साथ सौभाग्यसुख को भी प्राप्त करती है। यदि भाल में स्पष्ट स्वस्तिक चिन्ह हो तो वह स्त्री राजप्रिया होती है। अधिक लम्बा, रोमयुक्त एवं बहुत ऊँचा भाल हो तो उस स्त्री के लिए दुःखदायी होता है।

मूर्धा लक्षण –

उन्नतो गजकुम्भाभो वृत्तो मूर्धा शुभ: स्त्रिय:।
स्थूलो दीर्घोऽथवा वक्रो दु:खदौर्भाग्यसूचक:।।

स्त्री का हाथी के मस्तक सदृश ऊँचा और गोलाकार मस्तक शुभ तथा स्थूल, लम्बा अथवा टेढ़ा मस्तक दुःख-दुर्भाग्य का सूचक होता है।

केशलक्षण –

कुन्तला: कोमला: कृष्णा: सूक्ष्मा दीर्घाश्च शोभना:।
पिंगला: परुषा रूक्षा विरला लघवोऽशुभा:।।
पिंगला गौरवर्णाया श्यामाया: श्यामला: शुभा:।
नारीलक्षणतश्चैवं नराणामपि चिन्तयेत्।।

स्त्री के केश कोमल, काले, पतले, लम्बे हों तो वे शुभप्रद होते हैं। पिंगल वर्ण के, कठोर, रूखे, बिखरे हुए छोटे केश अशुभसूचक होते हैं। परन्तु गौर वर्ण की स्त्री के पिंगल एवं श्याम वर्ण की स्त्री के काले

केश को शुभ ही जानना चाहिए।

इसी प्रकार स्त्री के अंग लक्षण के द्वारा पुरुषों का भी अंग-लक्षण अवगत करना चाहिए।

बोध प्रश्न –

1. शीर्ष का अर्थ क्या होता है।

   क. मस्तक ख. केश ग. मुख घ. नेत्र
2. वृहत्पराशरहोराशास्त्र किसकी रचना है।

   क. मैत्रेय ख. पराशर ग. नारद घ. गर्ग
3. नारियों के शरीर का विभिन्न अंगों का लक्षण वृहत्पराशरहोराशास्त्र के किस अध्याय में वर्णित है।

   क. ८२ ख.८३ ग.८४ घ. ८५
4. नख का क्या अर्थ है।

   क. नाक ख. कान ग. नाखून घ. मुख
5. स्त्री की आँखें अन्त में लाल वर्ण वाली, पुतलियाँ काली हो तो कैसी होती है।

   क. शुभ ख. अशुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं
6. स्त्री का मस्तक लम्बा हो तो क्या फल होता है।

   क. उत्तम ख. दुर्भाग्य सूचक ग. अशुभ घ. कोई नहीं
7. जिस स्त्री का नासिका समान, गोलाकार एवं जिसके दोनों छिद्र लघु हों तो वे होते हैं –

   क. अशुभप्रद ख. शुभप्रद ग. दुर्भाग्य प्रद घ. मिश्रितप्रद

3.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि ज्योतिष शास्त्र में ऋषियों ने निरन्तर अनुसन्धान कर मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण को बतलाया है। शीर्ष से पाद (पैर) तक मानव शरीर के विभिन्न अंगों की आकृतियों एवं उनके रूपों तथा लक्षणों के आधार पर अलग-अलग फल कहे गये हैं। वृहत्पराशरहोराशास्त्र ग्रन्थ में आचार्य पराशर ने स्त्री के शरीर के विभिन्न अंगों को अंगलक्षणाध्याय में विस्तृत रूप में प्रतिपादित किया है। उनका कथन है कि स्त्रियों के समान ही पुरुषों के अंगों का भी लक्षण जानना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य के शरीरांगों की बात करें तो सबमें कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य होती है, जैसे कोई मोटा होता है कोई पतला, कोई गोरा कोई काला,

किसी की आँखें बड़ी होती है किसी की छोटी, किसी के बाल लम्बे होते हैं, किसी के छोटे, किसी के घुँघराले तो किसी के सीधे। किसी का ओष्ठ काला तो किसी का लाल होता है। किसी की कमर मोटी होती है, तो किसी की पतली, किसी के नख खुदरे होते है, तो किसी के चिकने आदि इत्यादि। इन्हीं सभी लक्षणों एवं गुणों के आधार पर शरीर के विभिन्न अंगों का लक्षण का विचार किया जाता है। हम जानते हैं कि सृष्टि की क्षमता नारी के पास होती है। अत: सृष्टि, समाज व परिवार में स्त्रियों का विशेष योगदान है। अत: स्त्रियों की प्रधानता को देखते हुए ऋषियों ने उनके शरीर के विभिन्न अंगों का जो लक्षण कहा है, उसे यहाँ आप लोगों के ज्ञानार्थ वर्णन किया जा रहा है।

मानव शरीर के विभिन्न अंगों से अभिप्राय - शीर्ष (मस्तक), मुख, आँख, कान, दन्त, केश, हस्त, हृदय, ग्रीवा, उदर, छाती, स्तन, नख, पीठ, पैर, नितम्ब, गुह्यमार्ग, पादतल, अँगुली, जानु, उरु, जंघा आदि से हैं। कुछ विशेष एक-दो अंग को छोड़ दिया जाय तो पुरुष एवं स्त्रियों दोनों में ये सभी अंग होते हैं।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

शीर्ष – मस्तक

मुख – मुँह

उदर – पेट

बाहु – भुजा या हाथ

कटि – कमर

कुक्ष – कोख

पाद- पैर

नख – नाखून

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. क
2. ख
3. ख
4. ग
5. क
6. ख
7. ख

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – आचार्य पराशर, टिकाकार – पं. पद्मनाभ शर्मा

जातक पारिजात – मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ।

ज्योतिष रहस्य – जगजीवनदास गुप्ता।

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्पराशरहोरा शास्त्र

जातक पारिजात

वृहत्संहिता

ज्योतिष रहस्य

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. मानव शरीर के विभिन्न अंगों से क्या अभिप्राय है।
2. नारियों के विभिन्न अंगों का लक्षण लिखिये।
3. स्त्री के मुख, नाक, ओष्ठ एवं कटि लक्षणों का फल लिखिये।
4. नारी के पादतल, केश, हस्त, उदर एवं कुक्ष का फल लिखिये।

इकाई - 4 शकुन फल विचार

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 शकुन परिचय
4.3.1 शकुन के भेद
4.3.2 ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद
4.4 जीवों द्वारा शकुन फल विचार
4.4.1 कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन
4.4.2 कुत्तें एवं अन्य पशु-पक्षियों द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन फल विचार
4.5 यात्राकालिक शुभाशुभ शकुन विचार
4.6 सारांश
4.7 पारिभाषिक शब्दावली
4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.10 सहायक पाठ्यसामग्री
4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – शकुन फल विचार। इससे पूर्व आपने फलित ज्योतिष से जुड़े विभिन्न योगों, दशाफलादि तथा मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लक्षण सम्बन्धित विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'शकुन फल विचार' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

शकुन का शाब्दिक अर्थ होता है – पक्षी। 'शकुन शास्त्र' से अभिप्राय है- जीवों के अंगों के लक्षण के आधार पर किया जाने वाला शुभाशुभ फल सिद्धान्त। प्रधान स्कन्धत्रय के अतिरिक्त शकुन भी ज्योतिष शास्त्र का एक स्कन्ध के रूप में प्रचलित है।

आइए इस इकाई में हम लोग 'शकुन' के बारे में एवं उसके शुभाशुभ फल विचारों के विविध पक्षों को समझने का प्रयास करते है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- शकुन को परिभाषित कर सकेंगे।
- शकुन के विभिन्न अवयवों को समझा सकेंगे।
- शकुन के शुभाशुभ फल का ज्ञान कर लेंगे।
- शास्त्रों एवं पुराणों के आधार पर शकुन के फल को समझा सकेंगे।
- शकुन के महत्व को निरूपति कर सकेंगे।

4.3 शकुन फल विचार

'शुभशंसि निमित्ते च शुकनं स्यात्रपुंसकम' इस वचन के अनुसार जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है, उस शास्त्र को **शकुनशास्त्र** कहते है। शकुन का अर्थ पक्षी होता है, पक्षी से पशु तथा अन्य जीवों का भी बोध होता है। शकुन का दूसरा अर्थ निमित्त भी है, जिससे अंग-स्फुरण, छींक, पल्लीपतन, सरटाधिरोहण तथा अन्य लक्षणों द्वारा भविष्य का ज्ञान प्रात होता है। मनुष्यों के पूर्वजन्मार्जित जो शुभाशुभ कर्म हैं, उन कर्मो के शुभाशुभ फल को गमनकालिक शकुन प्रकाशित करता है। जैसे कि आचार्य वराहमिहिर का कथन है-

अन्यजन्मान्तरकृतं कर्म पुंसां शुभाशुभम् ।

यत्तस्य शकुनः पाकं निवेदयति गच्छताम् ।।

ज्योतिष में शकुन स्कन्ध का अप्रतिम स्थान है। ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सभी स्कन्धों में शकुन का सर्वप्रथम प्राकटत्र्त हुआ होगा, क्योंकि जब आदि मानव ज्योतिष के गणित पक्ष से अनभिज्ञ रहा होगा, तब भी अंग- स्फुरण, पशु चेष्टा अथवा प्राकृतिक हलचलों से भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता होगा। अन्धकासुर के वध के समय भगवान् शंकर ने पशु–पक्षियों के अस्वाभाविक हलचल देखे थे, वे ही शकुन नाम से कहे गये हैं। पुनः तारकासुर से युद्ध के पूर्व स्वामि कार्तिकेय को भगवान् शंकर ने शकुन का उपदेश किया। जम्भासुर से युद्ध के लिए तैयार इन्द्र ने कश्यप ऋषि को तथा कश्यप ने गरूड जी को, गरूड ने अत्रि, गर्ग, भृगु, पराशर अदि मुनियों को शकुन का उपदेश किया है।

शकुन जानने वाले ज्योतिर्विदों को गणितादि की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंचांग, फलित अथवा जन्मसमयादि के विना भी भविष्य का फल शकुन द्वारा जाना जाता है। वेद, पुराण, इतिहास, स्मृति तथा अन्य सभी भारतीय ग्रन्थों में कहीं न कहीं शकुन का वर्णन अवश्य प्राप्त होता है।

4.3.1 शकुन के भेद

अग्निपुराण में शकुन दो प्रकार के बतलाये गये हैं- दीप्त और शान्त। दैव का विचार करने वाले ज्योतिषियों ने सम्पूर्णं दीप्त शकुनों का फल अशुभ तथा शान्त शकुनों का फल शुभ बतलाया हैं। वेलादीप्त, दिग्दीप्त, देशदीप्त, क्रियादीप्त, रूपदीपत और जातिदीप्त के भेद से दीप्त शकुन छः प्रकार के बतलाये गये हैं। उनमें पूर्व-पूर्व को अधिक प्रबल समझना चाहिए।

षट्प्रकारा विनिर्दिष्टा शकुनानां च दीप्तयः।
वेलादिग्देशकरणरुतजातिविभेदतः।।
पूर्वा पूर्वा च विज्ञेया सा तेषां बलवत्तरो।।

दिन में विचरने वाले प्राणी रात्रि में और रात्रि में चलने वाले प्राणी दिन में विचरते दिखायी दें, तो उसे वेलादीप्त जानना चाहिए। इसी प्रकार जिस समय नक्षत्र, लग्न और ग्रह आदि क्रर अवस्था को प्राप्त हो जाँय, वह भी वेलादीप्त के ही अन्तर्गत आते हैं। सूर्य जिस दिशा को जाने वालें हो वह 'धूमिता' जिसमें विद्यामान हों, वह 'ज्वलिता' तथा जिसे छोड़ आये हों, वह 'अंगारिणी' मानी गयी हैं। ये तीन दिशाएँ 'दीप्त' और शेष पाँच दिशाएँ 'शान्त' कहलाती हैं। दीप्तदिशा में जगंली और जंगल में ग्रामीण पशु-पक्षी आदि विद्यामान हों, तो वह निन्दित देश है। इसी प्रकार जहाँ निन्दित वृक्ष हों, वह स्थान भी निन्द्य और अशुभ माना गया हैं।

दीप्तायां दिशि दिग्दीप्तं शकुनं परिकीर्तितम्।
ग्रामेऽरण्या वने ग्राम्यास्तथा निन्दितपादपः।।

देशे चैवाशुभे ज्ञेयो देशदीप्तो द्विजोत्तमः।।

अशुभ देश में जो शकुन होता है, उसे अग्निपुराण में 'देशदीप्त' कहा गया हैं। अपने वर्णधर्म के विपरीत अनुचित कर्म करने वाला पुरूष 'क्रियादीप्त' बतलाया गया हैं। उसका दिखायी देना क्रियादीप्त शकुन के अन्तर्गत आता हैं। फटी हुई भयंकर आवाज का सुनायी पड़ना 'रूतदीप्त' कहलाता हैं। केवल मांस भोजन करने वाले प्राणी को 'जातिदीप्त' समझना चाहिए। उसका दर्शन भी जातिदीप्त शकुन हैं। दीप्त अवस्था के विपरीत जो शकुन हो, वह 'शान्त' बतलाया गया हैं। उसमें भी उपर्युक्त सभी यत्नपूर्वक जानने चाहिए। यदि शान्त और दीप्त के भेद मिले हुए हों, तो उसे 'मिश्र शाकुन' कहते हैं। इस प्रकार विचारकर उसका फलाफल बतलाना चाहिए।

4.3.2 ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद

ग्रामीण एवं जंगली जीवों का विभेद बतलाते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि गौ, घोड़े, गदहे, कुत्तों, सारिका (मैना), गृहगोधिका (गिरगिट), चटक (गौरेया), भास (चील या मुर्गा) और कछुए आदि प्राणि ग्रामवासी कहे गये हैं।

गोऽश्वोष्ट्रगर्द भश्वानः सारिका गृहगोधिका।
चटका मासकूर्माद्याः कथिता ग्रामवासिनः।।

इसी प्रकार बकरा, भेड़, तोता, गजराज, सूअर, भैंसा और कौआ- ये ग्रामीण भी होते हैं और जंगली भी। इनके अतिरिक्त और सभी जीव जंगली कहे गये हैं। बिल्ली और मुर्गा भी ग्रामीण तथा जंगली कहे गये हैं। परन्तु उनके रूप में भेद होता हैं, इसी से वे सदा पहचाने जाते हैं।

दिन में और रात में चलने वाले जीवों का विभेद बतलाये हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि गोकर्ण, मोर, चक्रवाक, गदहे, हारीत, कौए, कुलाह, कुक्कुभ, बाज, गीदड़, ख..त्ररीट, वानर, शतघ्न, चटक, कोयल, नीलकण्ठ (श्येन), कपि...ल (चातक), तीतर, शतप, कबूतर, खंजन, दात्यूह (जलकाक), शुक, राजीव, मुर्गा, भरदूल और सारंग- ये दिन में चलने वाले प्राणी हैं।

गोकर्णशिखिचक्राह्वखरहारितवायसाः।
कुलाहकुक्कुभश्येनफेरुखंगनवानराः।।
शतघ्नचटकश्यामचाषश्येनकपिंगलाः।
तित्तिरिः शतपत्रश्च कपोतश्च तथा त्रयः।।
खंगरीटकदात्यूहशुकराजीवकुक्कुटाः।
भरद्वाजश्च सारंग इति ज्ञेया दिवाचराः।।

इसी प्रकार वागुरी, उल्लू, शरभ, क्रौ..., खरगोश, कछुआ, लोगशिका, और पिंगलिका- ये रात्रि में

चलने वाले प्राणी बतलाये गये हैं। हंस, मृग, बिलाव, वृषभ, गोमायु, वृक, कोयल, सारस, घोड़ा, गोघा और कौपीनधारी पुरूष - ये दिन और रात दोनों में चलने वाले हैं।

हंसाश्च मृगमार्जारनकुलर्क्षभुजंगमाः।
वृकारिसिंहव्याघ्रोष्ट्रग्रामसूकरमानुषाः।।
श्वाविदवृषभगोमायुवृककोकिलसारसाः।
तुरंगकौपीननरा गोध ह्युभयचारिणः।।

सम्प्रति उक्त जीवों के शुभाशुभ शकुन का विचार करते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि यदि युद्ध या युद्ध-यात्रा का समय ये सभी जीव झुण्ड बाँध कर सामने आवें, तो विजय दिलानेवाले गये हैं, किन्तु यदि पीछे से आवें, तो विजय दिलानेवाले बतलाये गये हैं, किन्तु यदि पीछे से आवें, तो मृत्युकारक माने गये हैं।

बलप्रस्थानयोः सर्वे पुरस्तात्संगचारिणः।
जयावहा विनिर्दिष्टा पश्चान्निधनकारिणः।।

यदि नीलकण्ठ अपने घोसले से निकल कर आवाज देता हुआ सामने स्थित हो जाय, तो वह राजा को अपमान की सुचना देता हैं और ज बवह वामभाग में आ जाय, तो कलहकारक तथा भोजन में बाधा डालने वाला होता हैं। यात्रा के समय उसका दर्शन उत्तम माना गया है, उसके बायें अंग का अवलोकन भी उत्तम हैं। यदि यात्रा के समय मोर जोर-जोर से आवाज दे, तो चोरों के द्वारा अपने धन की चोरी होने का सन्देश देता है।

गृहाद्गम्य यदा चाषो व्याहरेत्पुरतः स्थिताः।
नृपावमानं वदति वामः कलहभोजने।।
याने तदर्दनं शस्तं सव्यमंगस्य वाप्यथ।
चौरैर्मोषमथाख्याति मयूरो भिन्नानिःस्वनः।।

प्रस्थानकाल में यदि मृग आगे-आगे चले, तो वह प्राण लेने वाला होता हैं। रीक्ष, चूहा, सियार, बाघ, सिंह, बिलाव, गदहे-ये यदि प्रतिकूल दिशा में जाते हों, गदहा जोर-जोर से रेंकता हो और कपिंचल पक्षी वायीं अथवा दाहिनी ओर हो, तो उसका फल निन्दित माना गया हैं।

यात्रा काल में तितर का दिखायी देना अच्छा नहीं हैं। मृग, सूअर और चितकबरे हिरन- ये यदि वायें होकर फिर दाहिने हो जाँय, तो सदा कार्यसाधक होते हैं। इसके विपरीत यदि दाहिनें से वायें चले जाँय, तो निन्दित माने गये हैं। बैल, घोडे, गीदड़, बाघ, सिंह, बिलाव और गदहे यदि दाहिने से बाये जाँय, तो ये मनोवांछित वस्तु की सिद्धि करने वाले होते हैं, यह समझना चाहिए।

वृषाश्वजम्बुकव्याघ्राः सिंहमार्जारगर्दभाः।
वांछितार्थकरा ज्ञेया दक्षिणाद्वामतो गताः।।

इसी प्रकार श्रृगाल श्याममृख, छुच्छु (छछूँदर), पिगला, गृहगोधिका, शूकरी, कोयल तथा पुल्लिंग नाम धारण करने वाले जीव यदि वाम भाग में हों तथा स्त्रीलिंग नामवाले जीव, मास, कारूष, बन्दर, श्रीकर्ण, छिŸवर, कपि, पिप्पीक, रूरू और श्येन-ये दक्षिण दिशा में हों, तो शुभ हैं। यात्रा काल में जातिक, सर्प, खरगोश, सुअर तथा गोधक नाम लेना भी शुभ माना गया हैं।

जातीक्षा (तिका) हिशशकोडगोधानां कीर्त्तनं शुभम्।

वहाँ बतलाया गया है कि रीक्ष और वानरों का विपरीत दिशा में दिखायी देना अनिष्टकारक होता हैं। प्रस्थान करने पर जो कार्यसाधक बलवान् शकुन प्रतिदिन दिखायी देता हैं, उसका फल विद्वानों पुरूष को उसी दिन के लिए बतलाना चाहिए। अर्थात् जिस दिन शकुन दिखायी देता है, उसी दिन उसका फल होता हैं।

पागल, भोजनार्थी बालक तथा वैरी पुरूष यदि गाँव या नगर की सीमा के भीतर दिखायी दें, तो उनके दर्शन का कोई फल नहीं होता हैं, ऐसा समझना चाहिए।

यदि सियारिन एक, दो, तीन या चार बार आवाज लगावे, तो वह शुभ मानी गयी हैं। इसी प्रकार पाँच और छः बार बोलने पर अशुभ और सात बार बोलने पर शूभ बतलायी गयी हैं। सात बार से अधिक बोले तो उसका कोई फल नहीं होता हैं।

एकद्वित्रिचतुर्भिस्तु शिवा धन्या रुतैर्भवेत्।
पंचभिश्च तथा पड्भिरधन्या परिकीर्त्तिता।।
सप्तभिश्च तथा धन्या निष्फला परतो भवेत्।।

सरंग के दर्शन का फल बतलाते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि यदि यात्रा के पहले किसी उत्तम देश में सारंग का दर्शन हो, तो वह मनुष्य के लिए एक वर्ष तक शुभ की सूचना देता हैं। उसे देखने से अशुभ में भी शुभ होता हैं। अतः यात्रा के प्रथम दिन मनुष्य ऐसे गुण वाले किसी सारंग का दर्शन करे तथा अपने लिए एक वर्ष तक उपर्युक्त रूप से शूभ फल की प्राप्ति होने वाला समझे।

प्रथमं सारंग दृष्टे शुभे देशे शुभं वदेत्।
संवत्सरं मनुष्यस्य ह्याशुभे च शुभं तथा।।
तथा विधं नरं पश्येत् सारंग प्रथमेऽहनि।
आत्मनश्च तथात्वेन ज्ञातव्यं वत्सरं फलम्।।

4.5 जीवों द्वारा शकुन फल विचार

4.4.1 कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन

कौए द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का वर्णन करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि जिस मार्ग से बहुतेरे कौए शत्रु के नगर में प्रवेश करें, उसी मार्ग से घेरा डालने पर उस नगर के ऊपर अघना अधिकार प्राप्त होता हैं। यदि किसी सेना या समुदाय में बायी ओर से भयभीत कौआ रोता हुआ प्रवेश करे, तो वह आने वाले अपार भय की सूचना देता हैं। छाया (तम्बू, रावटी आदि), अंग वाहन, उपानह, छत्र और वस्त्र आदि के द्वारा कौए को कुचल डालने पर अपने लिए मृत्यु की सूचना मिलती हैं। उसकी पूजा करने पर अपनी भी पूजा होती है तथा अन्न आदि के द्वारा उसका इष्ट करने पर अपना भी शुभ होता हैं।

छायांग वाहनोपानच्छत्रवस्त्रादिकुट्टने।
मृत्युस्तत्पूजने पूजा तदिष्टकरणे शुभम्।।

यदि कौआ दरवाजे पर बारंबार आया जाया करे, तो वह उस घर के किसी परदेशी व्यक्ति के आने की सूचना देता है। इसी प्रकार यदि वह कोई लाल या जली हुई वस्तु मकान के ऊपर डाल देता है, तो आग लगने की सूचना मिलती हैं।

प्रेषितागमकृत्काकः कुर्वन् द्वारि गतागतम्।
रक्तं दग्धं गृहे द्रव्यं क्षिपन् वह्निनिवेदकः।।

यदि कौआ मनुष्य के आगे कोई लाल वस्तु डाल देता हैं, तो उसके कैद होने की बात बतलाता हैं और यदि कोई पीले रंग की वस्तु सामने गिरता है, तो उससे सोने-चाँदी की प्राप्ति सूचित होती हैं, सारांश यह की वह जिस वस्तु को अपने पास ला देता हैं, उसकी प्राप्ति और द्रव्य को अपने यहाँ से उठा ले जाता है, उसकी हानि की संकेत करता हैं।

न्यसेद्रक्तं पुरस्ताच्च निवेदयति बन्धनम्।
पीतं द्रव्यं तथा रुक्म रूप्यमेव तु भार्गव।।
याच्चोपनयेद् द्रव्यं तस्य लब्धिं विनिर्दिशेत्।
द्रव्यं वापनयेद्यस्तु तस्य हानिं विनिर्दिशेत्।।

यदि कौआ अपने आगे कच्चा मांस लाकर डाल दे, तो धन की, मिट्टी गिरावे, तो पृथ्वी की और कोई रत्न डाल दे, तो महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। यदि यात्रा करने वाले की अनुकूल दिशा

(सामने) की ओर कौआ जाय, तो वह कल्याणकारी और कार्यसाधक होता हैं। परन्तु यदि प्रतिकूल दिशा की और जाय, तो उसे कार्य में बाधा डालनेवाला तथा भयंकर जानना चाहिए। यदि कौआ सामने काँव काँव करता हुआ आ जाय, तो वह यात्रा का विघातक होने पर कार्य का नाश करता हैं। वामभाग में होकर कौआ यदि अनुकूल दिशा की ओर चले तो श्रेष्ठ और दाहिने होकर अनुकूल दिश की ओर चले, तो मध्यम माना जाता है, किन्तु वामभाग में होकर यदि वह विपरीत दिशा की ओर आ जाय, तो यात्रा का निषध करता हैं। यात्रा काल में घर पर कौआ आ जाय, तो वह अभीष्ट कार्य की सिद्धि सूचित करता हैं। यदि वह एक पैर उठाकर एक आँख से सूर्य की ओर देखे, तो भय देने वाला होता हैं। यदि कौआ किसी वृक्ष के खोखले में बैठकर आवाज दे, तो वह महान अनर्थ का कारण हैं। ऊसर भूमि में बैठा हो, तो भी अशुभ होता है, किन्तु यदि वह कीचड़ में लिपटा हुआ हो, तो उत्तम माना गया हैं।

एकाक्षिचरणस्त्वर्कं वीक्षमाणो भयावहः।
कोटरे वसमानश्च महानर्थकरो भवेत्।।
न शुभस्तूषरे काका पंग स तु शस्यते।।

जिसकी चोंच मे मल आदि अपवित्र वस्तुएँ लगी हो, वह कौआ दीख जाय, तो सभी कार्यो का साधक होता हैं। कौए की भाँति अन्य पक्षियों का भी फल जानना चाहिए।

अमेध्यपूर्णावदनः काकः सर्वार्थसाधकः।
ज्ञेयाः पतत्रिणोऽन्येऽपि काकवद् भृगुनन्दन।।

4.4.2 कुत्ते एवं अन्य पशु-पक्षियों द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन

कुत्तों के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों की चर्चा करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यदि सेना की छावनी के दाहिने भाग में कुत्तों आ जाँय, तो वे ब्राहाणों के विनाश की सूचना देते हैं। इन्द्रध्वज के स्थान में हों, तो राजा का और गोपुर (नगरद्वार) पर हों, तो नगराधीर की मृत्यु की सूचना देते हैं।

स्कन्धवारापसव्यस्थाः श्वानो विप्रविनाशकाः।
इन्द्रस्थाने नरेन्द्रस्य पुरेशस्य तु गोपुरे।।

भूँकता हुआ कुत्तों यदि घर के भीतर आवे, तो गृहस्वामी की मृत्यु का कारण होता हैं। वह जिसके बायें अंग को सूँघता हैं, उसके कार्य की सिद्धि होती हैं। यदि दाहिने अंग और बायीं भुजा को

सूँघे, तो भय उपस्थित होता हैं। यात्री के सामने की ओर आवे, तो यात्रा में विघ्न डालने वाला होता हैं। यदि कुत्तों राह रोक कर खड़ा हो, तो मार्ग में चारो का भय सूचित करता हैं। मुँह में हड्डी लिये हो, तो उसे देखकर यात्रा करने पर कोई लाभ नहीं होता तथा रस्सी या चिथड़ा रखने वाला कुत्तों भी अशुभसूचक होता हैं।

मार्गावरोधको मार्गे चौरान् वदति भार्गव।
अलाभोऽस्थिमुखः पापो रज्जुक्षीरमुखस्तथा।।

जिसके मुख में जूता या माँस हो, ऐसा कुत्तों सामने हो, तो शुभ होता हैं। यदि उसके मुँह में कोई अमांगलिक वस्तु तथा केश आदि हो, तो उससे अशुभ की सुचना मिलती हैं। कुत्तों जिसके आगे पेशाब करके चला जाता हैं, उसके ऊपर भय आता हैं। किन्तु मूत्र त्याग कर यदि वह किसी शुभ स्थान, शुभ वृक्ष तथा मांगलिक वस्तु के समीप चला जाय, तो वह उस, पुरूष के कार्य का साधक होता हैं। कुत्तों की भाँति गीदड आदि के विषय में भी समझना चाहिए।

अवमूत्र्याग्रतो याति यस्य तस्य भयं भवेत्।
यस्यावमूत्र्य व्रजति शुभं देशं तथा दु्रमम्।।
मंगल्यं च तथा द्रव्यं तस्य स्यादर्थसिद्धये।
श्ववच्च राम विज्ञेयास्तथा वै जम्बुकादयः।।

गौ आदि पशुओं के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुन का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यदि गौयें अकारण ही डकारने लगें, तो समझना चाहिए कि स्वामी के ऊपर भय आने वाला हैं। रात में उसके बोलने से चोरों का भय सूचित होता है और यदि वे विकृत स्वर में क्रन्दन करें, तो मृत्यु की सुचना मिलती हैं।

भयाय स्वामिनो ज्ञेयमनिमित्तं रुतं गवाम्।
निशि चौरभयाय स्याद्विकृतं मृत्यवे तथा।।

यदि रात में बैल गर्जन करे, तो स्वामी का कल्याण होता हैं और साँढ आवाज दे, तो राजा में बैल गर्जना करें, तो राजा को विजय प्रदान करता हैं। यदि अपनी दी हुई तथा अपने घर पर मौजूद रहने वाली गौएँ अभक्ष्य-भक्षण करें और अपने बछडे पर भी स्नेह करना छोड़ दें, तो गर्भक्षय की सूचना देने वाली मानी गयी हैं।

अभक्ष्यं भक्षयन्त्यश्च गावो दत्तास्तथा स्वकाः।
तयक्तस्नेहा स्ववत्सेषु गर्भक्षयकरा मताः।।

पैरों से भूमि खोदने वाली, दीन तथा भयभीत गौएँ भय लाने वाली होती हैं। जिनका शरीर भींगा हों, रोम-रोम प्रसन्नता से खिला हो और सीगों से मिट्टी लगी हुई हो, वे गौएँ शुभ होती हैं। विज्ञ पुरूष को भैंस आदि के सम्बन्ध में भी यही सब शकुन बतलाना चाहिए।

भूमिं पादैर्विनिघ्नन्त्यो दीना भीता भयावहाः।
आर्द्रङ्ग्यो हृष्टरोमाश्च श्रृ...लग्नमृदः शुभाः।।
महिष्याद्विषु चाप्येतत्सर्वं वाच्यं विजानता।।

घोड़े के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का कथन करते हुए अग्निपुराण में कही गया हैं कि जीन कसे हुए अपने घोडे पर दूसरे का चढना, उस घोडे का जल में बैठना और भूमि पर एक ही जगह चक्कर लगाना अनिष्ट का सूचक हैं। बिना किसी कारण के घोडे का सो जाना विपत्ति में डालने वाला हैं।

आरोहणं तथान्येन सपर्य्याणस्य वाजिनः।
जलोपवेशनं नेष्टं भूमौ च परिवर्तनम्।।
विपत्करं तुरङगस्य सुप्तं वाप्यनिमित्ततः।।

इसी प्रकार यदि अकस्मात् जई और गुड की ओर से घोडे की अरूचि हो जाये, उसके मुँह से खून गिरने लगे तथा उसका सारा बदन कापने लगे, तो ये अच्छे लक्षण नहीं हैं, उनके अशुभ की सूचना मिलती हैं। यदि घोडा बगुलों, कबूतरों और सरिकाओं से खिलवाड़ करे, तो मृत्यु का सन्देश देता हैं। उसके नेत्रों से आँसू बहे तथा वह जीभ से अपना पैर चारने लगे, तो विनाश का सूचक हैं। यदि वह बायें टाप से धरती खोदें बायी करवट से सोये अथवा दिन में नींद ले, तो शुभ कारक नहीं माना जाता हैं।

वामपादेन च तथा विलिखंश्च वसुन्धराम्।
स्वपेद् का वामपार्श्वेन दिवा वा न शुभप्रदः।।

जो घोड़ा एक बार मूत्र करने वाला हो, अर्थात् जिसका मूत्र एक बार थोडा सा निकल कर फिर रूक जाये तथा निद्रा के कारण जिसका मुँह मलिन हो, वह भय उपस्थित करने वाला होता हैं। यदि वह चढने न दे अथवा चढ़ते समय उलटे घर में चला जाये या सवार की बायीं पसली का स्पर्श करने लगे, तो वह यात्रा में विघ्न पड़ने की सूचना देता हैं। यदि शत्रु-योद्धा को देखकर हींसने लगे और स्वामी के चरणों का स्पर्श करे, तो वह विजय दिलाने वाला होता हैं।

भयाय स्यात्सकृन्मूत्री तथा निद्राविलाननः।
आरोहणं न चेट्दकृात्प्रतीपं वा गृहं व्रजेत्।।

यात्राविघातमाचष्टे वामपार्श्वं तथा स्पृशन्।

हेषमाणः शत्रुयोधं पादस्पर्शी जयावहः।।

हाथी आदि के द्वारा होने वाले शुभाशुभ शकुनों का वर्णन करते हुए वहाँ कहा गया हैं कि यदि हाथी गाँव में मैथुन करे, तो उस देश के लिए हानि कारक होता हैं। हथिनी गाँव मे बच्चा दे या पागल हो जाय, तो राजा के विनाश की सूचना देती हैं।

ग्रामे व्रजति नागश्चेन्मैथुनं देशहा भवेत्।

प्रसूला नागवनिता मत्ता चान्ताय भूपतेः।।

यदि हाथी चढ़ने न दे, उलटे हथिसार में चला जाय या मद की धारा बहाने लगे, तो वह राजा का घातक होता हैं। यदि दाहिने पैर को बायें पैर पर रखे और सूँड से दाहिने दाँत का मार्जन करें, तो वह शुभ होता हैं।

वामं दक्षिणपादेन पादमाक्रमते शुभः।

दक्षिणं च तथा दन्तं परिमार्ष्टि करेण च।।

इस प्रकार अपना बैल, घोड़ा अथवा हाथी शत्रु में चला जाय, तो अशुभ होता हैं।

वृषोऽश्वाः कु´जरो वापि रिपुसैन्यगतोऽशुभः।।

यदि थोड़ी दूर में बादल घिर कर अधिक वर्षा करे, तो सेना का नाश होता हैं। यात्रा के समय अथवा युद्धकाल में ग्रह और नक्षत्र प्रतिकूल हों, सामने से हवा आ रही हो और छत्र आदि गिर जायँ, तो भय उपस्थित होता हैं। लड़ने वाले योद्धा हर्ष और उत्साह में भरें हों और ग्रह अनुकूल हों, तो वह विजय का लक्षण हैं।

खण्डमेघातिवृष्टया तु सेना नाशमावाप्नुयात्।

प्रतिकूलग्रहार्क्षात्तु तथा सम्मुखमारुतात्।।

यात्राकाले रणे वापि छत्रादिपतनं भयम्।

हृष्टा नराश्चानुलोमा ग्रहा वै जयलक्षणम्।।

यदि कौए और मांसाहारी जीव-जन्तु योद्धाओं का तिरस्कार करें, तो मण्डल का नाश होता हैं। पूर्व, पश्चिम एवं ईशान दिशा प्रसन्न तथा शान्त हों, तो प्रिय और शुभ फल की प्राप्ति कराने वाली होती हैं।

काकैर्योद्धाभिभवनं क्रव्याद्भिर्मण्डलक्षयः।

प्राचीपश्चिमकैशानी सौम्या प्रेष्ठा शुभा च दिक्।।

यात्रा के समय दिखायी देने वाले विभिन्न वस्तुओं के द्वारा शुभ और अशुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया है कि क्षेत वस्त्र, स्वच्छ जल, फल से भरा हुआ वृक्ष, निर्मल आकाश, खेत में लगे हुए अन्न और काला धान्य-इनका यात्रा में दिखायी देना अशुभ हैं। रूई, तृणमिश्रित सूखा गोबर (कंडा), धन, अर, गृह, करायल, मूँड़, मुड़ाकर तेल लगाया हुआ नग्न साधु, लोहा, कीचड़, चमडा, बाल, पागल मनुष्य, हिजड़ा, चाण्डाल, श्वपच आदि, बन्धन की रक्षा करने वाले मनुष्य, गर्भिणी स्त्री, विधवा, तिल की खली, मृत्यु, भुसी, राख, खोपड़ी, हड्डी और फूटा हुआ वर्तन-युद्ध यात्रा के समय इनका दिखायी देना अशुभ माना गया हैं।

कार्पासं तृष्णशुष्क´च गोमयं वै धनानि च।
अङारं गुडसर्जौ च मुण्डा भ्यक्त... नग्नकम्।।
अयः पङंक चर्मकेशौ उन्मत्तं च नपुंसकम्।
चाण्डालश्वपचाद्यानि नरा बन्धनपालकाः।।
गर्भिणी स्त्री च विधवाः पिण्डयाकादीनि वै मृतम्।
तुषभस्मकपालस्थिभिन्नभाण्डमशस्तकम्।।

वाद्यों का वह शब्द, जिसमें फटे हुए की भंयकर ध्वनि सुनायी पड़ती हो, अच्छा नहीं माना गया हैं। 'चले आओ' यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनायी पडें, तो उत्तम है। किन्तु पीछे की ओर से हो, तो अशुभ माना गया हैं। 'जाओ'- यह शब्द यदि पीछ की ओर से हो, तो उत्तम है, किन्तु आगे की ओर से हो, तो निन्दित होता हैं। कहाँ जाते हों ! ढहरो, न जाओ, वहाँ जाने से तुम्हें क्या लाभ है? - ऐसे शब्द अनिष्ट की सुनना देते हैं।

अशस्तो वाद्यशब्दश्च भिन्नभैरवजर्जरः।
एहीति पुरतः शब्दः शस्यते न तु पृष्ठतः।।
गच्छेति पश्चाच्छब्दोऽग्र्यः पुरस्तात्तु विगर्हिताः।
क्व यासि तिष्ठ मां गच्छ किन्ते तत्र गतस्य च।।

यदि ध्वजा आदि के ऊपर चील आदि मांसाहारी पक्षी बैठ जाँए, घोड़े, हाथी आदि वाहन लड़खडा़कर गिर पड़े, हथियार टूट जाँय, द्वार आदि के द्वारा मस्तक पर चोट लगे तथा छत्र और वस्त्र आदि को कोई गिरा दे, तो ये सब अपशकुन मृत्यु का कारण बनते हैं।

अनिष्टशब्दा मृत्वर्थं क्रव्यादश्च ध्वजादिगः।
शिरोघातश्च द्वाराद्यैश्छत्रवासादिपातनम्।

यदि यात्रा के समय उक्त अपशुकल दिखायी दे, तो भगवान् विष्णु की पुजा और स्तुति करने से अमंगल का नाश होता हैं। किन्तु यदि दूसरी बार भी इन अपशकुनों का दर्शन हो, तो घर लौट जाना चाहिए।

हरिमभ्यर्च्य संस्तुत्य स्यादमङगल्यनाशनम्।
द्वितीयं तु ततो दृष्ट्वा विरुद्धं प्रविशेद्गृहम्।।

4.5 यात्राकालिक शुभाशुभ शकुन फल विचार

यात्रा के समय कुछ शुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए अग्निपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया हैं। भरे हुए घड़े का दिखायी देना तो बहुत ही उत्तम हैं। मांस, मछली, दूर का कोलाहल अकेला वृद्धपुरूष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दुर्वा, ताजा गोबर, वेश्या, सोना, चाँदी, रत्न बच, सरसों आदि औषधियाँ, मूँग, आयुधों में तलवार, छाता, पीढा, राजचिन्ह्, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दुध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभसूचक वचन, भक्त पुरूषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिलली की चमक तथा मन का सन्तोष-ये सब शुभ शकुन हैं।

श्वेताः सुमनसः श्रेष्ठाः पूर्णकुम्भो महोत्तमः।
मासं मत्स्या दूरशब्दा वृद्ध एकः पशुस्त्वजः।।
गावस्तुरंगमा नागा देवाश्च ज्वलितोऽनलः।
दूर्वार्द्रगोमयं वेश्या स्वर्णरूप्य च रत्नकम्।।
वचासिद्धार्थकौषध्यो मुद्ग आयुधखड्गकम्।
छत्रं पीठं राजलि... शवं रुदितवर्जितम्।।
फलं धृतं दधि पयो ह्यक्षतादर्शमाक्षिकम्।
शङ्ख इक्षुः शुभं वाक्यं भक्तवादित्रगीतकम्।
गम्भीरमेघस्तनितं तण्डत्तुष्टिश्च मानसी।।

सारांश रूप में वहाँ कहा गया है कि एक ओर सब प्रकार के शुभ शकुन और दूसरी ओर मन की प्रसन्नता - ये दोनों बराबर हैं। अर्थात् सभी प्रकार शुभ शकुनों के दिखायी पड़ने पर भी यदि यात्रा के समय मन प्रसन्न न हो, तो यात्रा नहीं करना चाहिए। जैसा कि अग्निपुराण का वचन हैं-

एकतः सर्वलिङ्गनि मनसस्तुष्टिरेकतः।

गरुड़पुराण में शुभाशुभ शकुन विचार

गरुड़पुराण में भी शुभाशुभ शकुन का विचार प्राप्त होता हैं, वहाँ कहा गया हैं कि यात्रा में

यदि दाहिने हरिण, साँप, बन्दर, बिलाव, कुत्ता, सुअर, पक्षी (नीलकण्ठ आदि) नेवला तथा चूहा दिखायीं दे, तो यात्रा मंगलकारी होती हैं।

मृगाहिकपिमार्जारश्वानाः सूकरपक्षिणः।
नकुलो मूषकश्चैव यात्रायं दक्षिणे शुभः।।

इसी प्रकार विप्रकन्या, शंख, भेरी, पृथ्वी, वेणु (वंशी), जल से पुर्ण कुम्भ ली हुई स्त्री का दर्शन यात्रा में शुभ होता हैं। इसी प्रकार यात्रा के समय वाम भाग में श्रृगाल, ऊँट, गदहा आदि का दिखाई देना शुभ का सूचक होता हैं। अशुभ शकुनों का उल्लेख करते हुए वहाँ कहा गया हैं कि यात्रा में कपास, ओषधि, तेल, दहकते हुए अँगारे, सर्प, बाल बिखरे लाल माला पहने और नग्न अवस्था में यदि कोई व्यक्ति दिखाई दे, तो अशुभ होता हैं।

विप्रकन्या शिवा एषां शङखभेरीवसुन्धरा।
वेणुस्त्रीपूर्णकुम्भाश्च यात्रायां दर्शनं शुभम्।।
जम्बूकोष्ट्रखराद्याश्च यात्रायां वामके शुभाः।।
कार्पासौषधितेलं च पक्वाङगर भुजङगमाः।
मुक्तकेशी रक्तमाल्यनग्नाद्यशुभमीक्षितम्।।

यात्राकालिक शकुन का उल्लेख करते हुए नारदपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा काल में रत्ना नामक पक्षी, चूहा, सियारिन, कौआ तथा कबूतर-इनके शब्द वामभाग में सुनायी दे, तो शुभ होता हैं। छुछुन्दर, पिंगला (उल्लू), पल्ली (छिपकली) और गदहा-ये यात्रा के समय वामभाग मे हों, तो श्रेष्ठ हैं। इसी प्रकार कोयल, तोता और भरदूल आदि पक्षी यदि दाहिने भाग में आ जाँय, तो श्रेष्ठ है तथा यात्रा समय में कृकवास (गिरगिट) का दर्शन शुभ नहीं हैं।

रत्नाकुडयशिवाकाककपोतानां गिरस्तथा।
झझभुकहेमवक्षीरस्वराणां वामतो गतिः।।
पीतकारभरद्वाजपक्षिणां दक्षिणा गतिः।
चाषं त्यक्त्वा चतुष्पात्तु शुभदा वामतो मताः।।
कृष्णं त्यक्त्या प्रयाणे तु कृकलासेन वीक्षितः।।

वहाँ बतलाया गया हैं कि यात्रा काल में सुअर, खरगोश, गोधा (गोह) और सर्पो कि चर्चा शुभ होती हैं। किन्तु किसी भूली हुई वस्तु को खोजने के लिए जाना हो, तो इनकी चर्चा अच्छी नहीं होती हैं। वानर और भालुओं की चर्चा का विपरीत फल होता हैं।

वाराहशशगोधास्तु सर्पाणां कीर्तनं शुभम्।

हृतेक्षणं नेष्टमेव व्यत्ययं कपिऋक्षयोः।।

यात्रा में मोर, बकरा, नेवला, नीलकण्ठ और कबूतर दीख जाँय, तो इनके दर्शन मात्र से शुभ होता हैं, परन्तु लौटकर अपने नगर में आने या घर में रोदन शब्द रहित कोई शव (मुर्दा) सामने दीख पड़े तो यात्रा के उदेश्य की सिद्धि होती है। परन्तु लौटकर घर आने तथा नवीन गृह में प्रवेश करने के समय यदि रोदन शब्द के साथ मुर्दा दीख पड़े, तो वह घातक होता हैं।

मयूरच्छागनकुलचापपारावताः शुभाः।
दृष्टमात्रेण यात्रायां व्यस्तं सर्वं प्रवेशने।।
यात्रासिद्धिर्भवेद् दृष्टे शवे रोदनवर्जिते।
प्रवेशे रोदनयुतः शवः शवप्रदस्त।।

यात्रा के समय अपशकुन की चर्चा करते हुए नारदपुराण में कहा गया हैं कि यात्रा के समय पतित, नपुंसक, जटाधारी, पागल, औषधि आदि खाकर वमन (उलटी) करने वाला शरीर में तेल लगाने वाला, वसा, हड्डी, चर्म, अङागर (ज्वालारहित अग्नि), दीर्घरोगी, गुड़, कपास (रूई) नमक, प्रश्न (पुछने या टोकने का शब्द), तृण, गिरगिट, वन्ध्यास्त्री, कुबड़ा, गेरूवा वस्त्रधारी, खुले केश वाला, भूखा तथा नंगा- ये सब सामने उपस्थित हो जाँय, तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होती हैं।

पतितक्लीबजटिलमत्तमत्तवान्तौषधादिभिः।
अभ्यक्तवसास्थिचर्माङागरदारुरोगिभिः।
गुडकार्पासलवणरिपुप्रश्नतृणोरगैः।
वन्ध्याकुजकिकाषायमुक्तकेशबुभक्षितैः।।
प्रयाणसमये नग्नैर्दृष्टैः सिद्धिर्न जायते।।

पुनः शुभ शकुन की चर्चा करने हुए वहाँ कहा गया हैं कि प्रज्वलित अग्नि, सुन्दर घोड़ा, राजसिंहासन, सुन्दरी स्त्री, चन्दन आदि की सुगन्ध, फूल, अक्षत, छत्र, चमार, डोली या पालकी, राजा, खाद्य पदार्थ, ईख, फल, चिकनी मिटटी, अन्न, शहद, घृत, दही, गोबर, चूना, धुला कलश, रत्न (हीरा मोती आदि), भृङागर, गौ, ब्राहमण, नगाड़ा, मृदङग, दुन्दुभि, घण्टा तथा वीणा (बाँसुरी) आदि वाद्यों के शब्द वेदमन्त्र एवं मंगल गीत आदि के शब्द - ये सब यात्रा के समय यदि देखने या सुनने में आवे, तो यात्रा करने वाले लोगों के कार्य सिद्ध करते हैं।

प्रज्वलाग्नीन् सुतुरगनृपासनपुराङगनाः।
गन्धपुष्पाक्षतच्छत्रचामारान्दोलिकं नृपः।
भक्ष्येक्षुफलमृत्स्नान्नमध्वाज्यदधिगोमयाः।।

मद्यमांससुधाधौतवस्त्रशङ्खवृषध्वजाः।
पुण्यस्त्रीपुण्यकलशरत्नभृङ्गारगोद्विजाः।।
भेरीमृदङ्गपटहघण्टावीणादिनिःस्वनः।
वेदमंगलघोषाः स्युः यायिनां कार्यसिद्धिदाः।।

नारदपुराण में यात्रा के समय यदि कोई अपशकुन हो, तो उसका परिहार बतलाते हुए कहा गया हैं कि यात्रा के समय प्रथम बार अपशकुन हो, तो खड़ा होकर इष्टदेव का स्मरण करके फिर चले। दुसरा अपशकुन हो, तो ब्राहाम्णों की पूजा (वस्त्र, द्रव्य आदि से उनका सत्कार) करके चले। यदि तीसरी बार अपशकुन हो जाय, तो यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

आदौ विरुद्धशकुनं दृष्ट्वा यायीष्टदेवताम्।
स्मृत्वा द्वितीये विप्राणां कृत्वा पूजां निवर्तयेत्।।

मूर्ति-प्रतिमाविकार

शकुन विचार के क्रम में आगे मूर्ति-प्रतिमा के विकार के शुभाशुभ का फल कथन करते हुए नारदपुराण में कहा गया है कि देवताओं की प्रतिमा यदि नीचे गिर पड़े, जले, बार-बार रोये, गावे, पसीने से तर हो जाय, हँसे, अग्नि, धुआँ, तेल, शोभित, दुध या जल का वमन करे, अधेमुख हो जाय तथा इसी तरह की अनेक अद्भुत बातें दीख पड़े, तो या प्रतिमा-विकार करलाता हैं यह विकार अशुभ फल का सूचक होता हैं।

देवता यत्र नृत्यन्ति पतन्ति प्रज्वलन्ति च।
मुहू रुदन्ति गायन्ति प्रस्विद्यन्ति हसन्ति च।
वमन्त्यग्निं तथा धूमं स्नेह रक्तं पयो जलम्।
अधोमुखाधितिष्ठन्ति स्थानात्स्थानं व्रजन्ति च।।
एवमाद्या हि दृश्यन्ते विकाराः प्रतिमासु च।।

इसी प्रकार शुभाशुभ विविध विकारों का उल्लेख करते हुए कहा गया हैं कि यदि आकाश में गन्धर्वनगर (ग्राम के समान आकार) दिन में ताराओं का दर्शन, उल्कापतन, काष्ठ, तृण और शोणित की वर्षा, गन्धर्वो का दर्शन, दिग्दाह, दिशाओं में धुत छा जाना, दिन या रात्रि में भूकम्प होना, बिना आग के स्फुलिङग (अंङगार) दीखना, बिना लकड़ी के आग का जलना, रात्रि मे इन्द्रधनुष या परिवेश की चिनगारियों का प्रकट होना आदि दिखायी देने लगे, गौ, हाथी और घोड़े के दो अरूणोदय- से प्रतीत हो, गाँव में गीदडों का दिन में बास हो, धुमकेतुओं का दर्शन होने लगे तथा रात्रि मे कौओं का और दिन में कबूतरों का क्रन्दन हो, तो ये भंयकर उत्पात की सूचना देते हैं। इसी

प्रकार वृक्षों में बिना समय के फूल दीख पड़े, तो उस वृक्ष को काट देना चाहिए और उसकी शान्ति कर लेनी चाहिए। इस प्रकार के और भी जो बड़े-बड़े उत्पात दृष्टिगोचर होते हैं, वे स्थान (देश या ग्राम) का नाश करने वाले होते हैं।

महोल्कापतनं काष्ठतृणरक्तप्रवर्षणम्।
गान्धर्वदेहदिग्धूमं भूमिकम्पं दिवा निशि।।
अनग्नौच स्फुलिङगश्च ज्वलनं च विनेन्धनम्।
निशीन्द्रचापमण्डकं शिखरे श्वेतवायसः।
दृश्यन्ते विस्फुलिङगश्च गोगजाश्वोष्ट्रगात्रतः।
जन्तवो द्वित्रिशिरसो जायन्ते वापि योनिषु।
प्रातः सूर्याश्चतसृषु ह्रार्दितायुगपद्रवेः।
जम्बूकग्रामसंवासः केतूनां च प्रदर्शनम्।।
काकानामकुलं रात्रौ कपोतानां दिवा यदि।
अकाले पुष्पिता वृक्षा दृश्यन्ते फलिता यदि।
कार्यं तच्छेदनं तत्र ततः शान्तिर्मनीषिभिः।
एवमाद्या महोत्पाता बहवः स्थाननाशदाः।।

इस प्रकार के अन्य भी जो बड़े -बड़े उत्पात दृष्टिगोचर होते हैं, वे स्थान (देश या ग्राम) का नाश करने वाले होते हैं। कितने ही उत्पात घातक होते हैं, कितने ही शत्रुओं से भय उपस्थित करते हैं। कितने ही उत्पातों से भय, यश, मृत्यु, हानि, कीर्ति, सुख-दुःख और की प्राप्ती भी होती हैं। यदि बल्मीक (दीपक की मिट्टी के ढेर) पर शहद दीख पड़े, तो धन की हानि होती हैं। इस तरह के सभी उत्पातों में यत्नपूर्वक कल्पोक्त विधि से शान्ति अवश्य कर लेनी चाहिए।

केचिन्मृत्युप्रदाः केचिच्छत्रुभ्यश्च भयप्रदाः।
मध्याद् भयं यशो मृत्युः क्षयः कीर्तिः सुखासुखम्।।
ऐश्वर्यं धनहानिं च मधुच्छन्नं च वाल्मिकम्।
इत्यादि च सर्वेषूत्पातेषु द्विजोत्तम।।
शान्ति कुर्यात् प्रयत्नेन कल्पोक्तविधिना शुभम्।।

छींक के शुभाशुभफल-विचार

मनुष्य के जीवन में छींक द्वारा भी शुभ और अशुभ शकुन की सूचना मिलती हैं। पुराणों में हिक्का (छींक) के शुभशुभ फलों का विवेचन प्राप्त होता हैं। गरूणपुराण में छींक के शुभ-अशुभ

फलों का वर्णन मिलता हैं। वहाँ कहा गया हैं कि पूर्व दिशा में छींक होने पर बहुत बड़ा फल प्राप्त होता हैं। अग्निकोण में छींक होने पर शोक और सन्ताप तथा दक्षिण में छींक होने पर हानि उठानी पड़ती हैं। नैर्ऋत्यकोण में छींक होने पर शोक और सन्ताप तथा में छींक होने पर मिष्ठान की प्राप्ति और उत्तर में छींक होने पर कलह होता हैं। ईशान कोण में छींक होने पर मृत्यु के समान कष्ट प्राप्त होना बतलाया गया हैं।

हिक्काया लक्षणं वक्ष्ये लभेत्पूर्वे महाफलम्।
आग्नेये शोकसन्तापौ दक्षिणे हानिमाप्नुयात्।।
नैर्ऋत्ये शोकसन्तापौ मिष्टान्नं चैव पश्चिमे।
अर्थं प्राप्नोति वायव्ये उत्तरकलहो भवेत्।।
ईशाने मरणं प्राक्तं हिक्कायाश्च फलाफलम्।।

इसी प्रकार नारदपुराण में यात्रा के समय के छींक का शुभाशुभ फल कथन करते हुए कहा गया है कि यात्रा के समय सभी दिशाओं की छींक निन्दित हैं। गौ की छींक घातक होती हैं, किन्तु बालक, वृद्ध, रोगी या कफ वाने मनुष्य की छींक निष्फल होती हैं।

बोध प्रश्न -

1. जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाय, उसे क्या कहते है?
   क. प्रश्न ख. शकुन शास्त्र ग. मुहूर्त्त घ. संहिता
2. शकुन का शाब्दिक अर्थ होता है?
   क. पशु ख. मानव ग. पक्षी घ. कीट
3. अंग स्फुरण निम्न में किसका अंग है?
   क. प्रश्न शास्त्र का ख. संहिता का ग. शकुन का घ. कोई नहीं
4. पल्लीपतन का अर्थ है?
   क. कीट का गिरना ख. छिपकली का गिरना ग. मनुष्य का गिरना घ. कुछ नहीं
5. अग्नि पुराण के अनुसार शकुन के कितने भेद है?
   क. २ ख.३ ग.४ घ.५
6. दैवचिन्तक ज्योतिषियों द्वारा शकुन के कुल कितने भेद कहे गये है?
   क.५ ख.६ ग.७ घ.८
7. दीप्त और शान्त निम्न में किसके भेद कहे गये है।
   क. शकुन के ख. प्रश्न के ग. ग्रह के घ. नक्षत्र के

8. यात्रा के समय गौ की छिंक का शकुन फल क्या है।

क. शुभ ख. घातक ग. अशुभ घ. मृत्युदायक

9. गौ का अचानक डकारने का फल क्या है।

क. स्वामी को सुख प्राप्ति ख. गौ स्वामी पर संकट आना ग. धन प्राप्ति घ. कोई नहीं

4.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि 'शुभशंसि निमित्ते च शुकनं स्यात्रपुंसकम' इस वचन के अनुसार जिसमें कुछ लक्षणों को देखकर शुभाशुभ का विचार किया जाता है, उस शास्त्र को **शकुनशास्त्र** कहते है। शकुन का अर्थ पक्षी होता है, पक्षी से पशु तथा अन्य जीवों का भी बोध होता है। शकुन का दूसरा अर्थ निमित्त भी है, जिससे अंग-स्फुरण, छींक, पल्लीपतन, सरटाधिरोहण तथा अन्य लक्षणों द्वारा भविष्य का ज्ञान प्रात होता है। मनुष्यों के पूर्वजन्मार्जित जो शुभाशुभ कर्म हैं, उन कर्मो के शुभाशुभ फल को गमनकालिक शकुन प्रकाशित करता है। ज्योतिष में शकुन स्कन्ध का अप्रतिम स्थान है। ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सभी स्कन्धों में शकुन का सर्वप्रथम प्राकटऋ हुआ होगा, क्योंकि जब आदि मानव ज्योतिष के गणित पक्ष से अनभिज्ञ रहा होगा, तब भी अंग- स्फुरण, पशु चेष्टा अथवा प्राकृतिक हलचलों से भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता होगा। अन्धकासुर के वध के समय भगवान् शंकर ने पशु–पक्षियों के अस्वाभाविक हलचल देखे थे, वे ही शकुन नाम से कहे गये हैं। पुनः तारकासुर से युद्ध के पूर्व स्वामि कार्तिकेय को भगवान् शंकर ने शकुन का उपदेश किया। जम्भासुर से युद्ध के लिए तैयार इन्द्र ने कश्यप ऋषि को तथा कश्यप ने गरूड जी को, गरूड ने अत्रि, गर्ग, भृगु, पराशर अदि मुनियों को शकुन का उपदेश किया है।

शकुन जानने वाले ज्योतिर्विदों को गणितादि की आवश्यकता नहीं पड़ती। पंचांग, फलित अथवा जन्मसमयादि के विना भी भविष्य का फल शकुन द्वारा जाना जाता है। वेद, पुराण, इतिहास, स्मृति तथा अन्य सभी भारतीय ग्रन्थों में कहीं न कहीं शकुन का वर्णन अवश्य प्राप्त होता है।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

शकुन – शकुन का शाब्दिक अर्थ है –पक्षी। दूसरा अर्थ निमित्त भी होता है।

पल्ली – छिपकली

अश्व – घोड़ा

गज – हाथी

गौ – गाय

पंचांग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के समूह को पंचांग कहते है।

ज्योतिर्विद – ज्योतिष शास्त्र को जानने वाला

निमित्त – कारण

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ग
4. ख
5. क
6. ख
7. क
8. ख
9. ख

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वृहत्संहिता –

वशिष्ठ संहिता –

नारद संहिता –

अग्नि पुराण

अद्भुतसागर

ज्योतिष रहस्य

4.10 सहायक पाठ्यसामग्री

वृहत्संहिता –

वशिष्ठ संहिता –

नारद संहिता –

अग्नि पुराण

अद्भुतसागर

ज्योतिष रहस्य

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.शकुन से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिये।

2. शकुन के प्रकारों का उल्लेख कीजिये।

3. पुराण आधारित शकुन फल लिखिये।

4. वशिष्ठ संहिता के आधार पर शकुन का शुभाशुभ फल लिखिये।

5. पल्लीपतन विचार का उल्लेख कीजिये।

6. इकाई पर आधारित पशु-पक्षीयों के शुभाशुभ शकुन विचार का फल लिखें।

इकाई – 5 शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 स्वप्न परिचय

5.3.1 स्वप्न के प्रकार एवं कारण

5.3.2 भारतीय स्वप्न विद्याओं की विशेषता

5.4 स्वप्नकमलाकर ग्रन्थानुसार स्वप्न के शुभाशुभ फल विचार

5.5 पुराण एवं अन्य आधारित शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

5.6 सारांश

5.7 पारिभाषिक शब्दावली

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

5.10 सहायक पाठ्यसामग्री

5.11 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एमएजेवाई-607 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – शुभाशुभ स्वप्न फल विचार। इससे पूर्व आपने शकुन फल विचार से जुड़े विषय का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में 'स्वप्न' के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

स्वप्न मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। वस्तुत: प्रत्येक मानव अपने जीवन में कभी-न कभी एक बार स्वप्न अवश्य देखता है। वेद-वेदांगों एवं पुराणों में कथित स्वप्न फल विचार का इस इकाई में आप विधिवत् अध्ययन करेंगे।

आइए इस इकाई में हम लोग 'स्वप्न' तथा उसके शुभाशुभ फलों के बारे में जानने का प्रयास करते है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- स्वप्न को परिभाषित कर सकेंगे।
- स्वप्न के प्रकार को समझा सकेंगे।
- स्वप्न आने वाले कारकों को जान लेंगे।
- स्वप्न के शुभाशुभ फल की मीमांसा कर सकेंगे।
- वेद,पुराण तथा ज्योतिष शास्त्र के आधार पर शुभाशुभ स्वप्न फल विचार ज्ञान की प्राप्ति कर लेंगे।

5.3 स्वप्न परिचय

संस्कृत वाङ्मय में स्वप्न विद्या को परा विद्या का अंग माना गया हैं। अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया हैं। फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं हैं न तो कामज या इच्छित विकारों का प्रतिफलन मात्र है।

सामान्य रूप से वेदान्त की विधा में कहा जाए तो स्वप्न लोक की तरह या दृश्य लोक क्षणभंगुर हैं। इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता हैं। रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भिखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही हैं; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न

में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं। त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया। ये सब ऐसे उदाहरण हैं जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते हैं। स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती हैं।

5.3.1 स्वप्न के प्रकार एवं कारण

स्वप्नकमलाकर ग्रन्थ में स्वप्न को चार प्रकार का माना गया हैं- (1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभ स्वप्न और (4) मिश्र स्वप्न।

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि को साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये हैं। स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये हैं- (1) श्रुत (2) अनुभूत (3) दृष्ट (4) चिन्ता (5) प्रकृति (स्वभाव) (6) विकृति (बीमारी आदि से उत्पन्न) (7) देव (8) पुण्य और (9) पाप।

प्रकृति और विकृति कारणों में काम (सेक्स) और इच्छा आदि का अन्तर्भाव होगा। दैवी आदेश वाले स्वप्न उसी व्यक्ति को मिलते हैं जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते हैं। जिनका हृदय राग-द्वेष से रहित और निर्मल होता हैं।

देव, पुण्य और पाप भाव वाले तीन प्रकार के स्वप्न सर्वथा सत्य सिद्ध होते हैं। शेष छः कारणों से उत्पन्न स्वप्न अस्थायी एवं शुभाशुभ युक्त होते हैं।

मैथुन, हास्य, शोक, भय, मूत्रमल और चोरी के भावों से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ होते हैं-

रतोर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः।
प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्।।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार दश इन्द्रियाँ और मन जब निश्चेष्ट होकर सांसारिक चेष्टा से, गतिविधियों से पृथक् होते हैं तो स्वप्न उत्पन्न होते हैं। इस परिभाषा के अनुसार विदेशी विचारकों के इस कथन को बल मिलता हैं जिसमें वे स्वप्न का मुख्य कारण जाग्रत अवस्था के दृश्यों को मानते हैं-

सर्वेन्द्रियाण्युपरतौ मनो ह्युपरतं यदा।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं नानारूपं प्रपश्यति।।

आचार्य बृहस्पति द्वारा प्रदत्त स्वप्न की यह अवस्था सूचित करती हैं कि प्रत्यक्ष रूप से शरीर का कोई भी भाग जब तक काम करता रहेगा स्वप्न नहीं आयेगा। यहाँ तक कि मन को भी

शिथिल होकर निद्रित होना आवश्यक हैं। बच्चे जब स्वप्न को देखकर हंसते या रोते हैं तब धीरे से उनके शरीर को छूने मात्र से स्वप्न भंग हो जाता हैं। कुछ लोगों का मानना हैं कि प्रगाढ़ निद्रा की अवस्था में स्वप्न नहीं आते। यह सिद्धान्त वाक्य नहीं हैं। निद्रा की प्रगाढ़ता में भी स्वप्न की तरंगे उठती हैं।

स्वप्न देखने के लिए चाक्षुष प्रत्यक्ष कारणों का होना आवश्यक नहीं हैं। यह सत्य हैं कि स्वप्न में उन्हीं वस्तुओं का दर्शन होता हैं जिन्हें हम जाग्रत अवस्था में कभी न कभ देखे हुए होते हैं; परन्तु दुर्लभ ही सही पर वैसे भी स्वप्न आते हैं जिन्हें हम कभी पूर्व प्रत्यक्ष नहीं मान सकते। उदाहरण के तौर पर अदृष्य पूर्व भूमि, दूसरे लोक के दृश्य, आकाश गंगा आदि। स्वप्नों का अवतरण मानस लोक से ही होता है, पर दैविक स्वप्न में मन उपकरण बनता हैं। अतः स्वप्न को मानस से अतिरिक्त व्यापार या मानस का व्यापार दोनों ही नहीं की सकते। ऋषियों ने स्वप्न को उतना ही सहज माना हैं जितने प्राकतिक घटनाओं को जैसे- सूर्यादय, सूर्यास्त। पाप पुण्य से उत्पन्न स्वप्न 'अपुर्व घटना' की कोटि में आते हैं।

स्वप्न में आवाजें आती हैं। इन आवाजों का दृश्य विहीनता के बावजूद स्वप्न कोटि में रखा जा सकता हैं ओर ये आवाजें कभी-कभी पूर्ण सत्य भी सिद्ध होती हैं। ऐसे स्वप्नों को कर्णेन्द्रिय प्रधान स्वप्न कह सकते हैं। स्वप्न देखने में सर्वाधिक बिम्ब चाक्षुष ही होते हैं। शेष इन्द्रियाँ चाक्षुष बिम्बों का सहयोग मात्र करती हैं। अतः प्रयोग बनता हैं स्वप्नद्रष्टा, स्वप्नजीवी, स्वप्नलोक आदि। जन्मान्ध व्यक्तियों को जो स्वप्न आते हैं या आयेगें वे अधिक मात्रा में दृश्यविहीन होंगे। स्वप्न लाल, पीले, काले, नीले, उजले रंगो से युक्त भी हो सकते हैं और रंगविहीन भी। इस प्रकार या कहा जा सकता है कि दृश्य प्रतीकों के बिना भी स्वप्न आ सकते हैं। स्वप्न का दर्शन, स्वप्न का श्रवण और स्वप्न का स्पर्शन भी हो सकता हैं। स्वप्न में हम महसूस कर सकते हैं कि हमारे बगल में कोई सोया हुआ है और कभी-कभी उसे स्वप्न मे ही छूकर आश्वस्त भी हो लेते हैं। स्वप्न सृष्टि के उस अवस्था विशेष का नाम हैं जो जग्रत या चेष्टित अवस्था के विपरीत काल में ही अवतरित होता हैं। स्वप्न अवतरण के काल अपना विशेष महत्व रखते हैं। जिस काल में स्वप्न आ रहा है वह काल उस स्वप्न की चरितार्थता को सिद्ध करता हैं। अतः काल के क्षण, घंटे, प्रहर, संधिकाल भविष्यत् अनुमान या कथन के लिए महत्वपूर्ण नियामक बनते हैं। एक रात को चार खण्ड में बाँट कर स्थूलतः तीन-तीन घंटे का एक याम या खण्ड मान सकते हैं। रात्रि का प्रविभाग निम्नलिखित प्रकार के कर सकते हैं-

(1) प्रदोषकाल (प्रथम प्रहर) से तीन धंटे तक

(2) अर्द्धरात्रि से पूर्व (द्वितीय प्रहर) तीन घंटे तक

(3) अर्द्धरात्रि से बाद (तृतीय प्रहर) के तीन घंटे तक और

(4) सूर्यादय से पूर्व (चतुर्थ प्रहर) तीन घंटे तब

(1) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता हैं। (2) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न छः मास के अंदर अपना फल देता हैं। (3) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न तीन मास के अंदर अपना फल देता हैं। (4) इस खण्ड में देखा गया स्वप्न एक वर्ष के अंदर अपना फल देता। ब्राहामुहूर्त्त में देखा गया स्वप्न उसी दिन अपना फल देता हैं।

अनिष्टकारी स्वप्नों को देखकर जो व्यक्ति सो जाता हैं और बाद में शुभ स्वप्नों को देखता है वह अशुभ फल नहीं प्राप्त करता। अतः अनिष्ट स्वप्न को देख कर फिर से सो जाना चाहिए-

अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात् स्वपेत् पुमान्।

आचार्य बृहस्पति के मतानुसार रात्रि के प्रथम प्रहर में देखा गया स्वप्न एक वर्ष में तथा द्वितीय प्रहर में देखा गया स्वप्न आठ मास के अंदर, तृतीय प्रहर में देखा गया स्वप्न तीन मास में, चतुर्थ प्रहर में देखा गया स्वप्न एक मास में तथा अरूणोदय बेला या ब्राहामुहूर्त में देखा गया स्वप्न दश दिन के अन्दर अपना फल देता हैं-

स्वप्ने तु प्रथमे यामे संवत्सरविपाकिनः।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके।।
चतुर्थयामे यः स्वप्नो मासे स फलदः स्मृतः।
अरुणोदयवेलायां दशाहेन फलं भवेत्।।

सूर्योदय काल में स्वप्न देखकर जाग जाने के बाद वह स्वप्न अपना तत्काल फल देता हैं। दिन में मन में सोच कर सोने के बाद यदि उसी का स्वप्न निर्देशात्मकि आया तो समझें यह स्वप्न शीघ्र ही अपना फल देगा।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः।
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वच लभेद् ध्रुवम्।। (ब्रह्मवैवर्तमहापुराणम्, 77/7)

कफ प्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति जल तथा जलीय पदार्थों का सर्वाधिक स्वप्न देखता हैं। वातप्रधान प्रकृति वाला व्यक्ति हवा में उड़ता हैं और ऊँचाई पर चढ़ता तथा ऊँचाई से कूदता हैं। पितृ प्रकृति वाला व्यक्ति अग्नि की लपटों, स्वर्ण तथा ज्वलित चीजों को देखता हैं।

5.3.2 भारतीय स्वप्न विद्या की विशेषता

भारतीय स्वप्नविदों ने दुःस्वप्न नाशन के लिए कुछ अपूर्व मंत्रों तथा उपायों को खोज रखा हैं। स्वप्न शास्त्र के सभी ग्रन्थों में प्रायशः ये विधान दिये गये हैं। रोग और सूक्ष्म आत्माओं के

दुष्प्रभाव से उत्पन्न दुः स्वप्न नाश के लिए वेदों में भी मंत्र दिये गये हैं। इन मंत्रों के प्रभाव से निश्चित ही लाभ मिलता हैं।

इन उपायों को देखने मात्र से प्रतीत होता हैं कि भारतीय ऋषियों ने स्वप्न को दैवत सृष्टि का अंश मान कर उसे मनुष्य के जन्मान्तरार्जित पुण्य-पापों का प्रदर्शक या सूचक तत्व माना हैं।

स्वप्न विद्या में तात्कालिक मृत्यु या शीघ्र आने वाली मृत्यु के लक्षणों को भी दिया गया हैं। इससे सिद्ध होता हैं कि अपमृत्यु के सूचक लक्षण चाहे वे जिस कारण से उत्पन्न होते हों स्वप्न की परिधि में आते हैं।

दुःस्वप्न, दुःस्वप्न नाश और आसन्न मृत्यु लक्षण स्वप्न विद्या के अन्तर्गत आने वाले विषय हैं।

कुछ स्वप्नों की व्याख्या उनकी प्रकृति के आधार पर की जा सकती हैं। सभी प्रकार के सफेद पदार्थ स्वप्न में दिखने पर शुभ फल देते हैं कपास, भस्म, भात और मट्ठा को छोड़ कर। इसी प्रकार काली वस्तुएं गो, हाथी, देवता, ब्राहाम्ण और घोड़ा छोड़कर सभी प्रकार का अनिष्ट फल देती हैं-

सर्वाणि शुक्लान्यतिशोभनानि
कार्पास भस्मौद्रतक्रवर्ज्यम्।
सर्वाणि कृष्णान्यतिनिंदितानि
गोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यम्।।

संसार में जितने शुभ पदार्थ हैं वे आवश्यक नहीं कि स्वप्न में दिखलायी पड़ने पर शुभ फल ही दें। ठीक इसी तरह सभी प्रकार के अशुभ पदार्थ स्वप्न में दृष्ट होने पर प्रायशः शुभ फल के सूचक होते हैं-

लौकिकव्यवहारे ये पदार्थाः प्रायशः शुभाः।
सर्वथैव शुभास्ते स्युरिति नैव विनिश्चयः।।

5.4 स्वप्नकमलाकर के अनुसार स्वप्न का शुभाशुभ फल विचार-

स्वप्नकमलाकरः के प्रथमः कल्लोलः में मंगलम् वस्तुनिर्देशात्मकम् -

श्रीनृसिंहं रमानाथं गोकुलाधीश्वरं हरिम्।
वन्दे चराचरं विश्वं यस्य स्वप्नायितं भवेत्।

स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि मुह्यन्ते यत्र सूरयः।

नानामतानि संचिन्त्य यथाबुद्धिबलोदयम्।।

मैं (ज्योतिर्विद् श्रीधर) भगवान् नृसिंह, श्री रमानाथ (श्री रामचन्द्र) तथा गोकुलपति भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ, जिनकी उत्पत्ति से यह समग्र चर अचर विश्व स्वप्नायित हो रहा हैं।

नाना प्रकार के मतों (स्वप्न सम्बन्धित सिद्धान्तों) को अपने शास्त्रज्ञान स्वरूप बल तथा बुद्धि के प्रयोग से चयनित कर स्वप्नाध्याय की रचना कर रहा हूँ, जिसकी व्याख्या में बड़े-बड़े विद्वान भी मोहित हो जाते हैं।

स्वप्नं चतुर्विधं प्रोक्तं दैविकं कार्यसूचकम्।

द्वितीयं तु शुभस्वप्नं तृतीयमशुभं तथा।।

मिश्रं तुरीयमाख्यातं मुनिपुंगवकोटिभिः।

तत्रादौ दैविकस्वप्ने मन्त्रसाधनमुच्यते।।

स्वप्न चार प्रकार के कहे गये हैं- (1) दैविक स्वप्न जो कार्यसूचक होता हैं (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभस्वप्न तथा (4) मिश्र स्वप्न यानि शुभाशुभ स्वप्न ऐसा अनेक प्राचीन श्रेष्ठ मुनियों का मत हैं।

प्रथम दैविक स्वप्न के लिए मन्त्रों के साधन भूत उपायों को प्रदर्शित किया जा रहा हैं।

तदादौ काल-यामानां विचारं कुर्महे वयम्।

तत्र च प्रथमे यामे स्वप्नं वर्षेण सिध्यति।।

प्रथमतया स्वप्न फल विचार हेतु स्वप्न-काल का विचार करते हैं। प्रथम याम में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष में फलीभूत होता हैं। दिवा-रात्रि में कुल 8 याम होते हैं। तीन घण्टे का एक याम होता हैं रात्रि में प्रथम याम में देखा हुआ स्वप्न एक वर्ष बीतते-बीतते अपना फल देता हैं।

द्वितीये मासषट्केन षड्भिः पक्षैस्तृतीयके।

चतुर्थे त्वेकमासेन प्रत्यूषे तद्दिनेन च।।

रात्रि के द्वितीय याम में देखा हुआ स्वप्न छः मास के अन्दर अपना फल देता हैं और तृतीय याम में देखा हुआ स्वप्न तीन माय के अन्दर फलीभूत होता हैं। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में देखा स्वप्न एक मास के अन्दर प्रत्यक्ष फल देता हैं। ब्राम्हामुहूर्त का दृष्ट स्वप्न उसी दिन अपना फल दिखाता हैं।

गोरेणूच्छुरेण चाथ तत्कालं जायते फलम्।

स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्।।

गौओं के चरने जाते समय (सूर्यादय से तत्काल पूर्व) देखा हुआ स्वप्न तत्काल फल देता हैं। रात्रि में देखे हुए स्वप्न को प्रातःकाल अपने गुरू से शुभाशुभ ज्ञान हेतु कहना चाहिए।

तमन्तरेण मन्त्रज्ञः स्वयं स्वप्नं विचारयेत्।
यानि कृत्यानि भावीनि ज्ञानगम्यानि तानि तु।।

यदि गुरू (स्वप्नवेत्ता) न हो तो स्वयं मंत्रज्ञ व्यक्ति को स्वप्न फल का विचार करना चाहिए। भविष्य में घटने वाली घटनायें ज्ञान द्वारा जानी जाती हैं।

आत्मज्ञानाप्तये तस्माद् यतितव्यं नरोत्तमैः।
कर्मभिर्देवसेवाभिः कामाद्यरिगणक्षयात्।।

अतः आत्मज्ञान के लिये श्रेष्ठ व्यक्ति को अनवरत प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह आत्मज्ञान कर्म, देव सेवा और कामादि शत्रुओं के समूह के दमन से प्राप्त होता हैं।

द्वितीयः कल्लोलः

(स्वप्न कमलाकर के प्रथम कल्लोल में स्वप्नसिद्धि के विविध मंत्र और उनकी प्रक्रिया का प्रतिपादन किया गया हैं। इन मंत्रो के माध्यम से भूत-भावि-वर्तमान तीनों प्रकार के स्वप्नों का रहस्य जाना जा सकता हैं। द्वितीय कल्लोल में स्वप्न की प्रकृति और उसका कारण वर्णित हैं। इस कल्लोल में मात्र शुभस्वप्नों का ही फल कहा गया हैं।)

स्वप्नफलद्रष्टुर्योग्यता-

अथ नानाविधान् ग्रन्थान् समालोच्यावलोडय च।
अस्मिन् द्वितीये कल्लोले शुभस्वप्नफलं ब्रुवे।।
यस्य चित्तं स्थिरीभूतं समाधातुश्च यो नरः।
तत्प्रार्थितं च बहुशः स्वप्ने कार्यं प्रदृश्यते।।

अब क्रम प्राप्त द्वितीस कल्लोल में अनेक प्रकार के ग्रन्थों की समीक्षा कर तथा उनका आलोडन कर शुभस्वप्नों के शुभफल को की रहा हूँ। जिस मनुष्य का चित्त स्थिर हैं तथा जिस मनुष्य का शरीर समधातु (वात-कफ-पित्त रूप त्रिधातु) हैं यानि वात-पित्त और कफ की मात्रा संतुलित हैं। (स्वस्थ व्यक्ति में धातु सम होता हैं।) उसके द्वारा इचिछत या प्रर्थित स्वप्न प्रायशः कार्य की सूचना दे देता हैं। आशय यह है कि स्वप्न में दैवी आदेश उसी व्यक्ति को मिलता हैं जिसकी चित्तवृत्तियाँ और शरीर दोनों ही स्वस्थ हों।

स्वप्नकारणम्ः-

स्वप्नप्रदा नव भुवि भावाः पुंसां भवन्ति हि।

श्रुतं तथानुभूतं च दृष्टं तत्सदृशं तथा।।

चिन्ता च प्रकृतिश्चैव विकृतिश्च तथा भवेत्।

देवाः पुण्यानि पापानीत्येवं जगतीतले।।

मनुष्य के फल को प्रदर्शित करने वाने नौ भाव पुथ्वी पर प्रसिद्ध हैं जैसे- (1) श्रुत (सुना हुआ), 2. अनुभूत (अनुभव किया हुआ), 3. दृष्ट (देखा हुआ), 4. चिन्ता (मानसिक द्वन्द्व से उत्पन्न), 5. प्रकृति (स्वभाव के कारण उत्पन्न), 6. विकृति (जो मूल का विलोम हो), 7 देव (देवता से प्रेरित या दृष्ट) 8. पुण्य (जप, तप, धर्मादि से दृष्ट), 9. पाप (हत्या, षडयन्त्र एवं अपराध के कारण दृष्ट)। इन्हीं नौ भावों के अनुरूप किसी भी मनुष्य को स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं।

तन्मध्य आद्यं षट्कं तु शिवं वाशिवमप्यथ।

अन्त्यं त्रिकं तथा नृणामचिरात्फलदर्शकम्।।

प्राज्ञेन पुरूषेणेहावश्यं ज्ञेयः स्वचेतसि।

स्वप्नो विचार्यस्तस्यार्थस्तथा चैकाग्रचेतसा।।

इनमें से प्रारम्भ के छः संख्या तक के स्वप्नभाव शुभ या अशुभ दोनों प्रकार क फल देते हैं। अंतिम तीन स्वप्नभाव मनुष्यों के लिए यथाशीघ्र फलदायक होते हैं। बुद्धिमान् मनुष्य को एकाग्रचित्त होकर अपने मन में दृष्ट स्वप्न और उसके भविष्यत् अर्थ को गंभीरतापूर्वक अवश्य विचारना चाहिए।

व्यर्थस्वप्नः-

रतेर्हासाच्च शोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः।

प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्।।

रति (मैथुन), हास्य, शोक, भय, मुत्र-मल और प्रणष्ट (चोरी गयी वस्तु) की चिन्ता से उत्पन्न स्वप्न व्यर्थ चला जाता हैं; अर्थात् उस समय स्वप्न का कोई तात्विक अर्थ नहीं रहता।

धातुक्षोभजनितस्वप्नफलम्-

कफप्लुतशरीरस्तु पश्येद् बहुजलाशयान्।

नद्यः प्रभूतसलिला नलिनानि सरांसि च।।

जिस शरीर में कफ की अधिकता हो वह स्वप्न में जलाशया को देखता हैं। प्रभूत (अधिक) जल वाली नदियों तथा कमल से युक्त सरोवरों को देखता हैं।

स्फटिकै रचितं सौधं तथा श्वेतं च गहरम्।

तारागणं च चन्द्रं च तोयदानां च मण्डलम्।।

रसांश्च मधुरान् दिव्यान् फलानि विविधानि च।

आज्यं यज्ञोपकरणं यज्ञमण्डपमुत्तमम्।।

कफाधिक्य से युक्त शरीर को स्फटिक के बने भव्य भवन, उज्जवल गुफायें, तारागण, चन्द्रमा और मेघों की पंक्तियाँ दिखलाई देती हैं। अनेक प्रकार के मधुर रस, दिव्य विविध प्रकार के फल, घृत, यज्ञ की सामग्री तथा उत्तम यज्ञमण्डप आदि दिखलाई पड़ते हैं।

शुभालङ्काकरशालिन्यः पृथुलस्तनमण्डलाः।
सुलोचनाः पीनशक्थि च परिशोभितमध्यमाः।।
श्वेतवस्त्रैः श्वेतमाल्यैर्विकासन्त्यश्च योषितः।
पित्तप्रकृतिको यश्च सोऽग्निमिद्धं प्रपश्यति।।

(कफ प्रकृति वाले पुरूष को) शुभ अलंकारों से युक्त गृहिणियाँ दिखाती हैं; जिनके स्मनमण्डल प्रशस्त होते हैं। वे सुन्दर आँखों वाली होती हैं और उनके भरपूर मांसल जंघे होते हैं एवं सुन्दर कटिभाग से जो सुशोभित हो रही हों (वे दिखलाई देती हैं) अपने श्रेव्त वस्त्रों और श्रेव्त मालाओं से प्रकाश फैलाती महिलायें दिखलाई पड़ती हैं। पित्त प्रकृति वाला शरीर (व्यक्ति) प्रज्वलित अग्नि देखता हैं।

विद्युल्लतायाश्च तेजस्तथा पीतां वसुन्धराम्।
निशितानि च शस्त्राणि दिशो दावानलार्दिताः।।
फुल्लास्त्वशोकतरवो गांगेयरं चापि निर्मलम्।
किच प्ररूढकोपः संघातपातादिकाः क्रियाः।।

पित्त प्रधान व्यक्ति को विद्युल्लता (आकाशीय तथा कृत्रिम) का तेज तथा पीली पृथ्वी, अत्यन्त तीक्ष्ण शस्त्र, दवानल से व्याप्त दिशायें (पित्त प्रकृति वाले को) दिखलाई पड़ती हैं। प्रफुल्ल अशोक के वृक्ष, गड्डा, से सम्बन्धित निर्मल भूमि, तटादि अथवा क्रोध से आविष्ट तथा संघात चोट चपेट के कारण स्वयं को ऊँचाई से गिरना दिखलाई देता हैं।

करोत्यात्मैवेति पश्येज्जलं चापि पिबेद् बहु।
वातप्रकृतिको यश्च स पश्येतुङगरोहणम्।।
तुङगद्रमांश्च विविधान् पवनेन प्रकम्पितान्।
वेगगामितुरङांगश्च पक्षिभिर्गमनं स्वयम्।।1

बहुत मात्रा में जल का पीना, जल देखना, पित्त प्रकृति वाला व्यक्ति स्वप्न में देखता हैं। जो वात प्रकृति वाला व्यक्ति होता हैं वह स्वयं को ऊँचे स्थल पर चढ़ता हुआ देखता हैं। उच्च विविध

वृक्षों को हवा से प्रकम्पित होता देखता हैं। वेगशाली घोड़ो को देखख हैं तथा पक्षियों के साथ स्वयं का गमन (उड़ना) देखता हैं।

उच्चसौधान् विवादं च कलहं च तथात्मनः।
आरोहणं च डयनमिति प्रकृतितो भवेत्।।
स्वप्नमिष्टं च दृष्ट्वा यः पुनः स्वपिति मानवः।
तदुत्पन्नं शुभफलं स नाप्नोतीति निश्चितम्।।

स्वप्न में ऊँचा भवन, कलह, अपने से सम्बन्धित विवाद, (शिखरों पर) चढ़ना, उढ़ना आदि पित्त प्रकृति के कारण दिखलाई देता हैं। अभीष्ट स्वप्न को देखकर जो व्यक्ति पुनः सो जाता हैं तो उसे दृष्ट स्वप्न का फल प्राप्त नहीं होता। ऐसा निश्चित मत हैं।

अतो दृष्ट्वा शुभस्वप्नं सुधिया मानवेन वै।
सूर्यसंस्तवनैर्नेयावशिष्टा रजनी पुनः।।
देवानां च गुरूणां च पूजनानि विधाय सः।
शंभोर्नमस्क्रियां कुर्यात् प्रार्थयेच्च शुभं प्रति।।

अतः बुद्धिमान् मनुष्य को निश्चित रूप से शुभस्वप्न देखने के बाद शेष रात्रि जागरणपूर्वक तथा सूर्य संस्तवनपूर्वक व्यतीत करनी चाहिए। शुभस्वप्न देखने के उस व्यक्ति को देवताओं तथा गुरूजनों की पूजा करनी चाहिए। भगवान् शिव को विधिवत् प्रणाम कर शुभ फल की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करनी चाहिए।

शुभस्वप्नफलम्-

स्वप्नमध्ये पुमान् यश्च सिंहाश्वगजधेनुजैः।
युक्तं रथं समारोहेत् स भवेत् पृथवीपतिः।।
श्वेतेन दक्षिणकरे फणिना दंश्यते च यः।
पंचरात्रे भवेत्तस्य धनं दशसहस्त्रकम्।।

स्वप्न में जो व्यक्ति अपने को सिंह, घोड़ा, हाथी, बैल से युक्त रथ पर चढ़ा हुआ देखता हैं वह राजत्व को प्राप्त करता हैं। जिस व्यक्ति के दक्षिण हाथ में सफेद सर्प काटता हैं वह पाँच रात के अन्दर दश हजार धन प्राप्त करता हैं। (यहाँ दशसहस्त्रकम् उपलक्षण है जिसका अर्थ है विपुल धन)।

मस्तकं यस्य वै स्वप्ने यश्च स्वप्ने च मानवः।

स च राज्यं समाप्नोति च्छिद्यते वा छिनत्ति वा।।
लिङगच्छेदे च पुरूषो योषिद्धनमवाप्नुयात्।

योनिच्छेदे कामिनी च पुरूषाद्धनमाप्नुयात्।।

जो मनुष्य स्वप्न में मस्तक काटे या जिसका मस्तक काटा जाय वे दोनों ही राज्य प्राप्त करते हैं। स्वप्न में यदि पुरूष लिंग को काटता देखे तो वह स्त्रीधन प्राप्त करता हैं। यदि स्त्री योनि भंग देखे तो पुरूष धन (या पुरुष से धन) प्राप्त करती हैं।

छिन्ना भवेद्यस्य जिह्वा स्वप्ने स पुरूषोऽचिरात्।
क्षत्रियः सार्वभौमत्वमितरो मण्डलेशताम्।।
श्वेतदन्तिनमारूह्य नदीतीरे च यः पुमान्।
शाल्योदनं प्रभुङ्क्ते वै स भुङ्क्ते निखिलां महीम्।।

जिस व्यक्ति की स्वप्न में जिह्व कट जाये तो वह पुरूष (यदि) क्षत्रिय हैं शीघ्र ही सार्वभौमराजत्व को प्राप्त करता हैं। क्षत्रिय से इतर वर्ण का व्यक्ति मण्डलेश बनता हैं (छिनजिह्व के दर्शन से)। उजले हाथी पर चढ़कर जो व्यक्ति नदीतट पर दूध भात खाता है वह समग्र पृथ्वी का भोग करता है अर्थात् राजत्व प्राप्त करता हैं-

सूर्याचन्द्रमसोर्बिम्बं समग्रं ग्रसते च यः।
स प्रसह्य प्रभुङ्क्ते वै सकलां सार्णवां महीम्।।
यः स्वदेहोत्थितं मांसं परदेहोत्थितं च वा।
स्वप्ने प्रभुङ्क्ते मनुजः स साम्राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा का संपूर्ण विम्ब ग्रस लेना हैं वह बलपूर्वक समुद्र सहित समग्र पृथ्वी का भोग करता हैं। जो व्यक्ति स्वप्न में अपने शरीर का मांस अथवा दूसरे के शरीर का मांस खाता है वह सामा्रज्य को संप्राप्त करता हैं।

प्रासाद श्रृङगमासाद्यास्वाद्य चात्रं स्वलंकृतम्।
अगाधेऽम्भसि यस्तीर्यात्स भवेत् मृथिवीपतिः।।
छर्दि पुरीषमथवा यः स्वदेत्र विमानयेत्।
राज्यं प्राप्नोति स पुमानत्र नास्त्येव संशयः।।

राजभवन के उच्च श्रृंग (चोटी) पर चढ़ कर जो व्यक्ति उत्तम पक्वान्न को खाता है अथवा जो व्यक्ति स्वप्न में अगाध जल में तैरता दिखलाई देता हैं वह पृथिवीपति यानि राजा होता हैं, स्वप्न में जो व्यक्ति वमन और विष्ठा को स्वाद लेकर खाता है, उसकी अभक्ष्य मानकर अवज्ञा नहीं करता वह व्यक्ति राज्य को प्राप्त करता हैं। इसमें संदेह नहीं हैं।

मूत्रं रेतः शोणितं च स्वप्ने खादति यो नरः।

तैरङ्गाभ्यञ्जनं यश्च कुरुते धनवान् हि सः।।

नलिनीदलशय्यायां निषण्णः पायसाशनम्।

यः करोति नरः सोऽत्र प्राज्यं राज्यं समश्नुते।।

जो व्यक्ति स्वप्न में मूत्र, रेत (वीर्य या रज) एवं रक्त को खाता है तथा शरीर के अंगों में उबटन या तेल लगाता हैं वह धनवान् होता हैं। कमल के पत्रों पर बैठकर जो व्यक्ति खीर को खाता है वह प्रकृष्ट एवं विशाल राज्य को प्राप्त करता हैं।

फलानि च प्रसूनानि यः खादति च पश्यति।

स्वप्ने तस्याङ्गणे लक्ष्मीर्लुठत्येव न संशयः।।

यः स्वप्ने चापसंयोगः बाणस्य कुरुते सुधीः।

सर्वं शत्रुबलं हन्यात्तस्य राज्यमकण्टकम्।।

स्वप्न में जो व्यक्ति फलों और फूलों को खाता है या देखता है, उसके आँगन में लक्ष्मी लोटती हैं। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए। स्वप्न में जो व्यक्ति धनुष की डोरी पर बाण का संधान करता हैं वह अपने शत्रुओं को मारकर निष्कंटक राज्य प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने परस्य योऽसूयां वधं बन्धनमेव च।

यः करोति पुमान् लोके धनवान् जायते तु सः।।

स्वप्ने यस्य जयो वै स्याद्रिपूणां च पराजयः।

स चक्रवर्ती राजा स्यादत्र नास्त्येव संशयः।।

जो दूसरे से द्वेष करता हैं, वध या बन्धन करत हैं वह धनवान् होता हैं। स्वप्न में जीत हो व शत्रु की हार तो निश्चय ही व्यक्ति चक्रवर्ती राजा बनता हैं।

रौप्ये वा का´चने पात्रे पायसं यः स्वदेन्नरः।

तस्य स्यात् पार्थिवपदं वृक्षे शैलेऽथवा स्थिरः।।

शैलग्रामवनैर्युक्तां भुजाभ्यां यो महीं तरेत्।

अचिरेणैव कालेन स स्याद्राजेति निश्चितम्।।

चाँदी या सोने के पात्र में जो व्यक्ति खीर का आस्वाद लेता है वह राज्यत्व को प्राप्त करता हैं। ठीक यही फल (राज्यत्व) वृक्ष या पर्वत पर स्वप्न में चढ़ने का होता हैं। पर्वत-जंगल से युक्त पृथ्वी को अपनी भुजाओं से तैरकर जो व्यक्ति पार करता हैं वह शीघ्र ही राज्यत्व को प्राप्त करता हैं।

यः शैलंगङगमारूह्योत्तरति श्रममन्तरा।

स सर्वकृतकृत्यः सन् पुनरायाति वेश्मनि।।

विषं पीत्वा मृति गच्छेत् स्वप्ने यः पुरुषोत्तमः।
स भोगैर्बहुभिर्युक्तः क्लेशाद् रोगाद् विमुच्यते।।

तृतीयः कल्लोलः

अशुभस्वप्नफलम्-

अतः परं प्रवक्ष्यामि स्वप्नानां फलमन्यथा।
यतो ज्ञास्यन्ति भूलोकेऽशुभं यत्स्वल्पबुद्धयः।।
आयुधानां भूषणानां मणीनां विदू्मस्य च।
कलकानां च कुप्यानां हरणं हानिकारकम्।।

शुभ स्वप्न प्रकरण के पश्चात् स्वप्न के अन्यथा फल को कहूँगा जिसे जानकर अल्पबुद्धि वाले मनुष्य पृथ्वी लोक में अशुभ फल को जान सकेंगे। स्वप्न में हथियारो, आभूषणों, मणियों, मूँगा, स्वर्ण तथा ताम्बे का हरण या चोरी अशुभ फल (हानि) को देता है।

हास्ययुक्तं नृत्यशीलं वित्रस्तं केशवर्जितम्।
स्वप्ने यः पश्यति नरं स जीवेन्मासयुग्मकम्।।
कर्णनासाकरादीनां छेदनं पङ्कमज्जनम्।
पतनं दन्तकेशानां बहुमांसस्य भक्षणम्।।

हँसता हुआ, नृत्य करता हुआ, लम्बे चौड़े तथा बालरहित मनुष्य को जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है वह दो मास तक जीवित रहता है। कान, नाक, भुजाओं का कट जाना, कीचड़ में डूबना, दाँतों और बालों का गिरना, अत्यधिक मांस खाना-

गृहप्रसाद-भेदं च स्वप्नमध्ये प्रपश्यति।
यस्तस्य रोगबाहुल्यं मरणं चेति निश्चयः।।
अश्वानां वारणानां च वसनानां च वेश्मनाम्।
स्वप्ने यो हरणं पश्येत्तस्य राजभयं भवेत्।।

मकान (घर) का राजमहल का फट जाना जो व्यक्ति स्वप्न के बीच देखता है वह अनेक रोगों से घिर जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती हैं। ऐसा निश्चित समझना चाहिए। घोड़ो का, हाथियों का, वस्त्र का तथा भवन स्थान आदि का हरण (लूटपाट) जो व्यक्ति स्वप्न में देखता है उसको राजभय उत्पन्न होता हैं।

स्वस्यवपत्नभिहारे च लक्ष्मीनाशो भवेद् धु्रवम्।
स्वप्यापमाने संक्लेशो गोत्रस्त्रीणां च विग्रहः।।

स्वप्नमध्ये यस्य पुंसो ह्रियते पादरक्षणम्।
पत्नी च म्रियते यस्य च स्याद्देहेन पीड़ितः।।

जो व्यक्ति स्वप्न में अपनी पत्नी का हरण देखता है उसका धन निश्चित नाश को प्राप्त करता है। अपना (स्वयं का) अपमान देखना क्लेश उत्पन्न करता है तथा संगोत्रा महिलाओं से कलह कराता हैं। जो स्वप्न में अपने जूता की चोरी देखता है अथवा पत्नी की मृत्यु (स्वप्न में) देखता है उसका शरीर रोग से पीड़ित हो जाता हैं यानि वह व्यक्ति शरीर कष्ट को प्राप्त करता हैं।

स्वप्ने हस्तद्वयच्छेदः यस्य स्यात्स नरो भुवि।
माता-पितृ-विहीनः स्याद् गवां वृन्दैश्च मुच्यते।।
दन्तपाते द्रव्यनाशः नासाकर्णप्रकर्तने।
फलं तदेव व्याख्यातमत्र नास्त्येव संशयः।।

स्वप्न में जिस व्यक्ति के दोनों हाथ कट जाते हैं वह पृथ्वी पर माता-पिता से हीन हो जाता हैं। साथ ही उसका गायों का समूह भी नष्ट हो जाता हैं। यदि स्वप्न में दाँव गिरे तो धन नाश होता हैं, नाक-कान कटने पर भी धननाश समझना चाहिए। इस स्वप्न के फल में तनिक भी सन्देह नहीं करना चाहिए।

चक्रवातं च यः पश्येदडेग वातं च यः स्पृशेत्।
शिखा चोत्पाटयते यस्य स म्रियेताचिराद्धुरवम्।।
स्वप्नमध्ये यस्य कर्णे गोमीगोधाभुजडगमाः।
प्रविशन्ति पुंसां कर्णे रोगेण स विनश्यति।।

5.5 पुराण आधारित शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

अग्निपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल -

क्रम	स्वप्न	स्वप्नफल
1.	नाभि के अतिरिक्त अंगों से तृण व वृक्ष का उगना	अशुभ सूचक
2.	सिर पर कांस्य या सीसा का टूटना	अशुभ सूचक
3.	मुण्डन देखना	अशुभ सूचक
4.	अपने को नग्न देखना	अशुभ सूचक
5.	मलिन वस्त्र पहनना	अशुभ सूचक

6.	उबटन लगाना	रोग ग्रस्त होना
7.	कीचड़ में फँसना	विपत्ति में फंसना
8.	ऊँचाई से गिरना	विपत्ति में फंसना
9.	अपना विवाह देखना	विपत्ति में फंसना
10.	गीत गाना	अशुभ सूचक
11.	वीणा बजाते हुए मजाक करना	अशुभ सूचक
12.	हंसी-मजाक करना	अशुभ सूचक
13.	झूला झूलना	अशुभ सूचक
14.	कमल पुष्प प्राप्त करना	अशुभफलकारी
15.	लोहा या लौहसामग्री प्राप्त करना	अशुभफलकारी
16.	सर्प मारना	अशुभफलकारी
17.	लाल पुष्प से लदा वृक्ष देखना	अशुभफलकारी
18.	चाण्डाल का देखना	अशुभफलकारी
19.	सूअर, कुत्ता, गदहा, ऊँट पर चढ़ना	मृत्युभय उत्पन्न होना
20.	पंक्षियों का माँस खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
21.	तेल पीना, खिचड़ी खाना	मृत्युभय उत्पन्न होना
22.	माता के पेट में प्रवेश करना	विपत्तिकारी
23.	चिता पर चढ़ना या लेटना	मृत्युभयकारी
24.	इन्द्रध्वज को टूटते देखना	विपत्तिकारी, राज्यनाशक
25.	सूर्य-चन्द्रमा का टूटकर गिरते देखना	विपत्तिकारी
26.	दिव्य अन्तरिक्ष तथा भूमिज उत्पात को देखना	अशुभसूचक
27.	देवता, ब्राहमण और राजा को क्रोधित देखना	अशुभसूचक
28.	स्वप्न में नाचना तथा हँसना	अशुभसूचक
29.	स्वप्न में अपना विवाह देखना	अशुभसूचक
30.	विवाह का गीत सुनना	अशुभसूचक
31.	तंत्रीवाद्य (वीणा) रहित अन्य वाद्यों को बजाना	अशुभसूचक
32.	जलस्त्रोत को नीचे गिरते देखना	अशुभसूचक
33.	गोबर सने जल में स्नान करना	विपत्तिकारक

34.	कीचड़ के जल से स्नान करना	विपत्तिकारक
35.	स्याही से स्नान करना	अशुभसूचक
36.	कुमारी कन्या का आलिंगन करना	विपत्तिकारक
37.	पुरुषों का मैथुन देखना	अशुभसूचक
38.	अपने अंगों को अलग होते देखना	अशुभसूचक
39.	उल्टी-दस्त देखना	अशुभसूचक
40.	दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान करना	मृत्युभयकारी
41.	अपने को रोगग्रस्त देखना	मृत्युभयकारी
42.	फलों का नाश देखना	अशुभसूचक
43.	धातु छेद या नाश देखना	अशुभसूचक
44.	ग्रहों को टूटते देखना	रोगविपत्ति में फँसना
45.	घर में झाड़ू लगाना	रोगविपत्ति में फँसना
46.	पिशाच, राक्षस, बंदर, चाण्डाल के साथ खेलना	रोगविपत्ति में फँसना
47.	शत्रु से पराजित होते देखना	अशुभसूचक
48.	शत्रु द्वारा विपत्ति में फँसना	अशुभसूचक
49.	दुर्व्यसन (नशाखोरी) में फँसना	अशुभसूचक
50.	कषाय वस्त्र पहनना	अशुभसूचक
51.	कषाय वस्त्र से खेलना	अशुभसूचक
52.	तेल पीना, तेल में स्नान करना	विपत्ति में फँसना
53.	लाल फूल की माला पहनना	अशुभसूचक
54.	रक्त चन्दन का लेप करना	अशुभसूचक
55.	स्वप्न में पर्वत, महल, हाथी, घोड़ा बैल पर चढ़ना	शुभफलकारी
56.	आकाश में सफेद फूल एवं सफेद वृक्षों को देखना	शुभफलकारी
57.	नाभी में तृण एवं वृक्ष उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
58.	शरीर में अनेक भुजाओं को उत्पन्न होना देखना	शुभफलकारी
59.	अनेक शिर को देखना	शुभफलकारी
60.	सफेद बाल को देखना	शुभफलकारी
61.	सफेद पुष्पमाला धारण करना	शुभफलकारी

62.	सफेद वस्त्र धारण करना	शुभफलकारी
63.	चन्द्रमा-सूर्य-ताराओं को पकड़ना	शुभफलकारी
64.	चन्द्र-सूर्य-तारा को साफ करना	शुभफलकारी
65.	इन्द्रध्वज का आलिंगन करना	शुभफलकारी
66.	ध्वज फहराना	शुभफलकारी
67.	पृथ्वी से फूटती जलधारा को पकड़ना	शुभधनदायी
68.	जलधारा को रोकना	शुभधनदायी
69.	शत्रुओं को पराजित करना	विजय एवं धनदायी
70.	कलह तथा जुआ में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
71.	युद्ध में विजयी होना	विजय एवं धनदायी
72.	ताजा माँस खाना	शुभ एवं धनदायी
73.	खीर खाना	शुभ एवं धनदायी
74.	रक्त (खेन) को देखना	शुभ एवं धनदायी
75.	रक्तस्नान करना	शुभ एवं धनदायी
76.	सोम-लता का रसपान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
77.	रक्तपान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
78.	मदिरा पान करना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
79.	दूध पीना	शुभत्व एवं समृद्धि पाना
80.	पृथ्वी पर अस्त्र चलाना	विजय एवं समृद्धि पाना
81.	निर्मल आकाश देखना	शुभफलकारी
82.	भैंस-गाय-सिंहनी-हथिनी-घोड़ी के स्तनों को मुख से पीना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
83.	देवता-ब्राहमण-गुरु को प्रसन्न देखना	धनसमृद्धि की प्राप्ति
84.	स्वयं का जलाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
85.	श्रृंगी द्वारा दुग्धाभिषेक देखना	राज्यतुल्य समृद्धि प्राप्ति
86.	चन्द्रमा से बहते जल द्वारा अपना अभिषेक देखना	राजत्व प्राप्ति
87.	अपनी मृत्यु देखना	शुभत्वप्राप्ति, आयुवृद्धि
88.	दूसरे द्वारा अग्नि प्राप्त करना	राज तथा धनप्राप्ति
89.	अग्निदेव द्वारा गृहदाह देखना	शुभत्व प्राप्ति

90.	छत्र तथा चामरों को प्राप्त करना	राजत्व प्राप्ति
91.	वीणावादन द्वारा अपना अभिवादन देखना	राज तथा शुभत्वप्राप्ति
92.	स्वप्न के अन्त में राजा-हाथी-घोड़ा-स्वर्ण-वृष-गो को देखना	पुत्रप्राप्ति की सूचना
93.	बैल तथा हाथी पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
94.	छत तथा पर्वत पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
95.	वृक्ष पर चढ़ना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
96.	स्वप्न में रोना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
97.	गोघृत तथा विष्ठा का शरीर में लेपन करना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक
98.	अगम्या स्त्री के साथ गमन करना	कुटुम्ब एवं धनवर्द्धक

मत्स्यपुराण के अनुसार स्वप्न का शुभाशुभ फल विचार

99.	घोड़ों को मारना	अशुभ-पराजयसूचक
100.	आकाशमण्डल को लाल देखना	अशुभ-पराजयसूचक
101.	भालू पर चढ़ना	मृत्यु-पराजयसूचक
102.	जलाशय में स्नान करके यात्रा करना	मृत्यु-पराजयसूचक
103.	मकानों को ढहते देखना	अशुभ-धनहानिसूचक
104.	मकानों की धुलाई पुताई देखना	अशुभ-धनहानिसूचक
105.	भालू तथा मनुष्य के साथ क्रीड़ा करना	अशुभसूचक
106.	परस्त्री से अपमानित होना	अशुभसूचक
107.	परस्त्री के कारण रोग होना	अशुभ एवं रोग सूचक
108.	परस्त्री से क्रीड़ा करना	अशुभ एवं रोग सूचक
109.	पृथ्वी तथा समुद्र को ग्रास बनाना	शुभ एवं राजप्रदायी
110.	पृथ्वी एवं आकाश को आँतों से लपेटना	राजत्वसूचक
111.	गायों को जल से स्नान करना	राज्यलाभसूचक
112.	पर्वत शिखर तथा चन्द्रमा पर से गिरना	राज्यलाभसूचक
113.	अपना राज्याभिषेक देखना	राज्यलाभसूचक
114.	जल में तैरना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
115.	पहाड़ा लाँधना	सम्पत्तिप्राप्ति सूचक
116.	हाथी-घोड़ा-गाय का घर में प्रसव देखना	संतान, धनप्राप्ति सूचक

117.	शुभ एवं पूज्य स्त्रियों को प्राप्त करना तथा उनका आलिंगन करना	शुभसूचक
118.	जंजीर से शरीर को बाँधा जाना	शुभ एवं राज्यप्राप्तिसूचक
119.	जीवित राजा से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
120.	जीवित मित्र से मिलना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
121.	जलाशयों को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति
122.	देवताओं को देखना	अत्यन्तशुभकारी, रोगमुक्ति

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार -

123.	गाय-हाथी-घोड़ा-राजमहल-पर्वत तथा वृक्षों पर चढ़ना	धनलाभकारी
124.	भोजन करना, रोना, गोद में वीणा लेकर बजाना	कृषिभूमि का लाभ
125.	शस्त्र और अस्त्र से घायल होना	धनप्राप्तिकारक
126.	शरीर में फोड़ा होना	प्रबल धनागमकारी
127.	शरीर में क्रिमी (कीड़ा) पड़ना	प्रबल धनागमकारी
128.	विष्ठा और खून से सन जाना	प्रबल धनागमकारी
129.	अगम्यागमन करना	सुन्दरपत्नी प्राप्त कारक 24,
130.	मूत्र-मल से सन जाना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
131.	वीर्यपान (भक्षण) करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
132.	नरक में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
133.	नगर में प्रवेश करना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
134.	रक्त-समुद्र-अमृत को पीना	शुभवार्ता एवं विपुललाभ
135.	हाथी-राजा-स्वर्ण-बैल-गाय को प्राप्त करना	कुटुम्बकीर्तिविपुलधनलाभ 24,
136.	दीपक-अन्न-कन्या-फल-फूल-छत्र-ध्वज -रथ को देखना	कुटुम्ब-कीर्ति-विपुलधनलाभ
137.	जल से भरा घड़ा देखना	श्रीवृद्धिकारक
138.	ब्राहमण-शुभअग्नि (हवन) फूलपान, मंदिर को देखना	श्रीवृद्धिकारक
139.	सफेद अन्न देखना	श्रीवृद्धिकारक
140.	नट तथा वेश्या को देखना	श्रीवृद्धिकारक
141.	गोदुग्ध-गोघृत देखना	धन एवं पुण्यप्राप्तिकारक
142.	खीर-कमलपत्र-दही-दूध-घी-मधु (पंचामृत) तथा शुभमिष्ठान्न (मालपूआ, मोहनभोग आदि)	राजपद की सुनिश्चितप्राप्ति

143.	पक्षियों का मांस खाना	अत्यधिक एवं शुभवार्ताप्राप्ति
144.	छत्र-पादुका प्राप्त करना	धन-धान्यप्राप्ति
145.	निर्मल एवं तीक्ष्णतलवार को देखना	धन-धान्यप्राप्ति
146.	आसानी से नदी पार करना	प्रधान (उच्च) बनना
147.	फलदार वृक्ष देखना	निश्चित धनप्राप्ति
148.	सर्पद्वारा काटा जाना	अर्थलाभ
149.	सूर्य-चन्द्रमा के मण्डल को देखना	रोग-कारगार मुक्ति
150.	घोड़ी-मुर्गी-क्रौंची को देखना	सुन्दरपत्नी प्राप्तिकारक
151.	जंजीर से बंधा देखना	प्रतिष्ठा एवं पुत्रप्राप्तिकारक
152.	नदीतट पर दही-भात तथा खीर को कमलपत्र पर खाना	राजा बनने की सूचना
153.	फटे कमलपत्र पर खाना	राजा बनने की सूचना
154.	जोंक-बिच्छू-सर्प को देखना	धन-पुत्र-विजय-प्रतिष्ठालाभ
155.	सिंहधारीपशु, दाँत से काटने वाले पशु, सुअर, वानर से पीड़ित होना	राजा होकर विपुल धनलाभ
156.	मछली-माँस-मोती-शंख-चंदन-हीरा को देखना	विपुलधनप्राप्तिकारक
157.	मदिरा-खून-स्वर्ण देखने के बाद विष्ठा देखना	धनप्राप्तिकारक
158.	शिवलिंग-शिवप्रतिमा देखना	विजय एवं धनप्राप्तिकारक
159.	फला-फुला बिल्ववृक्ष देखना	धनप्राप्तिकारक
160.	फला-फुला आम्रवृक्ष देखना	धनप्राप्तिकारक
161.	जलती अग्नि (हवनाग्नि) देखना	श्री-लक्ष्मी प्राप्ति

स्वप्नकमलाकर (द्वितीय कल्लोल) के अनुसार शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

162.	सिंह, अश्व, गो, हाथी युक्त रथ पर चढ़ना	राजा बनने की सूचना
163.	दाहिने हाथ में सफेद सर्प द्वारा काटा जाना	पाँच रात के अन्दर 10 हजार स्वर्णमुद्राप्ति
164.	मस्तक काटना या कटना	राज्य प्राप्ति
165.	लिंग कटना	स्त्री प्राप्ति
166.	योनि कटना	पुरुष प्राप्ति
167.	जिहा कटना	सार्वभौम राज्यप्राप्ति
168.	नदी तट पर सफेद-हाथी पर चढ़कर दूध-भात खाना	समस्त पृथ्वी का अधिपति बनना

169.	सूर्य, चन्द्र के सम्पूर्ण बिम्ब को खा जाना	बलपूर्वक राज्य जीतना
170.	मनुष्य का मांस खाना	साम्राज्य लाभ
171.	महल के कंगूरे पर चढ़ना	राजा बनने का योग
172.	अगाध जल में तैरना	राजा बनने का योग
173.	विष्टा या वमन खाना	राज्य प्राप्ति
174.	मूत्र, रज, वीर्य या रक्त को खाना	धनवान् होने का योग
175.	मूत्र, रज, वीर्य, रक्त को शरीर में लपेटना	धनवान् होने का योग
176.	कमल के पत्ते पर बैठकर खीर खाना विशाल	राज्य की प्राप्ति
177.	फल, फूल खाना	धनी होना
178.	धनुष की डोरी पर बाण चढ़ाना	शत्रुसंहार एवं निष्कंटक राज्य
179.	दूसरे से द्वेष करना, मारना या बंदी बना लेना	धनवान् होने का योग
180.	स्वर्ण या चाँदी के पात्र में खीर खाना	राज्यत्व लाभ
181.	वृक्ष या पर्वत रोहण	राज्य लाभ
182.	पर्वत, ग्राम एवं वन को तैरना	शीघ्र राज्य लाभ
183.	पर्वतशिखर पर चढ़कर आसानी से उतरना	सकुशल घर लौटना
184.	विष पीकर मरना	क्लेश रोग से मुक्ति
185.	रोली लगाकर विवाह देखना	धनधान्य प्राप्ति
186.	खून में स्नान या खून पीना	धनी होना
187.	सिर काटना या कटना	1 हजार स्वर्णमुद्रा लाभ
188.	स्वयं या दूसरे की जिह्व पर लिखना	विद्या प्राप्ति एवं धार्मिक राजा बनना
189.	पुरुष अपने को स्त्री रूप में देखे	उत्तम प्रीति की प्राप्ति
190.	स्त्री अपने को पुरूष रूप में देखे	उत्तम प्रीति की प्राप्ति
191.	पागल हाथी पर बिना डरे चढ़ना	अतुल धन प्राप्ति
192.	घोड़े पर चढ़कर दूध पीना	राजा बनने की सूचना
193.	पहले राजा, पुनः चोर, पुनः राजा	राजा या राज्यतुल्य बनना
194.	अंगों में मूत्र-विष्ठा से सन जाना	राजत्व प्राप्ति की सूचना
195.	शमशान में अपना घर देखना	राजत्व प्राप्ति की सूचना
196.	सफेद बैल की गाड़ी पर चढ़कर पूर्व या उत्तर जाना	राजत्व प्राप्ति की सूचना

197. शरीर को बालरहित देखना — लक्ष्मी प्राप्ति की सूचना
198. पुराना घर ढहाकर नया बनाना — रोगनाश
199. नीले रंग की गाय, धनुष या जूता प्राप्त करना — विदेश से घर लौटना
200. गुदामार्ग से जलपान करना — विपुल धन-धान्य प्राप्त करना
201. पैर से मस्तक तक बेड़ी से बंधना — पुत्ररत्न की प्राप्ति
202. गाँव या नगर को घेरना — गाँव या मण्डल का मुखिया बनना
203. खाई में गिरकर निकलना — सद्बुद्धि की प्राप्ति
204. गोद में फल फूल देखना — प्रतिदिवसीय धनप्राप्ति
205. मक्खी, मच्छर, खटमल से घिरना — सुंदर, उत्तम पत्नी की प्राप्ति
206. नदी, कमल, उद्यान या पर्वत देखना — शोक मुक्त होना
207. पीला फल, लाल फूल मिलना — स्वर्णलाभ
208. पद्मरागमणि (पुखराज) प्राप्त करना — लक्ष्मी, सरस्वती को प्राप्त करना
209. श्वेत वस्त्र युक्त नारी देखना — लक्ष्मी आगमन
210. कुंडल, मोती-माला, मुकुट देखना — राजा बनने का योग
211. सफेदवस्त्र धारिणी द्वारा आलिंगन — अपूर्व लक्ष्मी प्राप्ति
212. मृत्यु एवं रुदन देखना — सुखों से घिरना
213. आंगन में कोई अंजली में फूल इकट्ठा करे — लक्ष्मी तथा राज्य की प्राप्ति

शुभाशुभ स्वप्न फल विचार

क्रम संख्या	शुभ स्वप्न	क्रम संख्या	अशुभ स्वप्न
1.	ब्राहमण बालक को देखना	1.	अत्यन्त वृद्धा और काले शरीर वाली या नंगी स्त्री का नाचना
2.	आभूषणों से विभूषित, पति पुत्रों से युक्त या सफेद वस्त्रवाली सुन्दरी स्त्री देखना	2.	खुले केशवाली शूद्रा या विधवा देखना
3.	ब्राहमण, राजा, देवता, गुरु	3.	सिर और छाती पर ताड़ के या कोई भी काले रंग के फलों का गिरना
4.	सफेद कमल, सरोवर, राजहंस	4.	मैला कुचैला, विकत आकार तथा रूखे केशवाले ग्लेच्छ या गलित कुष्ट से युक्त नंगा शूद्र देखना

5.	सूर्य, चन्द्र, तारे, इन्द्र-धनुष	5.	सधवा, पुत्रवती, सती स्त्री या शिखा खोले ब्राहमण का रोष, कुपित गुरु, संन्यासी या वैष्णव को देखना
6.	फल फूलयुक्त आम, नीम, नारियल, विशाल मदार या केला का वृक्ष	6.	घड़े का फोड़ा जाना
7.	सफेद साँप का काटना	7.	अंगार, भस्म या रक्त की वर्षा
8.	महल, पर्वत, वृक्ष, सिंह, हाथी, घोड़ा या नाव देखना या उन पर चढ़ना	8.	वानर, कौवा, कुत्ता, भालू, सुअर, गदहा, बैल, भैंस गीध, कंक, घड़ियाल, सियार देखना
9.	वीणा बनाना	9.	नंगी स्त्री का नृत्य
10.	प्रियान्न दही, दूध, खीरादि खाना	10.	अपने शरीर में किसी का तेल लगाना
11.	स्वयं के अंगों में कोड़े या विष्टा लगना	11.	नृत्य गीत युक्त विवाहोत्सव देखना
12.	रोते रहना	12.	सूर्य चन्द्र निस्तेज या ग्रहण लगा हुआ देखना
13.	हाथों में सफेद धान्य, सफेद फूल दिखाई देना	13.	उल्कापात, धूमकेतु, भूकम्प, राष्ट्र-विप्लव, आँधी, तूफान आदि उत्पात देखना
14.	अपने को चंदन-चर्चित देखना	14.	वृक्ष की डालियाँ, पर्वत-श्रृंग, सूर्य-चन्द्र-मण्डल या तारे टूटते दिखाई देना
15.	अपने को समुद्र में देखना	15.	हाथ से दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना
16.	रक्त से स्नान, शरीर में रक्त लगा देखना	16.	गले का हार या माला आदि का टूटना
17.	अपना अंग छिन्न-भिन्न या क्षत-विक्षत देखना	17.	काले वस्त्रयुक्त किसी व्यक्ति को अपना आलिंगन-चुम्बर करते देखना
18.	अपने शरीर में मेद या पीव लिपटा देखना	18.	काली प्रतिमा देखना
19.	सोना, चाँदी, सफेद मणि रत्न, मोती, मानिक, भरे हुए कलश का जल देखना	19.	भस्म-पुंच, हड्डियों का ढेर, ताड़ का फल, केश, नाखून, कौड़ियाँ, कवाईत, बुझे अंगार (कोयला) देखना
20.	बछड़ा सहित गऊ, साँड, मोर, तोता, सारस, हंस, चील खंजरीट देखना	20.	मरघट, चिता पर रक्खा मुरदा, कुम्हार का चाक, तेलो का कोल्हू, अधजले या सूखे काठ, कुश, तृण, चलता हुआ धड़, मुरदे का चिल्लाता हुआ मस्तक, आग से जला हुआ स्थान देखना
21.	देव-पूजा, वेद-ध्वनि का शुष्क श्रवण, प्रतिमा, श्रीकृष्ण की प्रतिमा, शिव-लिंग देखना	21.	भस्मयुक्त सूखा तालाब, जली मछली, लोहा, दावा-नल से जलकर बुझा हुआ वन देखना

5.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि संस्कृत वाङ्मय में स्वप्न विद्या को परा विद्या का अंग माना गया हैं। अतः स्वप्न के माध्यम से सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास भारतीय ऋषि, मुनि और आचार्यों ने किया हैं। फलतः भारतीय मनीषियों की दृष्टि में स्वप्न केवल जाग्रत दृश्यों का मानसलोक पर प्रभाव का परिणाम मात्र नहीं हैं न तो कामज या इच्छित विकारों का प्रतिफलन मात्र है।

सामान्य रूप से वेदान्त की विधा में कहा जाए तो स्वप्न लोक की तरह या दृश्य लोक क्षणभंगुर हैं। इससे स्वप्न का मिथ्यात्व सिद्ध होता हैं। रज्जु में सर्प का भ्रम कहा जाए तो स्वप्न में भिखारी का राजा होना भी भ्रम मात्र ही हैं; परन्तु स्वप्न को आदेश मानकर राजा द्वारा अपने राज्य का दान, स्वप्न में अर्जुन द्वारा पाशुपतास्त्र की दीक्षा प्राप्ति आदि उदाहरण भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिलते हैं। त्रिजटा ने जो कुछ स्वप्न में देखा उसको अपूर्व प्रमाण मानकर श्री हनुमान् जी ने लंका दहन किया। ये सब ऐसे उदाहरण हैं जो स्वप्न में विद्या को दैविक आदेश या परा अनुसंधान से जोड़ते हैं। स्वप्न चिन्तन जब शास्त्र का रूप ग्रहण करता है तो निश्चित ही उसकी चिन्तना पद्धति मूर्त से अमूर्त काल में प्रवेश कर जाती हैं। **स्वप्नकमलाकर** ग्रन्थ में स्वप्न को चार प्रकार का माना गया हैं- (1) दैविक स्वप्न (2) शुभ स्वप्न (3) अशुभ स्वप्न और (4) मिश्र स्वप्न।

दैविक स्वप्न को उच्च कोटि को साध्य मानकर इसकी सिद्धि के लिए अनेक मंत्र और विधान भी दिये गये हैं। स्वप्न उत्पत्ति के कारणों पर विचार करते हुए आचार्यों ने स्वप्न के नौ कारण भी दिये हैं- (1) श्रुत (2) अनुभूत (3) दृष्ट (4) चिन्ता (5) प्रकृति (स्वभाव) (6) विकृति (बीमारी आदि से उत्पन्न) (7) देव (8) पुण्य और (9) पाप।

प्रकृति और विकृति कारणों में काम (सेक्स) और इच्छा आदि का अन्तर्भाव होगा। दैवी आदेश वाले स्वप्न उसी व्यक्ति को मिलते हैं जो वात, पित्त, कफ त्रिदोष से रहित होते हैं। जिनका हृदय राग-द्वेष से रहित और निर्मल होता हैं।

बोध प्रश्न –

1. भारतीय संस्कृत वांग्मय में स्वप्न को किसका अंग माना गया है।
   क. अविद्या का ख. परा विद्या का ग. पुराण का घ. रामायण का
2. स्वप्न उत्पत्ति के कुल कितने कारण कहे गये हैं।
   क. १० ख.११ ग. ९ घ.१२
3. स्वप्नकमलाकर के अनुसार स्वप्न को कितने प्रकार का कहा गया है-
   क. ३ ख.४ ग.५ घ.६

4. सफेद कमल के पुष्प को स्वप्न में देखना कैसा माना गया है।
   क. शुभ ख. अशुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं
5. स्वप्न में मस्तक कटना का क्या फल है।
   क. राज्य हरण ख. राज्य प्राप्ति ग. शत्रु दमन घ. शत्रु वृद्धि
6. श्वेत सर्प द्वारा काटे जाने का स्वप्न फल क्या है।
   क. राज्य प्राप्ति ख. पुत्र प्राप्ति ग. स्त्री प्राप्ति घ. कोई नहीं
7. अग्नि पुराण के अनुसार उबटन लगाने का स्वप्न फल क्या है।
   क. रोग ग्रस्त होना ख. विवाह होना ग. मित्र प्राप्ति घ. धन प्राप्ति
8. ब्राह्मण बालक को स्वप्न में देखने का क्या फल है –
   क. अशुभ ख. शुभ ग. मिश्रित घ. कोई नहीं

5.7 पारिभाषिक शब्दावली

परा विद्या – भारतीय संस्कृत वांगमय में परा विद्या के चतुर्दश प्रकार है।

स्वप्न – परा विद्या का एक अंग है।

सृष्टि – समस्त चराचर प्राणी, अन्तरिक्ष आदि का समूह।

मनीषा – ऋषि चिन्तन

रज्जु – रस्सी

अपूर्व – पूर्व में होने वाली घटना का आभास

त्रिदोष – कफ, पित्त एवं वात्त।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. ग
3. ख
4. क
5. ख
6. ख
7. क
8. ख

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ब्रह्मवैवर्त पुराण – मूल लेखक- वेदव्यास

अग्नि पुराण – वेदव्यास

मत्स्य पुराण – वेदव्यास

स्वप्न कमलाकर – मूल लेखक - आचार्य श्रीधर।

स्वप्न विद्या - लेखक- आचार्य कामेश्वर उपाध्याय।

ज्योतिष रहस्य – जगजीवन दास गुप्त।

5.10 सहायक पाठ्यसामग्री

ऋग्वेद -

अथर्ववेद-

सामवेद -

महाभारत -

रामायण-

रामचरितमानस -

ब्रह्मवैवर्त पुराण -

अग्नि पुराण -

मत्स्य पुराण -

स्वप्न कमलाकर -

स्वप्न विद्या -

5.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1. स्वप्न से आप क्या समझते है।
2. स्वप्न कितने प्रकार के होते है। स्पष्ट रूप से लिखिये।
3. अग्नि पुराणोक्त स्वप्न का शुभाशुभ फल लिखिये।
4. स्वप्नकमलाकर में कथित शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण में उद्धृत शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।
6. मत्स्य पुराण में उद्धृत शुभाशुभ स्वप्न फल का वर्णन कीजिये।